चिंतन

सहयोग व बंधुत्व से ही विश्व में शांति संभव

जब दुनिया विकट हालात से गुजर रही है, उसमें भारत का संदेश देना कि विश्व में एक-दूसरे का हाथ पकड़कर चलने की आवश्यकता है, एकदम मौजूं है। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने बृहस्पतिवार को सहयोगी देशों से अपनी भागीदारी और सहयोग को नई ऊंचाई पर ले जाने का आह्वान किया। 'आज के समय में जब दुनिया में एक-दूसरे से आगे निकलने की होड़ लगी हुई है...कई स्थानों पर तो अलग-अलग देशों के बीच लगातार युद्ध चल रहे हैं...इन विकट परिस्थितियों में भारत का लक्ष्य यही है कि हम युद्ध का रास्ता छोड़कर शांति के मार्ग पर चलें। विश्व कल्याण के लिए मानवता, शांति, बंधुत्व व विकास जैसे मूल्यों को आगे बढ़ाना वक्त की जरूरत है। भारत का विश्व को शांति व अहिंसा का सबसे बड़ा संदेश है। भारत ने इसे करके दिखाया है, और आज भी अपने इन मूल्यों पर कायम है। दुनिया, गरीबी, बीमारी, सामाजिक व आर्थिक असमानता, हिंसा, संघर्ष व युद्ध से जूझ रही है। करीब तीन अरब लोग बेहाल व बदहाल जिंदगी जी रहे हैं, ऐसे में अगर विश्व में कुछेक देश अपने वर्चस्व के लिए डर, उन्माद, हिंसा व युद्ध को बढ़ावा दे रहे हैं, तो निश्चित ही विश्व का कल्याण नहीं हो सकता है। रूस और यूक्रेन युद्ध तीसरे वर्ष में प्रवेश कर गया है, इसके अंत की उम्मीद नजदीक में नहीं दिख रही है। इजराइल अपने अस्तित्व व प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए आतंकी गुट हमास से जंग लड़ रहा है। चीन अपनी विस्तारवाद व बादशाहत की सनक में अधिकांश पड़ोसियों के साथ सीमा विवाद को जन्म दे रहा है, ताइवान को डरा रहा है। अमेरिका की शांति नीति अफगानिस्तान में फेल हुई, आज अफगानिस्तान पर आतंकी गुट तालिबान का शासन है, यह सब अमेरिका की परस्ती में हुआ। सूडान, पूर्वी तिमोर गृहयुद्ध में तबाह हो रहे हैं। अफ्रीका के अनेक देश भीषण गरीबी व भुखमरी से जूझ रहे हैं। अमेरिका व यूरोप के आर्थिक हालात भी पहले की तरह उम्मीद नहीं दिखा रहे हैं। जलवायु परिवर्तन के दौर से गुजर रही दुनिया पर्यावरण संकट से जूझ रही है। विश्व में कहीं अत्यधिक ठंड तो कहीं अत्यधिक गर्मी पड़ रही है। इससे भी मानव जीवन संकट का सामना कर रहा है। मानवता का लक्ष्य विनाश तो कतई नहीं है। विश्व ने सभ्यता के विकास के साथ अंधाधुंध युद्ध झेला है, वर्चस्व के लिए अनगिनत हिंसा देखी है, अनेकानेक शोषण को देखा है। आज विश्व की स्थिति ऐसी है कि मानव जीवन कहीं से भी सुरक्षित नहीं लग रहा है, विश्व के सशक्त व मजबूत देश भी दुनिया में नई उम्मीद नहीं जगा रहे हैं। अमेरिका का प्रभुत्व कमजोर हो रहा है। चीन भरोसे के संकट से गुजर रहा है। रूस ने युद्ध का मार्ग अपना कर शांति के लिए विश्वास का अवसर ही नहीं छोड़ा है। ऐसे में वैश्विक स्तर पर शांति, खुशहाली, सहयोग और विकास की पैरवी केवल भारत कर रहा है। केंद्र में पीएम नरेन्द्र मोदी की सरकार आने के बाद विश्व में भारत की छवि भी बदली है। अब भारत सॉफ्ट स्टेट नहीं रहा है, अब भारत सहयोग लेने वाला नहीं देने वाला बन गया है। कई क्षेत्रों में देश आत्मनिर्भर हुआ है, ताकतवर हुआ है, निर्यातक बना है। आज भारत शांति की वकालत कर रहा तो इसी में वैश्विक कल्याण भी है। भारत ने हमेशा वसुधैव कुटुंबकम को चरितार्थ किया है। राजनाथ की टिप्पणी रूस और यूक्रेन के बीच शांति वार्ता को आगे बढ़ाने में भारत की संभावित भूमिका के आह्वान की पृष्ठभूमि में आई है। पीएम मोदी पहले ही कह चुके हैं कि यह युद्ध का समय नहीं है। रूस व यूक्रेन जंग का अंत वैश्विक हित में है, लेकिन अमेरिका व यूरोप को अपनी रणनीति बदलनी होगी।

राहुल के 'कृत्य' से बिगड़ रही देश की छवि

बयानबाजी
अरविंद जयतिलक

> बेशक राहुल गांधी को अधिकार है कि वह सरकार की नीतियों की आलोचना करे, लेकिन यह कार्य अपने देश में होना चाहिए। विदेशी धरती पर खड़े होकर देश की छवि पर प्रहार करना उचित नहीं है। एक लोकतांत्रिक देश में देश की साख और मर्यादा की रक्षा की जिम्मेदारी जितना सत्ताधारी पार्टी की होती है उतनी ही विपक्ष की भी। लेकिन राहुल गांधी विदेशी धरती से भारत की साख खराब करने से चूक नहीं रहे हैं। चंद रोज पहले उन्होंने अमेरिका के डलास में टेक्सास विश्वविद्यालय में छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि भारत में कौशल वाले लाखों लोगों को दरकिनार किया जा रहा है। उन्होंने भारत की तुलना चीन से करते हुए भारत को नीचा दिखाने की कोशिश की।

लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी कमाल के नेता हैं। वे तनिक भी विचलित व चिंतित नहीं होते हैं कि तर्कहीन और मनगढ़ंत भाषणबाजी के फेर में कहीं खुद ही लपेटे में आ गए तो क्या होगा। वे सरकार की आलोचना के फेर में देश की साख और मर्यादा का ख्याल किए बिना ही लगातार जो मुंह में आ रहा है, उगल रहे हैं। इससे न केवल देश की छवि धूमिल हो रही है बल्कि उन्हें खुद आलोचना का पात्र बनना पड़ रहा है। बेशक राहुल गांधी को अधिकार है कि वह सरकार की नीतियों की आलोचना करें। लेकिन यह कार्य अपने देश में होना चाहिए। विदेशी धरती पर खड़े होकर देश की छवि पर प्रहार करना उचित नहीं है। एक लोकतांत्रिक देश में देश की साख और मर्यादा की रक्षा की जिम्मेदारी जितना सत्ताधारी पार्टी की होती है उतनी ही विपक्ष की भी। लेकिन राहुल गांधी विदेशी धरती से भारत की साख खराब करने से चूक नहीं रहे हैं। चंद रोज पहले एक बार फिर उन्होंने कुछ ऐसा ही कृत्य किया है। उन्होंने अमेरिका के डलास में टेक्सास विश्वविद्यालय में छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि भारत में कौशल वाले लाखों लोगों को दरकिनार किया जा रहा है। उन्होंने भारत की तुलना चीन से करते हुए भारत को नीचा दिखाने की कोशिश की। साथ ही आरएसएस पर भी हमला बोलने से नहीं चूके।

हद तो तब हो गई, जब उन्होंने कहा कि लड़ाई इस बात की है कि क्या एक सिख को भारत में पगड़ी अथवा कड़ा पहनने का अधिकार है या नहीं। राहुल गांधी से पूछा जाना चाहिए कि क्या सिख समुदाय भारत में पगड़ी और कड़ा धारण नहीं करता है? उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि भारत में इस बार आम चुनाव लड़ने के लिए सबको समान अवसर उपलब्ध नहीं थे। अब सत्ताधारी भारतीय जनता पार्टी ने राहुल गांधी के अनाप-शनाप संबोधन को लेकर सवाल दागना शुरू कर दिया है। कांग्रेस को जवाब देते नहीं बन रहा है। गौर करें कि इससे पहले भी राहुल गांधी ने विदेशी धरती से भारत की साख से खेलने की कोशिश की है। गत वर्ष उन्होंने जर्मनी के हैम्बर्ग में बुसेरियस समर स्कूल में छात्रों और प्रवासियों को संबोधित करते हुए देश में उन्माद की हिंसा यानी मॉब लिंचिंग की बढ़ती घटनाओं को बेरोजगारी से जोड़ दिया था। दूसरी ओर लंदन में आरएसएस की तुलना आतंकी संगठन ब्रदरहुड से की थी। उनके इस दुर्लभ प्रवचन से न केवल भारज-जर्मनी बल्कि दुनिया भर के समाजशास्त्री और अर्थशास्त्री हतप्रभ रह गए थे।

इस बार भी विदेशी धरती पर राहुल गांधी के अनावश्यक संबोधन से देश सन्न है। लोग समझ नहीं पा रहे हैं कि आखिर राहुल गांधी को क्या हो गया है जो कि मोदी विरोध के नाम पर कभी आरएसएस को बदनाम कर रहे हैं तो कभी देश की आबरु से खिलवाड़ कर रहे हैं। अगर राहुल गांधी के इस संबोधन से भारतीय जनता पार्टी उद्वेलित और आक्रामक होती है तो यह तनिक भी अस्वाभाविक नहीं है। ऐसा इसलिए कि जहां एक ओर देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी दुनिया भर में भारत की प्रतिष्ठा को चार चांद लगा रहे हैं, वहीं राहुल गांधी गलत कुतर्कों के जरिए दुनिया भर में भारत की छवि खराब करने पर उतारु हैं। गत वर्ष पहले ही उन्होंने कैलिफोर्निया के

बर्कले विश्वविद्यालय में भारत में लोकतंत्र की सच्ची पैरोकारी के बजाए वंशवाद की वकालत की। बहुत पहले उन्होंने अमेरिकी राजदूत से कहा कि देश को इस्लामिक आतंकवाद से ज्यादा खतरा हिंदू कट्टरवाद से है। उस समय भी राहुल गांधी की खूब फजीहत हुई थी और कांग्रेस को बचाव में उतरना पड़ा था।

चुनाव के दौरान चुरु की एक रैली में उन्होंने कहा था कि सांप्रदायिक तत्वों ने उनकी दादी को मारा, उनके पिता को मारा और अब शायद उन्हें भी मार सकते हैं। जबकि वे अच्छी तरह सुपरिचित हैं कि इंदिरा गांधी और राजीव गांधी की हत्या सांप्रदायिक तत्वों ने नहीं बल्कि आतंकियों ने की थी। याद होगा 2012 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में उन्होंने समाजवादी पार्टी का घोषणापत्र ही फाड़ दिया। तब भी उनकी खूब किरकिरी हुई थी। यही नहीं, उन्होंने 2014 में एक चुनावी जनसभा में गांधी जी की हत्या के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को ही जिम्मेदार ठहरा दिया था। लेकिन जब इससे नाराज संघ के एक कार्यकर्ता ने उन्हें अदालत में घसीट लिया तो उनकी असहजता बढ़ गई। तब उच्चतम न्यायालय ने राहुल गांधी को आड़े हाथों लेते हुए कहा था कि वह या तो माफी मांगें या मानहानि के मुकदमे का सामना करने के लिए तैयार रहें। राहुल गांधी के गैर जिम्मेदाराना रवैए से साफ है कि उनमें सूझबूझ की कमी है और वे बार-बार गलत बयानबाजी के जरिए अपनी राजनीतिक अपरिपक्वता पर मुहर लगा रहे हैं। राहुल की इसी नासमझी का नतीजा है कि देश उन्हें एक गंभीर राजनेता मानने को तैयार नहीं है। यह सही है कि राहुल गांधी को लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष का पद मिलने से कांग्रेस और उसके नेताओं तथा कार्यकर्ताओं में उत्साह का संचार हुआ है। लेकिन जिस तरह उनकी बयानबाजी को लेकर कांग्रेस पार्टी को बचाव में उतरना पड़ रहा है, उससे साफ है कि राहुल गांधी में गंभीरता की कमी है।

मजेदार बात कि वे अपनी कमियां ढूंढने के बजाए मोदी सरकार पर आरोपों की बौछार कर रहे हैं। सच तो यह है कि कांग्रेस को प्रधानमंत्री मोदी की लोकप्रियता पच नहीं रही है और वह अवसादग्रस्त हो गई है। उसी अवसाद का नतीजा है कि कांग्रेस कभी अपने नेता राहुल गांधी को मंदिर का दर्शन कराती है तो कभी सनातन पर प्रहार कराती है। उनके इशारे पर उनके सिपहसालार देश को हिंदू पाकिस्तान तो कभी हिंदू तालिबान बताते सुने जाते हैं। अब असल सवाल यह है कि क्या इस तरह के आचरण से राहुल गांधी देश का दिल जीतने में सफल रहेंगे? क्या वे विदेशी धरती पर खड़े होकर देश के खिलाफ आग उगलकर सत्ता सिंहासन तक पहुंच जाएंगे? यह संभव ही नहीं है। देश उनके और उनकी पार्टी के इस रवैए से आहत है। राहुल गांधी को समझना होगा कि अगर वे भोथरे दलीलों के जरिए देश को गुमराह कर प्रधानमंत्री की छवि खराब करने की कोशिश में हैं तो इसका सर्वाधिक नुकसान कांग्रेस पार्टी को ही उठाना होगा। उन्हें समझना होगा कि वे कांग्रेस के अग्रणी नेता ही नहीं बल्कि अब लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष भी हैं। अगर वह गली छाप नेताओं की तरह राजनीतिक आचरण की नुमाइश करेंगे तो फिर देश की कमान संभालने का दावा कैसे कर सकते हैं? वैसे भी जब से वे नेता प्रतिपक्ष बने हैं देश को लगातार निराश कर रहे हैं।

ऐसा नहीं है कि देश ने राहुल गांधी को बेहतर कार्य करने का मौका नहीं दिया। वे चाहते तो नोटबंदी, जीएसटी और धारा 370 के सवाल पर सकारात्मक भूमिका का निर्वहन कर सकते थे। लेकिन उन्होंने यह मौका गंवा दिया। अब कांग्रेस पार्टी और राहुल गांधी का एकसूत्रीय कार्यक्रम सरकार का विरोध करना और दुनिया भर में भारत की साख से खिलवाड़ करना रह गया है। यह देश के साथ छल है और देश इसे सहन नहीं करेगा।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)
लेख पर अपनी प्रतिक्रिया edit@haribhoomi.com पर दे सकते हैं।

मुद्दा

विवेक शुक्ला

'बाहरी' उम्मीदवारों को प्रेरित करते रहेंगे अल्बर्टो फुजीमोरी

भारत के हरेक चुनाव में कुछ उम्मीदवारों पर 'बाहरी' होने का आरोप लगता है। इन बाहरी उम्मीदवारों को हर दौर में पेरू के पूर्व राष्ट्रपति अल्बर्टो फुजीमोरी प्रेरित करते रहेंगे। फुजीमोरी का बुधवार को पेरू की राजधानी लीमा में निधन हो गया। उनसे बड़ा शायद ही कभी कोई बाहरी उम्मीदवार दुनिया ने चुनाव लड़ते देखा। अब असली बात पर आते हैं। फुजीमोरी मूल रूप से जापानी माता-पिता की संतान थे। वे जब करीब पांच साल के थे, तब उनके माता-पिता दक्षिण अमेरिकी देश पेरू में नौकरी के लिए शिफ्ट कर गए और फिर वहीं बस गए। जाहिर है कि फुजीमोरी का बाकी का जीवन पेरू में ही गुजरा। वे बड़े हुए तो पेरू की सियासत में कूद पड़े। यह नहीं, फुजीमोरी 1990 से 2000 तक पेरू के राष्ट्रपति रहे। उस देश में जहां जापानी मूल के एक हजार लोग भी नहीं थे। पर मजाल है कि कभी फुजीमोरी को किसी ने बाहरी बताया हो। राष्ट्रपति रहते हुए उन्हें भ्रष्टाचार और सत्ता के दुरुपयोग के मामले में दोषी ठहराया गया था। उन्हें जेल भी हुई। पर उन पर बाहरी होने की तोहमत किसी ने नहीं लगाई।

अब भारत की बात कर लें। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 2014 में जब वाराणसी से लोकसभा चुनाव लड़ने का फैसला किया तो उन्हें बाहरी बताया गया। उसी चुनाव में अरुण जेटली ने अमृतसर से चुनाव लड़ा तो उन्हें भी बाहरी कहा गया। ये तो दो उदाहरण हैं। न जाने हमारे यहां नगर निगम से लेकर विधान सभा और लोकसभा चुनावों में कितने उम्मीदवारों को बाहरी कहा जाता रहा है। आप अपने ही देश में बाहरी हो जाते हैं। इन्हें सुनना पड़ता है कि चूंकि ये स्थानीय नहीं हैं, इसलिए जनता के मसलों को हल नहीं कर सकेंगे। अजीब स्थिति है कि हम तो अपने देशवासियों को बाहरी कहने का मौका नहीं छोड़ रहे और भारतवंशी करीब दो दर्जन देशों में सांसद से लेकर प्रधानमंत्री से राष्ट्रपति बन गए। साल 1961 में प्रोगेसिव लेबर पार्टी के उम्मीदवार छेदी जगन कैरिबियाई टापू देश ग्याना के राष्ट्रपति निर्वाचित हुए थे। एक तरह से छेदी जगन ने श्रीगणेश किया था भारतवंशियों के सात समंदर पार जाकर शिखर को छूने का। उनके बाद भारत के बाहर लघु भारत कहलाए जाने वाले मारीशस में शिव सागर रामगुलाम, अनिरुद्ध जुगनाथ से लेकर फीजी में महेन्द्र चौधरी और त्रिनिदाद और टोबेगो में बासुदेव पांडे वगैरह अनेक राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री बनते रहे। इन देशों में भारतवंशियों का राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री बनना इस लिहाज से समझ आता है क्योंकि इनमें भारतवंशियों की आबादी 50 फीसद से भी ज्यादा है। पर भारतवंशी एस. रंगानाथन सिंगापुर जैसे देश के भी राष्ट्रपति बने। सिंगापुर में चीनी लगभग 76 फीसद हैं। फिर मलेय भी मजे में हैं। जिधर भारतीय 10-12 फीसद हैं, उधर भी ये राष्ट्रपति बन रहे हैं।

क्या इसे मामूली उपलब्धि माना जाए? कतई नहीं। भारत में कब कोई विदेशी मूल का शख्स राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री बनता है, इसकी फिलहाल कोई संभावना दूर-दूर तक नजर नहीं आती। कुछ साल पहले सोनिया गांधी के प्रधानमंत्री बनने की संभावना पैदा हुई थी। पर, तब जमकर हंगामा बरपा था। तो साफ है कि हम हिन्दुस्तानी कम से कम इस लिहाज से बहुत छोटे दिल के हैं। हम जाति, समाज, भाषा, मजहब के बंधनों को तोड़कर अपने लिए बेहतर उम्मीदवारों को चुनने के लिए तैयार नहीं हैं। फुजीमोरी के पुत्र केन्जी फुजीमोरी भी पेरू के सांसद रहे। फुजीमोरी वर्ष 2000 में राष्ट्रपति पद से इस्तीफा देने के बाद फुजीमोरी अपने माता-पिता के देश जापान चले गए थे, लेकिन अपने देश में खुद पर लगाए गए आरोपों का सामना करने के लिए उन्हें वर्ष 2007 में पेरू प्रत्यर्पित कर दिया गया था। आजकल अमेरिका के राष्ट्रपति चुनाव की कैंपेन पर सारे संसार की निगाहें हैं। भारत की तो खासतौर पर हैं, क्योंकि कमला हैरिस के राष्ट्रपति चुनाव जीतने की संभावनाएं जाहिर की जा रही हैं। कमला हैरिस की मां डॉ. श्यामला गोपालन तमिलनाडु से थीं। कमला हैरिस का जन्म अमेरिका में ही हुआ। वे वर्तमान में देश की उपराष्ट्रपति हैं। बताइये, कभी किसी ने उन्हें बाहरी कहा। भारतवंशी सारी दुनिया में राजनीति करते हैं। इन्हें कहीं कोई बाहरी नहीं कहता। अब आप खुद तय कर लें कि हमारे यहां बाहरी उम्मीदवार को लेकर बहस का होना कितना शर्मनाक है। ये छोटी सोच बंद होनी चाहिए। अगर किसी ने पेरू में अल्बर्टो फुजीमोरी को बाहरी नहीं कहा तो हम अपने ही देश के किसी चुनाव मैदान में उतरने वाले शख्स को कैसे बाहरी कह सकते हैं।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

चित्त की शुद्धता ही धर्म का सार

संकलित
दर्शन

उपाध्याय गुप्त सार मुनि के अनुसार धर्म के सार को समझे बिना धर्म का ठीक से पालन नहीं किया जा सकता है। सार को समझेंगे तभी उसे ग्रहण कर पाएंगे अन्यथा अंदर के सार तत्व को छोड़कर छिलकों में ही उलझे रह जाएंगे। सार में सदा समानता रहती है। अनेक रूप-रूपाय भिन्न-भिन्न बाह्याडंबर, आकार-प्रकार, बनावट-सजावट, खान-पान जो भिन्न-भिन्न संप्रदायों के प्रतीक मात्र थे, वे आज भिन्न-भिन्न धर्म बनकर पारस्परिक विरोध का कारण बन गए हैं। सारा मानव समाज इन बाह्याचार और बाह्याडंबर रूपी स्थूल छिलकों में बुरी तरह उलझ गया है। हमें जब तक धर्म की वास्तविक 'मणि' प्राप्त नहीं होती, तब तक हम कंगाल हैं। हमारा जीवन निस्सार दिखावों, निरर्थक कर्मकांडों और निकम्मे बुद्धि-विलोलो से भरा रहता है। धर्म का सार तो चित्त की शुद्धता में है, राग-द्वेष-मोह के बंधनों से मुक्त होने में है। विषम स्थितियों में भी चित्त की समता बनाए रखने में है। मैत्री, करुणा, मुदिता में है। साथ-साथ जो यह भी समझते हो कि ये गुण हममें नहीं है तो देर-सवेर वे भी धर्म के सार को प्राप्त कर ही लेते हैं। लेकिन जब हम बाह्याडंबर के निस्सार छिलकों को ही धर्म मानने लगते हैं, तब शुद्ध धर्म प्राप्त कर सकने की सारी संभावनाओं को खो देते हैं। हम यह जांच कभी करते ही नहीं हैं कि जिसे हम धर्म माने जा रहे हैं, उसकी वजह से हमारे मन-मानस में क्या सुधार हो रहा है? अथवा हमारे जीवन-व्यवहार में कुछ सुधार हो रहा है? अतः धर्म की शुद्धता को जानना, समझना, जांचना, परखना पहला आवश्यक चरण है। शुद्ध धर्म सदा स्पष्ट और सुबोधक होता है। उसमें रहस्यमयी गुत्थियां नहीं होतीं। शुद्ध धर्म में कपोल कल्पनाएं नहीं होतीं। जो कुछ होता है, यथार्थ ही होता है। धर्म कोरे सिद्धांत निरूपण के लिए नहीं प्रत्युत स्वयं का साक्षात्कार करने के लिए होता है।

दृष्टिकोण में बदलाव से जीवन में सकारात्मकता

संकलित
प्रेरणा

एक यूनानी दार्शनिक का शिष्य था, जिसे उसके गुरु ने तीन साल तक हर उस व्यक्ति को पैसे देने के लिए कहा, जो उसका अपमान करता था। जब परीक्षण की अवधि समाप्त हो गई तो गुरु ने उससे कहा, 'अब तुम एथेंस जाकर ज्ञान प्राप्त कर सकते हो।' जब शिष्य ने एथेंस में प्रवेश किया तो उसे द्वार पर एक ज्ञानी पुरुष बैठा मिला, जो हर आते-जाते व्यक्ति को अपमानित करता था। उसने शिष्य को भी अपमानित किया तो वह शिष्य जोर से हंसा। ज्ञानी पुरुष ने उससे पूछा, 'मैं तुम्हारा अपमान कर रहा हूं तो तुम हंस क्यों रहे हो?' शिष्य ने उत्तर दिया, 'क्योंकि मैं इस तरह की बात के लिए लोगों को पैसे देता रहा हूं और तुम यह मुझे मुफ्त में दे रहे हो।' 'नगर के भीतर प्रवेश करो', ज्ञानी पुरुष ने कहा, 'यह नगर तुम्हारा है।' नजरिये में बदलाव लाने की क्षमता एक अत्यंत ताकतवर और प्रभावशाली उपकरण है, जो हमें जीवन में रोजमर्रा की परेशानियों से निपटने में मदद करता है। चीजों को अलग नजरिये से देखने की क्षमता बहुत लाभकारी होती है। इसके अभ्यास से व्यक्ति कुछ अनुभवों, कुछ त्रासदियों की मदद से दिमाग को शांत कर सकता है। मनुष्य को समझना चाहिए कि हर बात और हर घटना के विभिन्न पहलू होते हैं। हर चीज सापेक्ष होती है। उदाहरण के लिए, मेरे मामले में, मैंने अपना देश खो दिया। उस दृष्टिकोण से यह बहुत दुख की बात है और इससे भी ज्यादा दुख की कई बातें हुई हैं। परंतु अगर मैं इसी बात को अलग नजरिये से देखूं तो मुझे लगता है कि एक शरणार्थी होने के दृष्टिकोण से किसी तरह की औपचारिकता, जश्न या नवाचार की जरूरत नहीं है। यदि स्थिति यथावत होती, अगर सब कुछ ठीक-ठाक होता तो बहुत-से अवसरों पर आप सिर्फ चलते रहते हैं; आप दिखावा करते हैं। परंतु जब आपके सामने निराशाजनक परिस्थितियां आती हैं तो दिखावा करने का समय नहीं मिलता।

अंतर्मन

आज की पाती

देश का विकास उद्योग जगत पर निर्भर

देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने देश की आर्थिक व्यवस्था की मजबूती के लिए देश में औद्योगिकीकरण को बढ़ावा देना जरूरी माना था। देश की आर्थिक व्यवस्था के लिए जब जवाहरलाल नेहरू के समक्ष तीन प्रस्ताव पेश किए गए, जिनमें मुख्यतः पहला गांधीवादी विचारधारा का, दूसरा एमएन राय का, और तीसरा देश के मुख्य पूंजीपतियों की विचारधारा का था, तो जवाहरलाल नेहरू ने देश के उस समय के सबसे बड़े उद्योगपतियों टाटा-बिड़ला के प्लान को ही स्वीकार किया था। देश के विकास में उद्योग जगत की भूमिका हमेशा रही है। नेहरू यह मानते थे कि उद्योगों को बढ़ावा देने से ही देश की आर्थिक व्यवस्था मजबूत हो सकती है। इसलिए आज भी जरूरत है कि उद्योगों को बढ़ावा दिया जाए।

– मनोज कुमार देशलहरे

करंट अफेयर

बहराइच वन्यजीव हमला, भेड़ियों के हमलों संरक्षण पर दिया जोर

बहराइच में भेड़ियों के हमलों की बढ़ती संख्या और उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा जरूरत पड़ने पर उन्हें गोली मारने के आदेश के बीच विशेषज्ञों ने विलुप्ति की कगार पर पहुंच चुकी इस प्रजाति के संरक्षण पर जोर दिया है। वन्यजीव विशेषज्ञों का कहना है कि भेड़िये शर्मीले प्रवृति के होते हैं और झुंड में रहते हैं जो अपने सदस्यों के प्रति सहानुभूति दिखाते हैं। बहराइच की महसी तहसील में मार्च से अब तक भेड़ियों के कथित हमलों में नौ बच्चों सहित 10 लोग मारे जा चुके हैं तथा क्षेत्र में मानव-वन्यजीव संघर्ष में लगभग तीन दर्जन लोग घायल हुए हैं। सरकार ने इसे वन्यजीव आपदा घोषित किया है। इन 10 मौतों में से आठ लोगों की मौतें पिछले दो महीनों में हुई हैं, जबकि 50 गांवों के निवासी भय के साए में जी रहे हैं। राज्य सरकार ने 17 जुलाई से भेड़ियों को पकड़ने के लिए 'ऑपरेशन भेड़िया' शुरू किया है। भेड़ियों के कथित हमलावर झुंड में से पांच को पहले ही बचा लिया गया है जबकि झुंड के छठे भेड़िये को खोजने के प्रयास चल रहे हैं, जिसकी तस्वीरें पिछले महीने ड्रोन कैमरे के जरिए देखी गई थी। बहराइच में 'ऑपरेशन भेड़िया' का नेतृत्व कर रहे भारतीय वन सेवा अधिकारी और दुधवा राष्ट्रीय उद्यान के पूर्व फील्ड निदेशक संजय पाठक ने भेड़ियों और उनके व्यवहार के बारे में आम गलत धारणाओं की जानकारी दी।

ऑफ बीट

आतंकवाद में बदलाव आया है, लेकिन क्या हम तैयार हैं

जब अल-कायदा सदस्यों ने 11 सितंबर 2001 को न्यूयॉर्क के वर्ल्ड ट्रेड सेंटर में वाणिज्यिक विमानों से टक्कर मारी थी तब दुनिया के सामने यह स्पष्ट हो गया था कि आतंकवादी कौन है, लेकिन 23 साल बाद भी वास्तविकता यह है कि आतंकवादियों का कोई एक प्रकार नहीं है। चूंकि विश्व भर में सुरक्षा बल सभी प्रकार के समूहों से उत्पन्न खतरों से जूझ रहे हैं, इसलिए प्रतिद्वंद्वी कौन है, इस पर सहमति अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। आतंकवाद की एक प्रभावी परिभाषा जरूरी है ताकि राष्ट्रीय सुरक्षा एजेंसियों के लिए परिचालन नियम तैयार किए जा सकें तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शांति और युद्ध, मित्रों और शत्रुओं तथा खतरे के परिदृश्यों के साझा परिप्रेक्ष्य के आधार पर संयुक्त प्रयासों को सुविधाजनक बनाया जा सके। कोई शख्स अपनी गतिविधियों के कारण आतंकवादी कहलाता है, न कि अपने विश्वासों के कारण, तथा उसकी गतिविधियों के कारण ही उस पर मुकदमा चलाया जाता है। अच्छाई और बुराई के सैद्धांतिक स्तर पर आतंकवाद को लेकर चर्चा करना निरर्थक है। भले ही हम सभी इस बात पर सहमत हों कि आतंकवाद बुराई की अभिव्यक्ति है, लेकिन इस बात पर सहमति नहीं बन सकती कि आतंकवादी कौन हैं।

ट्रेंड

पीएम-जेएवाई का विस्तार

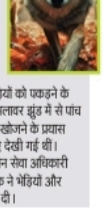

हम प्रत्येक भारतीय के लिए सुलभ, किफायती और उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवा सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है। इस संदर्भ में, कैबिनेट ने आयुष्मान भारत पीएम-जन आरोग्य योजना के दायरे को और विस्तारित करने का निर्णय लिया है।
-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

समाज व सरकार विचार करें

सेना के दो जवानों के साथ हिंसा और उनकी महिला साथी के साथ दुष्कर्म पूरे समाज को शर्मसार करने के लिए काफी है। समाज और सरकार दोनों गंभीरता से विचार करें - देश की आधी आबादी की रक्षा की जिम्मेदारी से कब तक आंख चुराएंगे
-राहुल गांधी, कांग्रेस सांसद

समान अवसर की जरूरत

भारत की अर्थव्यवस्था पर विश्व बैंक की नई रिपोर्ट बेहद उत्साहवर्धक है। विकास दर 7% रहने का अनुमान है और हम सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था बने रहेंगे। हमें सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों के बीच समान अवसर की आवश्यकता है।
-अनिल अग्रवाल, व्यवसायी

सबसे महत्वपूर्ण...कहानी

टोरंटो इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में फिल्म छात्रों के एक समूह के साथ, जो मुझसे फिल्म बनाते समय 10 सबसे महत्वपूर्ण चीजें पूछ रहे थे। मैंने जो कहा वह यहा है; कहानी, कहानी, कहानी...
-शेखर कपूर, फिल्म निर्माता

अपने विचार

हरिभूमि कार्यालय
टिकरापारा, रायपुर में पत्र के माध्यम से या फैक्स : 0771-4242222, 23 पर या सीधे मेल से hbcgpati@gmail.com पर भेज सकते हैं।

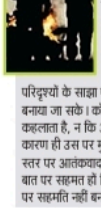

राष्ट्रीय सहारा
नई दिल्ली • शुक्रवार • 13 सितम्बर • 2024
www.rashtriyasahara.com

अनमोल वचन

साधारण दिखने वाले लोग ही दुनिया के सबसे अच्छे लोग होते हैं। यही वजह है कि भगवान ऐसे बहुत से लोगों का निर्माण करते हैं
-अब्राहम लिंकन

बयान पर विवाद

राहुल गांधी ने कहा कि पिछले दस वर्षों से भारत में लोकतंत्र को बुरी तरह नुकसान पहुंचाया गया। वह आजकल अमेरिका की यात्रा पर हैं। वहां नेशनल प्रेस क्लब में पत्रकारों से उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र में हमारी सरकार छीन ली गई। हमारे विधायक खरीद लिए गए, उन्हें फंसा दिया गया। वह विदेशी मंच से लगातार मोदी सरकार, भाजपा और आरएसएस पर हमले कर रहे हैं जिससे ये सब तिलमिला गए हैं। आरक्षण संबंधी उनके बयान पर भी राजनीतिक भूचाल मचा हुआ है। भाजपा ने सवाल उठाया कि वह कैसे विपक्ष के नेता हैं, जो विदेश में जाकर देश को बदनाम करते हैं। राहुल ने सिखों के लिए कहा था कि वे जिस लड़ाई में हैं, उसमें सिखों को भारत में पगड़ी और कड़ा पहनने की

इजाजत देने की मांग भी शामिल है। इस पर सिखों ने उनके दिल्ली निवास पर भारी प्रदर्शन किया। गांधी ने आरएसएस के विचारों में तमिल, मराठी, बंगाली और मणिपुरी जैसी भाषाओं को कमतर बताया तथा कहा कि हर राज्य का अपना इतिहास और परंपरा होती है। आरएसएस पर इनकी उपेक्षा का आरोप लगाया। आरोप गलत नहीं हैं कि राहुल गांधी की विदेश यात्राएं पिछले कुछ वर्षों से लगातार विवादों में रही हैं। कंबोडिया से लेकर दक्षिण कोरिया, ब्रिटेन, इटली तक की यात्राओं के दौरान उन्होंने ऐसे बयान दिए जिनसे देश में खासा विवाद पैदा हुआ। कहना गलत नहीं होगा कि यह उनकी रणनीति का हिस्सा हो सकता है। नेता प्रतिपक्ष बनने के बाद वह पहली बार विदेश यात्रा पर हैं। आम चुनाव में भाजपा की सीटें कम होने और विपक्षी दलों को पिछले चुनाव की बनिस्बत अधिक सीटें प्राप्त होने से भी राहुल का उत्साह बढ़ा है। वह लगातार जनता को प्रभावित करने और सरकार के कामकाज पर कड़ी टिप्पणी करके अपनी स्थिति मजबूत करते नजर आना चाहते हैं। जम्मू-कश्मीर और हरियाणा में चुनाव से भी इसे जोड़ कर देखे जाने की जरूरत है। बात चुनावी रणनीति की हो या जनता को प्रभावित करने के पैंतरे अपनाने की, राहुल को देश की गरिमा और प्रतिष्ठा का ख्याल रखना सीखना होगा। व्यक्ति विशेष, राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता और सत्ता दल की आलोचना करना उनका उत्तरदायित्व है। आलोचनात्मक रवैये और प्रतिरोध के लिए संसदीय मार्ग हमेशा उनके पास है। समय और स्थान का सम्मान करते हुए बयान देने के प्रयास भी राहुल गांधी को करने होंगे।

बढ़त में कमला हैरिस

अमेरिका में राष्ट्रपति पद की पहली बहस में पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और उप राष्ट्रपति कमला हैरिस के बीच तीखापन स्वाभाविक है। दोनों उम्मीदवारों के बीच रूस-यूक्रेन संघर्ष, इस्राइल-हमास जंग, गर्भपात और अर्थव्यवस्था समेत कई अन्य मुद्दों पर तीखी बहस हुई। ज्ञात है कि अमेरिका में राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव 5 नवम्बर को होंगे। चुनाव से पहले डेमोक्रेट प्रत्याशी कमला हैरिस और रिपब्लिकन उम्मीदवार डोनाल्ड ट्रंप पहली बार एक-दूसरे से बहस में आमने-सामने थे। दोनों के बीच 90 मिनट बहस हुई। बहस की सबसे अहम बात यह है कि इसे बड़ी संख्या में लोग टीवी पर देखते हैं। माना जाता है कि अमेरिका में वोटिंग पर इन डिबेट्स का बड़ा असर होता

है। मतदाता उम्मीदवारों के बीच अहम मसलों पर बहस को बेहद संजीदगी से सुनते और अपने विचारों को गढ़ते हैं। वो यह भी देखते हैं कि देश के विकास का रोडमैप किस नेता का ज्यादा स्पष्ट है। यही वजह है कि बहस को लेकर उम्मीदवारों की तैयारियां काफी सोच-समझकर और तार्किक रूप से की जाती हैं। बहरहाल, अमेरिकी मीडिया ने इस पहली बहस में कमला हैरिस को अपने प्रतिद्वंद्वी ट्रंप से बीस बताया है। कई सारी मीडिया ने कमला की जीत को नजदीकी जीत नहीं माना और कहा कि हैरिस की तैयारी ट्रंप के मुकाबले बेहतर थी। दरअसल, बाइडन के राष्ट्रपति चुनाव नहीं लड़ने के ऐलान और हैरिस के इस पद पर लड़ने के बाद से यहां का चुनाव काफी रोचक और कड़ा हो चला है। बीती जुलाई में राष्ट्रपति के रूप में फिर से चुनाव के लिए खड़े होने से पहले जो बाइडन मतदाताओं के सर्वेक्षण में डोनाल्ड ट्रंप से पीछे चल रहे थे। राजनीतिक मामलों का विश्लेषण करने वाले संगठन 'रियल क्लियर पॉलिटिक्स' ने राष्ट्रीय सर्वेक्षणों का औसत संकलित किया। उसके मुताबिक उम्मीदवारी संभालने के बाद से कमला हैरिस को उनमें तीन अंक मिले हैं। इसमें कहा गया है कि 3 सितम्बर तक वह राष्ट्रीय स्तर पर ट्रंप से 1.9 अंक से आगे थीं। खैर, चुनाव की तारीख नजदीक आने के साथ ही प्रचार का तरीका भी आक्रामक होता जाएगा। देखना है, पहली बहस में पीछे रहने के बाद ट्रंप कौन सी रणनीति अपनाते हैं। यह भी देखना समीचीन होगा कि हैरिस क्या बढ़त को बरकरार रख पाएंगी।

चिंता/मनीष कुमार चौधरी

कचरा और पर्यावरण

माउंट एवरेस्ट में पर्यटकों की भारी वृद्धि ने पर्यावरण पर बहुत अधिक दबाव डाला है और यहां कचरे के पहाड़ खड़े कर दिए हैं। पर्वतारोहियों की भीड़ और खराब अपशिष्ट प्रबंधन ने इसे प्रदूषित गंदगी में बदल दिया है। व्यावसायिक पर्वतारोहण के चलते बड़ी रकम खर्च करने वाले पर्वतारोहियों की बढ़ती संख्या अपने पीछे छोड़े गए बदसूरत पदचिह्नों पर कम ध्यान देती है। ट्रैकिंग मार्गों के किनारे शेरपा गांवों में कभी भी टिकाऊ कचरा निपटान प्रणाली नहीं रही है।

हर वर्ष साठ हजार से अधिक ट्रेकर्स और पर्वतारोही सागरमाथा नेशनल पार्क और बफर जोन का दौरा करते हैं, जो उत्तर-पूर्व नेपाल में खुंबू क्षेत्र का ऊंचाई वाला क्षेत्र है, जिसमें एवरेस्ट और सात अन्य चोटियां शामिल हैं। कचरे की समस्या सबसे पहले 1980-1990 के दशक में स्पष्ट हुई, जब खुंबू में पहाड़ पर चढ़ाई और ट्रैकिंग बढ़ने लगी। आज एवरेस्ट इतना भीड़भाड़ और कचरे से भरा है कि इसे 'दुनिया का सबसे ऊंचा कचरा डंप' कहा जाता है। अनुमान है कि एवरेस्ट के निचले हिस्से में कैंप एक तथा शिखर की ओर कैंप चार के बीच लगभग तीन टन तो मानव मल ही है। माना जाता है कि इसका आधा हिस्सा साउथ कोल में है, जिसे कैंप चार के नाम से भी जाना जाता है। साउथ कोल ने तो 'खुले शौचालय' के रूप में ख्याति प्राप्त कर ली है। मौसम की स्थिति ठीक होने पर वर्ष के कुछ हफ्तों के दौरान हर चढ़ाई के मौसम में 600 से अधिक लोग माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने का प्रयास करते हैं। इसके अलावा, प्रत्येक पर्वतारोही के लिए कम से कम एक स्थानीय कर्मचारी होता है जो खाना बनाता है, उपकरण ले जाता है और अभियान का मार्गदर्शन करता है। बहुत सारे उपकरण, भोजन और पैकेजिंग, साथ ही जानवर और कुली...का मतलब है ढेर सारा कचरा। बहुत कम लोग माउंट एवरेस्ट की चोटी पर चढ़ते समय अपने मल को बायोडिग्रेडेबल बैग में वापस लाते हैं। ढलानों पर फेंके गए ऑक्सीजन के खाली डिब्बे, छोड़े गए टेंट, खाद्य कंटेनर और मानव मल यहां-वहां बिखरे पड़े हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण बर्फ और पिघल रही है, जिससे दशकों से दबा-ढका कचरा भी बाहर आ रहा है। यह सारा कचरा न सिर्फ प्राकृतिक पर्यावरण को नुकसान पहुंचा रहा है, एवरेस्ट वाटरशेड में रहने वाले लोगों के लिए गंभीर स्वास्थ्य जोखिम भी पैदा कर रहा है। शेरपाओं के लिए यह पर्वत पवित्र स्थान है। इसकी पवित्रता तभी बरकरार रहेगी, जबकि व्यावसायिक लाभ के लिए इसका दुरुपयोग न हो।

कांटे के मुकाबले की उम्मीद

हरियाणा

राहुल महाजन

हरियाणा में 5 अक्टूबर को मतदान होना है। हरियाणा में इस वक्त बीजेपी की सरकार है। बीजेपी की बात करें तो पार्टी ने कुछ महीने पहले हरियाणा में खुद को बदला है, नये मुख्यमंत्री के साथ बीजेपी चुनावी मैदान में है। बीजेपी गठबंधन सहयोगी जेजेपी से भी नाता तोड़ चुकी है लेकिन सवाल है कि क्या इससे सत्तारूढ़ पार्टी को लगातार तीसरा विधानसभा चुनाव पाएगी? या इस बार सियासी गणित कुछ अलग होगा?

राज्य की पांच प्रमुख पार्टियों के तौर पर बीजेपी, कांग्रेस, जननायक जनता पार्टी, आम आदमी पार्टी और भारतीय राष्ट्रीय लोक दल शामिल हैं। हरियाणा में 10 साल से सत्ता में बीजेपी के पास बूथ स्तर तक मजबूत संगठनात्मक ढांचा है। पार्टी ने इन चुनावों की तैयारी काफी पहले से शुरू कर दी थी लेकिन दो दशकों तक सरकार चलाने के बाद बीजेपी को सत्ता-विरोधी लहर का सामना करना पड़ रहा है। बीजेपी को हाल में हुए लोक सभा चुनावों में 10 में से पांच सीटें जीतने वाली कांग्रेस से कड़ी चुनौती मिल रही है। 4 सितम्बर को बीजेपी ने 67 नामों वाली टिकटों की पहली सूची जारी की। इसमें 25 नये चेहरे शामिल हैं।

इस सूची की मुख्य बातों पर गौर करें तो-

-5 टिकट ऐसे नेताओं को दिए गए हैं, जो 2019 के विधानसभा चुनाव में चुनाव हार गए थे-लोक सभा चुनाव 2019 में हारने वाले पांच विधायकों को टिकट दिया गया है। इनमें सढ़ौरा से बलवंत सिंह, नीलोखेड़ी (एससी) से भगवानदास कबीरपंथी, इसराना (एससी) से राज्य सभा सांसद कृष्ण लाल पंवार, नारनौंद से कै. अभिमन्यु और बादली से ओम प्रकाश धनखड़ शामिल हैं। पंवार आगामी विधानसभा चुनाव में मैदान में उतरने वाले बीजेपी के एकमात्र मौजूदा सांसद हैं। वे हरियाणा बीजेपी के लिए प्रमुख दलित चेहरा हैं, और 2014 से 2019 तक मनोहर लाल खट्टर की सरकार में परिवहन मंत्री थे-राव नरवीर सिंह को बीजेपी ने बादशाहपुर से टिकट दिया है, जिन्होंने 2014 में इसी सीट से विधानसभा चुनाव जीता था और खट्टर की सरकार में कैबिनेट मंत्री बने थे, इसे पार्टी द्वारा केंद्रीय मंत्री राव इंद्रजीत सिंह को नजरअंदाज करने के कदम के रूप में देखा जा रहा है। 2019 के विधानसभा चुनाव में राव इंद्रजीत सिंह ने राव नरवीर सिंह को टिकट देने से इनकार कर दिया था, जिन्होंने पहले घोषणा की थी कि भाजपा उन्हें टिकट देने से इनकार करती है तो वे कांग्रेस उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ेंगे-मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी समेत 4 विधायकों की सीटें बदल दी गई हैं। करनाल से विधायक सैनी लाडवा सीट से चुनाव लड़ेंगे। हरियाणा विधानसभा के उपाध्यक्ष और नलवा विधायक रणवीर गंगवा को नलवा की जगह

बरवाला से टिकट दिया गया है, जबकि कोसली विधायक लक्ष्मण यादव को कोसली की जगह रेवाड़ी से टिकट दिया गया है-8 मौजूदा विधायकों को टिकट नहीं दिया गया है। बीजेपी ने सबसे ज्यादा सीटें (41) तीन समुदायों को दी हैं: अनुसूचित जाति), ओबीसी और जाट-पार्टी ने 13 सीटों पर एससी, 15 पर ओबीसी और 13 पर जाट उम्मीदवार उतारे हैं-67 उम्मीदवारों में से केवल आठ महिलाएं हैं-10 दलबदलुओं को टिकट दिया गया है। इनमें श्रुति चौधरी शामिल हैं, जो पहले कांग्रेस में थीं और जननायक जनता पार्टी (जेजेपी) के तीन विधायक शामिल हैं। पार्टी ने इन निर्वाचन क्षेत्रों में पार्टी के चुनावी आधार का विस्तार करने के उद्देश्य से उन्हें उनके गढ़ों से चुनाव लड़ने के लिए टिकट दिए हैं

सबसे बुजुर्ग उम्मीदवार रामकुमार गौतम (78) हैं, जिन्हें सफीदों से मैदान में उतारा गया है, जबकि सबसे युवा उम्मीदवार दीपक हुड्डा (30) हैं, जिन्हें महम से मैदान में उतारा गया है और मंजू हुड्डा (30) हैं, जिन्हें गढ़ी सांपला किलोई से मैदान में उतारा गया है-बीजेपी के मुख्य वोट बैंक-ब्राह्मण, वैश्य और पंजाबी समुदाय-को पहली सूची में केवल 24 टिकट दिए गए थे-पांच वंशवादी, पूर्व कबड्डी कप्तान कुलदीप बिश्नोई के बेटे भव्य बिश्नोई, किरण चौधरी की बेटी श्रुति चौधरी, केंद्रीय मंत्री राव इंद्रजीत की बेटी आरती राव, पूर्व मंत्री सतपाल सांगवान के बेटे सुनील सांगवान और पूर्व मंत्री विनोद शर्मा की पत्नी शक्ति रानी शर्मा को टिकट दिए गए हैं। सुनील, जिनके सुनारिया जेल अधीक्षक के कार्यकाल के दौरान रेप के दोषी और डेरा सच्चा सौदा प्रमुख गुरमीत राम रहीम को छह बार पैरोल या फरलो पर रिहा किया गया था, उन्हें पहलवान बबीता फोगाट की जगह चरखी दादरी से टिकट दिया गया है। सुनील ने वीआरएस ली और इस सप्ताह की शुरुआत में भाजपा में शामिल हो गए। सुनील पूर्व मंत्री सतपाल सांगवान के बेटे हैं, जो 2024 के लोक सभा चुनाव से पहले कांग्रेस छोड़कर बीजेपी में शामिल हुए थे। वे चरखी दादरी से पूर्व विधायक हैं-बबीता फोगाट को टिकट न दिए जाने की भरपाई के लिए पार्टी ने भारतीय कबड्डी टीम के पूर्व कप्तान दीपक हुड्डा को महम से मैदान में उतारा है।

दूसरी ओर मुख्य विपक्षी कांग्रेस के 32 उम्मीदवारों की घोषणा कर पार्टी ने अपने सभी 28 सिटिंग विधायकों पर फिर से मैदान में उतारा है। -इस लिस्ट में पार्टी ने सिर्फ एक ही नये चेहरे को टिकट दिया और वो चेहरा विनेश फोगाट का है। कांग्रेस ने विनेश को जुलाना विधानसभा सीट से अपना उम्मीदवार बनाया है-कांग्रेस ने अपनी दो लिस्ट में 5 महिलाओं को भी टिकट दिया है-पहली लिस्ट में 12 जाट, 8 एससी, 4 ओबीसी, 2 ब्राह्मण, 3 मुस्लिम, 1 पंजाबी और 1 सिख उम्मीदवार को टिकट दिया गया है-सुरेंद्र पवार, राव दान सिंह और धर्म सिंह छौक्कर के खिलाफ ईडी की कार्रवाई चल रही है। फिर भी कांग्रेस ने उन्हें उम्मीदवार बनाया है। सोनीपत से विधायक सुरेंद्र पवार तो जेल में हैं, लेकिन कांग्रेस ने उन्हें जेल से ही चुनाव लड़वाने का फैसला किया है-कांग्रेस ने बीते रविवार को एक और लिस्ट जारी कर दी। इस लिस्ट में 9 उम्मीदवारों के नाम शामिल हैं। जारी लिस्ट में बृजेंद्र सिंह को उचाना से, तोशाम से अनिरुद्ध चौधरी, बादशाहपुर से वर्धन यादव, नांगल चौधरी से मंजू चौधरी को उम्मीदवार बनाया गया है। इस सूची में हाल में बीजेपी से कांग्रेस में शामिल हुए बृजेंद्र सिंह को कांग्रेस का टिकट मिल गया है।

इस सब के बीच आम आदमी पार्टी की चर्चा अलग से करना जरूरी है। पार्टी दिल्ली और पंजाब में अपनी सरकारों द्वारा शुरू की गई कल्याणकारी योजनाओं पर निर्भर है। हरियाणा में पहले भी चुनाव लड़ चुकी है, लेकिन चुनावी सफलता नहीं मिली। इस बार आप कांग्रेस के साथ गठबंधन में हरियाणा विधानसभा चुनाव लड़ना चाहती थी।

(लेखक के निजी विचार हैं)

> बीजेपी की बात करें तो पार्टी ने कुछ महीने पहले हरियाणा में खुद को बदला है, नये मुख्यमंत्री के साथ बीजेपी चुनावी मैदान में है। बीजेपी गठबंधन सहयोगी जेजेपी से भी नाता तोड़ चुकी है लेकिन सवाल है कि क्या इससे सत्तारूढ़ पार्टी को लगातार तीसरा विधानसभा चुनाव पाएगी? या इस बार सियासी गणित कुछ अलग होगा? राज्य की पांच प्रमुख पार्टियों के तौर पर बीजेपी, कांग्रेस, जननायक जनता पार्टी, आम आदमी पार्टी और भारतीय राष्ट्रीय लोक दल शामिल हैं

विदेश में पेय पदार्थों को बढ़ावा देगी सरकार

- केंद्र सरकार भारतीय शराब की वैश्विक स्तर पर बढ़ती मांग के मद्देनजर इंटरनेशनल बाजारों में एल्कोहल-युक्त और एल्कोहल-मुक्त पेय पदार्थों को बढ़ावा देने की योजना बना रही है
- सरकार का लक्ष्य है कि अगले कुछ वर्षों एल्कोहल-युक्त और एल्कोहल-मुक्त पेय पदार्थों का निर्यात एक अरब अमेरिकी डॉलर (करीब 8 हजार करोड़ रुपये) के स्तर पर पहुंचाया जाए
- अभी भारत इन पेय पदार्थों के निर्यात के मामले में दुनिया में 40वें स्थान पर है। अनुमानों के मुताबिक, देश में इन पेय पदार्थों के निर्यात की अपार संभावनाएं हैं

(स्रोत : मीडिया इनपुट्स)

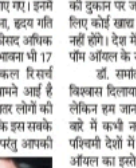

गज़ा और मणिपुर दोनों जगह हिंसा लगभग साथ ही शुरू हुई थी। आज भी दोनों जगह चल रही है। फर्क इतना है कि गाज़ा पर फिर भी अपडेट मिल जाती है, मणिपुर पर पूरी खामोशी है। बीच में कोई खबर निकल के आती है, फिर शांति। अपने ही देश के एक इलाके में साल भर से आग लगी है, किसी को कोई फर्क नहीं पड़ता।

अशोक कुमार पांडेय, लेखक
@Ashok_Kashmir

दिल-ए-नादां तुझे हुआ क्या है

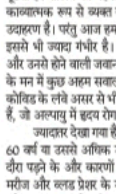

मुद्दा **रजनीश कपूर**

दिल-ए-नादां तुझे हुआ क्या है, आखिर इस दर्द की दवा क्या है। मशहूर शायर मिर्जा गालिब की यह गजल काव्यात्मक और रूपकात्मक रूप से जीवन के शाश्वत और मौलिक प्रश्न पूछती है। गालिब की यह प्रसिद्ध गजल वास्तविकताओं को काव्यात्मक रूप से व्यक्त करने की कुशलता का बेहतरीन उदाहरण है। परंतु आज हम जिस विषय को उठा रहे हैं, वह इससे भी ज्यादा गंभीर है। हृदय रोग से संबंधित बीमारियों और उनसे होने वाली जवान मौतों के बढ़ते आंकड़े हम सभी के मन में कुछ अहम सवाल पैदा कर रहे हैं। कुछ लोग इसे कोविड के लंबे असर से भी जोड़ रहे हैं परंतु अन्य कारण भी हैं, जो अल्पायु में हृदय रोग को बढ़ावा दे रहे हैं।

ज्यादातर देखा गया है कि दिल का दौरा या हार्ट अटैक 60 वर्ष या उससे अधिक उम्र के लोगों आता है। दिल का दौरा पड़ने के और कारणों में प्रमुख हैं मधुमेह या शुगर के मरीज और ब्लड प्रेशर के मरीज। इन मरीजों में हार्ट अटैक की संभावना काफी अधिक होती है। धूम्रपान करने वाले भी कब दिल के मरीज बन जाते हैं, पता नहीं चलता। धूम्रपान करने से दिल का दौरा पड़ने की संभावना तीन गुना बढ़ जाती है। जो व्यक्ति तनाव की जिंदगी जीते हैं, नियमित व्यायाम नहीं करते, बेवजह और हर समय जंक फूड का सेवन करते हैं, वे भी इस जानलेवा बीमारी की चपेट में आ जाते हैं। क्या कभी सुना है किसी हट्टे-कट्टे व्यक्ति को अचानक दिल का दौरा पड़ा और मौत हो गई? पिछले कुछ वर्षों से ऐसी तमाम खबरें सामने आ रही हैं, जहां व्यक्ति अपने रोजमर्रा के काम या आराम के समय अचानक बेहोश हो गया और उसकी मौत हो गई। मृत्यु का कारण दिल का दौरा। कुछ लोग इसे कोरोना के वायरस का साइड इफेक्ट बता रहे हैं।

एक शोध के अनुसार अमेरिका में कोविड से ठीक हुए व्यक्तियों में 20 तरह के हृदय रोग के लक्षण पाए गए। इनमें उन लोगों के मुकाबले, जिन्हें कोविड नहीं हुआ, हृदय गति रुक जाने या हार्ट फेल होने की संभावना 72 फीसद अधिक पाई गई। औरों के मुकाबले स्ट्रोक आने की संभावना भी 17 फीसद अधिक पाई गई। इमरजेंसी मेडिकल रिसर्च इंस्टीट्यूट (ईएमआरआई) की एक रिपोर्ट सामने आई है जिसके नतीजे कहते हैं, हार्ट अटैक वाले ज्यादातर लोगों की उम्र 50 साल से कम है। यदि आप सोच रहे हैं कि इस सबके पीछे आपकी जीवन शैली है तो ऐसा सही है। परंतु आपकी

जीवन शैली में ऐसी कौन सी कमी है जो हार्ट अटैक का कारण बन रही है? आपको जानकर हैरानी होगी कि इसका दोषी पॉम ऑयल है। पॉम ऑयल मदिरापान और धूम्रपान से कहीं अधिक खतरनाक है।

सोशल मीडिया में मुंबई के जगजीवन राम अस्पताल के डॉक्टर पी के समांतराय का एक संदेश काफी चर्चा में है। वे कहते हैं, 'दुनिया में भारत पॉम ऑयल का सबसे बड़ा आयातक है। हमारे देश में पॉम ऑयल माफिया बहुत ताकतवर है। इनके कारण हमारे बच्चे, जो देश का भविष्य हैं, एक बड़े खतरे में जी रहे हैं। आज हमारे देश में पॉम ऑयल के बिना कोई फास्ट फूड नहीं मिलता। आप किराने की दुकान पर जाते हैं, और पॉम ऑयल के बिना बच्चों के लिए कोई खाद्य पदार्थ लेने का प्रयास करें तो आप सफल नहीं होंगे। देश में ज्यादातर बिस्किट और चॉकलेट भी बिना पॉम ऑयल के नहीं बनते।'

डॉ. समांतराय आगे कहते हैं, 'हमें विज्ञापनों द्वारा विश्वास दिलाया जाता है कि ऐसे खाद्य पदार्थ स्वस्थ हैं। लेकिन हम जानलेवा पॉम ऑयल या पामिटिक एसिड के बारे में कभी नहीं जानते थे। 'लेज' जैसी बड़ी कंपनियां पश्चिमी देशों में अलग तेल बेचती हैं, और भारत में पॉम ऑयल का इस्तेमाल सिर्फइसलिए करती हैं कि यह सस्ता है। जब भी हमारा बच्चा पॉम ऑयल युक्त उत्पाद खाता है, तो मस्तिष्क अनुचित व्यवहार करता है और हृदय के आसपास और हृदय में वसा संचित करने का संकेत देता है जिससे बहुत कम उम्र में मधुमेह हो जाता है। वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम ने अनुमान लगाया है कि कम उम्र में मरने वाले 50 प्रतिशत लोग मधुमेह और हृदय रोग से मरेंगे। पॉम ऑयल माफिया ने हमारे बच्चों को दिल की सुरक्षा करने वाले फल-सब्जियों को छोड़कर जंक फूड का आदी बना दिया है। अगली बार जब आप अपने बच्चे के लिए कुछ खरीदें, तो उत्पाद का लेबल देखें।' जिस खाद्य पदार्थ में पॉम आयल हो उसे कभी न लें।

समय-समय पर होने वाले शोध बताते हैं कि रेडी-टू-ईट और पैकेज्ड फूड्स में अक्सर पॉम ऑयल होता है जो हमारे सेहत को कई नुकसान पहुंचा सकता है। पॉम ऑयल में सैचुरेटेड फैट काफी मात्रा में पाई जाती है। यह बॉडी में कोलेस्ट्रॉल का स्तर बढ़ाता है। इसके कारण दिल की बीमारियां होने का खतरा बना रहता है। 2022 में भारत में पॉम ऑयल की खपत आठ मिलियन मीट्रिक टन से अधिक हुई थी। यदि हमें हृदय को स्वस्थ रखना है तो अपनी जीवन शैली में उचित सुधार लेन होंगे और अपने बच्चों को भी स्वस्थ जीवन शैली अपनाने के लिए प्रेरित करना होगा वरना भारत में हृदय रोग के आंकड़े बढ़ते ही रहेंगे।

समाज निर्माण **श्रीराम शर्मा आचार्य**

समाज व्यक्तियों का समूह मात्र है। व्यक्ति जैसे होंगे वैसा ही समाज बनेगा। इसलिए व्यक्तियों को श्रेष्ठ बनाने का मतलब है-समय को अच्छा बनाना और समय को अच्छा बनाने का मतलब है-युग के प्रवाह को बदल देना। युग का प्रवाह बदल देना अर्थात् समाज को बदल देना। समाज को बदल देना अर्थात् व्यक्तियों को बदल देना। दृष्टिकोण हमारा गलत होता है, तो हमारे क्रियाकलाप गलत होते हैं और गलत क्रियाकलाप के परिणामस्वरूप जो प्रतिक्रियाएं होती हैं, जो परिणाम सामने आते हैं, वे भयंकर दुःखदायी होते हैं। इनके निवारण के लिए आवश्यक है मनुष्य का चिंतन और शिक्षण बदल दिया जाए। इसकी चार विधाएं हैं-साधना, स्वाध्याय, संयम और सेवा। चारों ऐसे हैं जिनमें से एक को भी आत्मोत्कर्ष के लिए छोड़ा नहीं जा सकता। चारों आपस में अविच्छिन्न रूप से जुड़े हुए हैं। पहली है-उपासना और साधना। उपासना और साधना-इन दोनों को मिला कर एक पूरी चीज बनती है। उपासना का अर्थ है-भगवान् पर विश्वास, भगवान् की समीपता। उपासना माने भगवान् के पास बैठना, नजदीक बैठना। इसका मतलब यह हुआ कि उसकी विशेषताएं हम अपने जीवन में धारण करें। उपासना का अर्थ यह है कि हम भगवान् का भजन करें, नाम लें, जप करें, ध्यान करें, पर साथ-साथ हम इस बात के लिए भी कोशिश करें कि हम भगवान् के नजदीक आते जाएं। हमको ईश्वर जैसा बनने का प्रयत्न करना चाहिए। ईश्वर जैसे बनें न कि ईश्वर पर हुकुम चलाएं और उनको आदेश दें कि आपको ऐसा करना चाहिए। आपको किसी भी हालत में हमारी मांगें पूरी करनी चाहिए। उपासना का तात्पर्य अपनी मनोभूमि को इस लायक बनाना है कि हम भगवान् के आज्ञानुवर्ती बन सकें। उनके संकेतों के इशारे पर अपनी विचारणा और क्रियापद्धति को ढाल सकें। उपासना-भजन इसीलिए किया जाता है। साधना-साधना का अर्थ है अपने गुण, कर्म, स्वभाव को साध लेना। वस्तुतः मनुष्य चौरासी लाख योनियों में घूमते-घूमते उन सारे प्राणियों के कुसंस्कार अपने भीतर जमा करके ले आया है, जो मनुष्य जीवन के लिए आवश्यक नहीं हैं, बल्कि हानिकारक हैं, तो भी स्वभाव के अंग बन गए हैं और हम मनुष्य होते हुए भी पशु संस्कारों से प्रेरित रहते हैं।

रीडर्स मेल

गैर जिम्मेदाराना बयान

राहुल गांधी जब भी विदेश में होते हैं, उनका यह प्रयास रहता है कि मोदी और देश को कैसे अपमानित किया जाए? यही नहीं राहुल उन सभी से ढूंढ-ढूंढ कर मिलते हैं, जो जो देश की अखण्डता को चुनौती देते हैं। इसके अलावा विदेशी धरती पर पैर रखते ही उनके कोमल मन में पाकिस्तान और चीन के प्रति प्रेम प्रस्फुटित होना एक सामान्य बात है। क्या राहुल और उनकी कांग्रेस के पास इस प्रश्न का उत्तर है कि राहुल गांधी आखिर चीन और पाकिस्तान में इतने लोकप्रिय क्यों हैं? राहुल गांधी अमेरिका की धरती से भारत के उन करोड़ों देशभक्त सिखों को यह कहकर भड़का रहे हैं कि उन्हें भारत में पगड़ी बांधने और गुरुद्वारे जाने की स्वतंत्रता नहीं है? यह बयान उन खालिस्तानियों को पोषित तो करने वाला है जिनको उकसाने वाला आतंकी गुरमीत सिंह पन्नू अमेरिका में मौज उड़ा रहा है और कश्मीर के लिए विलाप करने वाली इल्हान उमर अमेरिकी कांग्रेस की सांसद हैं। राहुल के इस बयान से देश का सिख दुखी और आक्रोशित है। हास्यास्पद तो यह है कि ऐसे बेतुके बयान वो दे रहा है जिसकी पार्टी की सरकार में 1984 में तीन हजार सिखों की हत्या हुई थी। और इस हत्याकांड पर जिसके पिता राजीव गांधी ने टिप्पणी की थी कि 'जब कोई बड़ा पेड़ गिरता है तो धरती हिलती ही है'। क्या देश के किसी सिख के गले यह बात उतर सकती है कि उसे भारत में किसी प्रकार की धार्मिक स्वतंत्रता नहीं है? क्या भारत, हिन्दू और सिख को अलग करने की भी कल्पना की जा सकती है? मंदिर और गुरुद्वारे को अलग करने का यह षड्यंत्र कांग्रेस 1947 से कर रही है। लाखों सिख मंदिरों में और लाखों हिन्दू गुरुद्वारों में शीश नवाते देखे जा सकते हैं। अतः राहुल को अपने इस बयान पर सिखों से क्षमा मांगनी चाहिए।

डॉ. नरेन्द्र टोंक, मेरठ

भारत बनेगा महाशक्ति

'हमारा सपना है कि हर उपकरण में भारत में बनी चिप लगी हो। हम भारत को सेमीकंडक्टर क्षेत्र में महाशक्ति बनाने के लिए हरसंभव प्रयास करेंगे', प्रधानमंत्री मोदी के इस कथन ने निवेशकों का ध्यान निश्चित रूप से आकर्षित किया होगा। ग्रेटर नोएडा के इंडिया एक्सपो सेंटर मार्ट में सेमीकॉन इंडिया 2024 के शुभारंभ पर सेमीकंडक्टर और उससे जुड़े नीतियों के बारे में बताया। करीब 1.5 ट्रिलियन से भी ज्यादा का निवेश दर्शाता है कि भारत सेमीकंडक्टर उद्योग में महाशक्ति बनने की राह पर है। इसमें उत्तर प्रदेश सरकार की नीतियां भी रंग ला रही हैं। वाकई में भारत इस क्षेत्र में वैश्विक पटल पर बढ़ता हुआ नजर आ रहा है।

निखिल नयन, आईआईएमसी, जम्मू

सरकार करे विचार

चीन से गैर जरूरी वस्तुओं का आयात तभी कम हो सकता है जब भारत की जनता चीनी वस्तुओं का बहिष्कार करेगी। व्यापारियों को भी चीनी उत्पाद रखना बंद करना चाहिए। सरकार को चीन से गैर जरूरी वस्तुओं का आयात प्रतिबंधित करना चाहिए। आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर भारत में ही चीन से आयातित सामग्री का निर्माण होना चाहिए। चीन दुनिया की महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर है। उसके नापाक इरादों को ध्वस्त करने के लिए उससे व्यापारिक संबंध तोड़ना आवश्यक है। केंद्र सरकार को इस बारे में गंभीरता से विचार करने की जरूरत है।

ललित महालकरी, इंदौर

letter.editorsahara@gmail.com

हमें गर्व है हम भारतीय हैं

राष्ट्रीय सहारा
सहारा इण्डिया मास कम्युनिकेशन के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक जिया कादरी द्वारा सहारा इंडिया मास कम्युनिकेशन प्रेस, सी-2,3,4, सेक्टर-11, नोएडा में मुद्रित तथा 705-706, ... 21 के.जी. मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित।
। समूह संपादक - डॉ. विजय राय। स्थानीय संपादक - रत्नेश मिश्र* ।
दूरभाष - दिल्ली कार्यालय - 23352368, 23352369, 23352371, 23352372, फैक्स - 23352370, दूरभाष - नोएडा प्रेस 0120-2444755, 2444756 फैक्स - 2550750
वर्ष-34, अंक 30
आर.एन.आई. सं. 53469/91, पंजीकरण संख्या UP/BR /GZB- 38/2024-2026
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन तथा कानूनी मामलों के लिए उत्तरदायी

नवभारत टाइम्स

नवभारत टाइम्स । नई दिल्ली। शुक्रवार, 13 सितंबर 2024

योजना ढंग से लागू हो

सरकार ने आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना में 70 साल से अधिक उम्र के सभी बुजुर्गों को शामिल करने को मंजूरी दे दी है, जो कि एक अच्छा कदम कहा जाएगा। इस फैसले से देश के लगभग 6 करोड़ वरिष्ठ नागरिकों को पांच लाख रुपये तक का इलाज मुफ्त मिल सकेगा। साथ ही, इतनी ही कीमत का हेल्थ इंश्योरेंस कवर भी मिलेगा।

सोशल सिक्योरिटी | इस फैसले की जरूरत इसलिए थी क्योंकि सोशल सिक्योरिटी के मामले में भारत बहुत पीछे है। नैशनल फैमिली हेल्थ सर्वे 2019-21 की रिपोर्ट से पता चलता है कि देश में ऐसे परिवारों की संख्या केवल 41% है, जिनके कम से कम एक सदस्य का हेल्थ इंश्योरेंस हो। बिहार, महाराष्ट्र जैसे बड़ी आबादी वाले राज्यों में तो यह राष्ट्रीय औसत के करीब आधे के बराबर है।

AI Image

बुजुर्गों को राहत

आर्थिक संबल | हेल्थ इंश्योरेंस को लेकर यह उदासीन रवैया हमारी उस आदत की वजह से है, जिसमें ज्यादातर लोग यह सोचते हैं कि जब बीमारी आएगी तो देखा जाएगा। बहुत से लोग जीवन बीमा और स्वास्थ्य बीमा को एक ही चीज समझ लेते हैं। लेकिन, जब बीमारी सिर पर आती है, तो पूरे घर के बजट को तोड़कर रख देती है। सरकार का मौजूदा कदम कई परिवारों को ऐसे आर्थिक दुष्चक्र में फंसने से बचा सकता है।

महंगा इलाज | भारत में इलाज दिनों-दिन महंगा होता जा रहा है। ब्रोकरेज फर्म Mercer and Marsh Benefits के सर्वे के मुताबिक, भारत में 2023 में मेडिकल इन्फ्लेशन 9.6% थी, जो मौजूदा साल में 11% हो सकती है। कोरोना के दौर में पूरे एशिया में चिकित्सा पर महंगाई की सबसे ज्यादा मार हिंदुस्तान पर ही पड़ी थी।

औसत उम्र बढ़ी | WHO का डेटा बताता है कि भारत में जीवन प्रत्याशा 67.3 साल है। पिछले दो दशकों में जन्म के समय life expectancy में 5 बरस से अधिक का इजाफा हो चुका है। यह अच्छी खबर है, लेकिन इसके साथ यह चिंता भी जुड़ी हुई है कि देश में दिल से जुड़े रोगों और डायबिटीज के मरीजों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। फोर्ब्स की एक रिपोर्ट कहती है कि भारत में non-communicable diseases से हर साल लगभग 58 लाख लोगों की मौत होती है। इनमें सबसे ज्यादा लोग मरते हैं हार्ट डिजीज और कैंसर से।

सबको मिले सुविधा | सरकार ने बजट में स्वास्थ्य के लिए कोटा बढ़ाया है। हालांकि चीन और अमेरिका की तुलना में यह अब भी कम है। मेडिकल इंफ्रा बढ़ाने के साथ यह इंतजाम भी करना होगा कि आम जनता उसका फायदा उठा सके। सरकार का हालिया फैसला इसी दिशा में उठाया गया कदम है, लेकिन यह भी सुनिश्चित करना होगा कि योजना को सही ढंग से लागू किया जाए।

रोज़-ब-रोज़

गोपाल के बाघ

शैलेंद्र पांडेय

गोपाल की हंसी बिल्कुल बच्चों जैसी थी, अगर वह एक दांत न होता। उनके मुंह में बचा इकलौता दांत, जो उनकी उम्र की चुगली कर देता था। जब वह हंसते तो वही दांत चमक उठता। अप्रैल की किसी तारीख को मुलाकात हुई थी उनसे, साल 2014। आसमान चमक रहा था, लेकिन गोपाल के घर तक बस रोशनी पहुंचती थी, धूप नहीं। उनका घर था ही ऐसी जगह, केदारघाटी में। उत्तराखंड में गुप्तकाशी से आगे और मैखण्डा गांव से पहले, जंगल के बीचोबीच रहते थे गोपाल। ऊपर से गुजरता नैशनल हाईवे और नीचे घाटी में बह रही अलकनंदा, इनके बीच में गोपाल। उनके पास खड़े होकर लगता कि नदी कुछ ज्यादा ही तेज बोल रही है। लेकिन, गोपाल की हंसी उससे भी तेज होती। लगता दोनों एक-दूसरे से बातें कर रहे हैं। और यह हंसी तब, जब 2013 में आई आपदा ने गोपाल के घर, खेतों को तबाह कर दिया था। पुराना घर बह गया, तो उन्होंने पास में ही लकड़ी, टिन और बरसाती से नई झोपड़ी तैयार कर ली। यही घर था उनका, जिसे उन्होंने अपने बेटे के कहने पर भी नहीं छोड़ा, जो मजदूरी करने के लिए पास के बाजार में जाकर रहने लगा था। उस जगह को छोड़ने के खिलाफ गोपाल की एक ही दलील थी, अपनी जमीन को क्यों छोड़ना बल और वह भी इस बुढ़ापे में?

जब हम मिले, तो उनका चूल्हा जला हुआ था। उनकी फुर्ती देखने लायक थी उस समय। इस तेजी की वजह थी कि उन्हें शाम ढलने के पहले सारा काम कर लेना था, क्योंकि अंधेरा चढ़ने पर उनके दोस्त आते थे उनसे मिलने। 'इसी रास्ते से बाघ जाता है नीचे नदी में पानी पीने', उन्होंने कुछ दूर पंजों के निशान दिखाते हुए यह बात इतनी सहजता से कही, मानो कोई पड़ोसी आता हो चाय पर।

गोपाल आबादी के बीच जाकर नहीं रहना चाहते, शायद इसलिए कि उन्होंने जंगल में रहना सीख लिया था। उनके पास एक गाय थी। छोटी-सी झोपड़ी में वह खुद बाहर की ओर दरवाजे के पास सोते और गाय को अंदर बांधते। चूल्हा उनका शाम के पहले ही बुझ जाता था ताकि बाघ या किसी भी जानवर को नदी की ओर जाने में कोई दिक्कत न हो। न उन्होंने कभी किसी जानवर का रास्ता रोका और न कभी किसी जानवर ने उनकी पुश्तैनी जमीन पर कदम रखा। एक अलिखित समझौता जैसे हो दोनों के बीच, जिसका पालन दोनों ही जी-जान से कर रहे थे।

बहराइच में जब भेड़िये ने आतंक मचा रखा है, तब यह सवाल कई लोग पूछ रहे हैं कि वहां किसने-किसका रास्ता काटा? गोपाल के पास पक्का इसका जवाब होगा और समाधान भी। क्या पता वह अपनी हंसी के साथ अब भी वहीं मिल जाएं।

एकदा

नगालैंड की लक्ष्मीबाई

नगालैंड के लुआंग ओ गांव में सन 1915 में एक बच्ची का जन्म हुआ, जो 13 साल की उम्र में ही अंग्रेजों के खिलाफ स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़ी। वह बच्ची गिडालू बाद में रानी गाइदिन्ल्यू के नाम से जानी गई। कुछ लोग उन्हें नगालैंड की लक्ष्मीबाई भी कहते हैं। नगा जमीन से ब्रिटिश सरकार को खदेड़ने के लिए उन्होंने स्वतंत्रता सेनानी 'जडोनांग' के साथ मिलकर काम शुरू किया। जब ब्रिटिश एजेंट्स ने जडोनांग को गिरफ्तार कर लिया, तो वह पास के गांव में अस्थायी छावनी डालकर अंग्रेजों के विरोध में उतर पड़ीं। रानी को गिरफ्तार करने के लिए अंग्रेजों ने अपनी पूरी ताकत झोंक दी।

Subrata Dhar

इसी क्रम में रानी के साथियों और ब्रिटिश सेना के बीच 1932 में खूनी मुठभेड़ हुई। अपनी रानी को ताकतवर ब्रिटिश साम्राज्य के चंगुल से बचाने में सात वीरों को प्राणों की आहुति देनी पड़ी। इस घटना के बाद रानी का संघर्ष और तेज हो गया। लेकिन, एक दिन तड़के अंग्रेज सैनिकों ने धावा बोलकर रानी को कैद कर लिया। कैप्टन मैकडॉनल्ड ने रानी का हाथ पकड़कर उन्हें खींचते हुए बाहर निकाला। रानी गाइदिन्ल्यू को यह सहन नहीं हुआ। उन्होंने अंग्रेज कैप्टन के हाथ को दांतों से काट डाला, जिससे उस अफसर की मौत हो गई। बाद में रानी को कोहिमा से इंफाल ले जाकर उन पर मुकदमा चलाया गया। ब्रिटिश सरकार के मणिपुर स्थित एजेंट हिगिंस ने रानी को ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध बगावत करने के आरोप में आजीवन कारावास की सजा सुनाई। 1947 में देश की आजादी के बाद उन्हें रिहाई मिली। पद्मभूषण रानी गाइदिन्ल्यू ने अगाह किया था कि विदेशी धर्म और विदेशी संस्कृति के आक्रमण से नगालैंड की पहचान को खतरा है।

संकलन : दिलीप लाल

ABC नैशनल टीवी पर ट्रंप-कमला आमने-सामने, उपराष्ट्रपति ने कई मुद्दों पर पूर्व राष्ट्रपति को घेरा

ट्रंप की बॉडी लैंग्वेज ने क्या राज़ खोले

ललित मोहन बंसल

अमेरिका में प्रेसिडेंशियल डिबेट हो और लोग उसे 'उत्सव' की तरह न देखें, ऐसा हो नहीं सकता। इस बार पहली डिबेट में ट्रंप से मात खाने के बाद राष्ट्रपति जो बाइडन के चुनाव से हटने और उपराष्ट्रपति कमला हैरिस के प्रत्याशी बनने से यह डिबेट और भी चर्चित हो गई थी।

7 करोड़ दर्शक | मंगलवार, 10 सितंबर को संपन्न इस डिबेट को रेकॉर्ड सात करोड़ लोगों ने देखा। कमला हैरिस इसके लिए पहले से तैयार थीं। उन्होंने ट्रंप को एक अभियुक्त के रूप में कटघरे में खड़ा करने में कोई चूक नहीं की। ट्रंप के तरफदार माने जाने वाले फॉक्स न्यूज को भी कहना पड़ा कि पूर्व राष्ट्रपति कसौटी पर खरे नहीं उतरे।

ट्रंप की बॉडी लैंग्वेज | असल में, कमला ने पहली बाजी तभी मार ली, जब दोनों प्रत्याशी मंच पर ABC की टीम के सामने आए। कमला ने आगे बढ़कर ट्रंप से हाथ मिलाया और अच्छी डिबेट के लिए आह्वान किया। तब ट्रंप की बॉडी लैंग्वेज बता रही थी कि वह असहज हैं।

ट्रंप को घेरा | डिबेट के दौरान ट्रंप ने प्रशासन की हरेक जिम्मेदारी के लिए बाइडन के साथ कमला को जोड़ने की कोशिश की। इस पर कमला ने याद दिलाया कि वह राष्ट्रपति नहीं, उपराष्ट्रपति हैं। आठ वर्ष पूर्व अमेरिका में हिलेरी क्लिंटन, ट्रंप से चुनाव हार गई थीं। कमला ने भरोसा दिलाया कि वह समय बीत चुका है। उन्होंने ट्रंप को गर्भपात, इमिग्रेशन, अपराध और बंदूक हिंसा, इन्फ्लेशन, बेरोजगारी और नैटो में अमेरिका की भूमिका जैसे मुद्दों पर घेरा।

रिश्तों की दुहाई | ट्रंप को ऐसी कई बातों पर अपने तर्क बेमतलब लगे होंगे। गर्भपात पर पूछे गए सवाल के जवाब में उन्हें अपना बयान बदलना पड़ा। उन्हें कहना पड़ा कि राष्ट्रीय स्तर पर गर्भपात बंद कराए जाने की उनकी कोई योजना नहीं है। ट्रंप इस्राइल-फलस्तीन और रूस-यूक्रेन युद्ध को चौबीस घंटे में खत्म करवाने के अपने दावे पर कोई फॉर्म्युला भी नहीं दे पाए। उन्होंने सिर्फ इतना कहा कि रूस, चीन और यूक्रेन के राष्ट्रपति से उनके अच्छे संबंध हैं।

'टाइम' ने क्या कहा | इसके विपरीत कमला ने अमेरिका के नैटो देशों से अच्छे संबंधों और इस्राइल-फलस्तीन युद्ध में तत्काल युद्धविराम और दो राष्ट्र के सिद्धांत पर जोर दिया। 'टाइम' पत्रिका की ताजा रिपोर्ट में दावा किया गया है कि कमला ने आशा के विपरीत ट्रंप को पीछे छोड़कर बड़ी कामयाबी हासिल की।

> **ट्रंप के खिलाफ बातें**
> - गर्भपात के मुद्दे पर फंसे डॉनल्ड ट्रंप
> - इमिग्रेशन पर कमला को नहीं घेर पाए
> - ट्रंप में नहीं थी पहले जैसी आक्रामकता

बदले की धमकी | राष्ट्रपति चुनाव के लिए वोटिंग 5 नवंबर को होगी। कमला हैरिस ने देशवासियों को एक बार फिर याद दिलाया कि आपराधिक मामलों में सुप्रीम कोर्ट से 'इम्यूनिटी' मिलने के बाद ट्रंप वाइट हाउस में फिर से लौटते हैं तो उन पर कोई अंकुश नहीं रह जाएगा। ट्रंप कई बार कह चुके हैं कि उनके विरुद्ध सभी आपराधिक मामले राजनीतिक दुश्मनी की वजह से लगाए गए हैं। वह डेमोक्रेट लीडर्स के साथ वैसा ही बर्ताव करने की धमकी भी दे चुके हैं।

क्या है आशंका | उन्होंने कहा कि फिर से राष्ट्रपति चुने जाने पर वह कैपिटल हिल में फसाद करने वालों में जो निर्दोष होंगे, उन्हें रिहा कर देंगे। इस मामले में 1200 लोगों के विरुद्ध आपराधिक मामले चल रहे हैं।

आर्थिक मुद्दा | डिबेट में ट्रंप ने अपनी संरक्षणवादी आर्थिक नीतियों पर खुद की पीठ थपथपाई। बाइडन सरकार पर आर्थिक स्थिति बिगाड़ने का आरोप लगाया। उन्होंने सरकार पर इमिग्रेंट्स के रूप में अपराधियों को शरण दिए जाने के भी आरोप लगाए। ट्रंप ने बेरोजगारी और इन्फ्लेशन को लेकर मध्य वर्ग की चिंताओं को सामने रखा। लेकिन कॉरपोरेट समुदाय और उच्च वर्ग की आय पर करों में कटौती का उनका प्रस्ताव रुचिकर नहीं माना गया।

7 राज्यों पर नजर | सात राज्यों में ट्रंप और कमला के बीच कड़ी टक्कर मानी जा रही है। इनमें तीन में कमला बढ़त बना चुकी हैं। इस डिबेट के तुरंत बाद अमेरिका की प्रख्यात गायिका टेलर स्विफ्ट ने कमला हैरिस का समर्थन कर दिया। उससे भी उनका पलड़ा कुछ भारी होने की उम्मीद की जा रही है।

आपराधिक मामले | डिबेट के दौरान ट्रंप ने यह भी कहा कि देश में लाखों अवैध इमिग्रेंट्स घुस आए हैं। वहीं, कमला ने कहा कि ट्रंप तो खुद न्यूयॉर्क 'हश मनी' केस में दोषी हैं। उन्होंने कहा कि एक ऐसा व्यक्ति जो खुद राष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक अपराधों, चुनाव में हस्तक्षेप और यौन आपराधिक मामलों में दोषी हो, उसके अपराधों के बारे में क्या कहेंगे? वहीं, ट्रंप ने कहा कि बाइडन-कमला के पिछले साढ़े तीन साल के कार्यकाल में अमेरिका ऐसी बुरी स्थिति में आ गया है कि वह तीसरे विश्व युद्ध को रोक पाने में असमर्थ है।

दिलचस्प चुनाव | राष्ट्रपति चुनाव के साथ ही कांग्रेस (संसद) के निचले 435 सदस्यीय सदन और सीनेट की एक तिहाई (34) सीटों के लिए भी वोटिंग होने वाली है। कुल मिलाकर, अमेरिका का राष्ट्रपति चुनाव बेहद दिलचस्प हो गया है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं और अमेरिका के लॉस ऐंजिलिस शहर में रहते हैं)

'स्त्री 2' से बॉलिवुड कल्चर में आया बदलाव

प्रशांत जैन

पिछले महीने रिलीज हुई फिल्म 'स्त्री 2' बॉक्स ऑफिस पर सफलता की इबारत को नए सिरे से लिख रही है। अपनी रिलीज के 18वें दिन 500 करोड़ रुपये से ज्यादा कमाई करके प्रतिष्ठित 500 करोड़ क्लब में एंट्री करने वाली यह छठी हिंदी फिल्म बन गई है। 'स्त्री 2' की सफलता को इतना खास इसलिए माना जा रहा, क्योंकि स्टारकास्ट में कोई सुपर सितारा मौजूद नहीं है।

कई रेकॉर्ड टूटे | साल 2017 में पहली बार तेलुगू से हिंदी में डब होकर रिलीज हुई 'बाहुबली 2' ने बॉक्स ऑफिस पर 500 करोड़ रुपये की कमाई की थी। तब किसी ने सोचा भी नहीं था कि यह रेकॉर्ड कोई हिंदी फिल्म तोड़ पाएगी। लेकिन, 2023 में आई चार फिल्मों- शाहरुख खान की 'जवान' और 'पठान', सनी देओल की 'गदर 2' और रणबीर कपूर की 'एनिमल' ने न सिर्फ 500 करोड़ क्लब में एंट्री की, बल्कि बाहुबली 2 का रेकॉर्ड भी तोड़ दिया।

स्टारडम का दम | इस विशिष्ट क्लब में शामिल फिल्मों के लीड सितारों- शाहरुख खान, सनी देओल, रणबीर कपूर और प्रभास की गिनती सुपरस्टार्स में होती है। ये सभी पहले भी कई दफा अपने स्टारडम से टिकट खिड़की पर भीड़ जुटाकर मोटी कमाई कर चुके हैं।

नया रास्ता मिला | 'स्त्री 2' की लीड जोड़ी राजकुमार राव और श्रद्धा कपूर की गिनती सुपरसितारों में कतई नहीं होती। और तो और, इन दोनों की आने वाले दिनों में रिलीज होने वाली फिल्मों के भी ऐसा कोई कमाल करने की संभावना नहीं है। यही वजह है कि फिल्मी दुनिया के जानकार 'स्त्री 2' की जबरदस्त सफलता को नए फॉर्म्युले की तरह भी देख रहे हैं।

हॉरर कॉमेडी | बीते साल हॉरर कॉमेडी जॉनर में 'भूल भुलैया 2' आई थी। इसके लीड एक्टर थे कार्तिक आर्यन। यह फिल्म भी सफल रही थी। अब इसी जॉनर की 'स्त्री 2' ने इतिहास रच दिया है। इसी का असर है कि इस जॉनर की कई फिल्में घोषित हो चुकी हैं। साथ ही, कई फिल्मों की प्लानिंग चल रही है।

स्त्री 2 की चुनौती | दरअसल, हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में इससे पहले भी बधाई हो, बरेली की बर्फी, भूल भुलैया 2 और स्त्री जैसी फिल्में सिर्फ अपने कॉन्टेंट के दम पर बॉक्स ऑफिस पर सफलता हासिल कर चुकी हैं। लेकिन सिर्फ अच्छे कॉन्टेंट के दम पर फिल्म की जोरदार सफलता अब तक उसकी 100 करोड़ क्लब में एंट्री तक सीमित थी। 'स्त्री 2' ने जोरदार कॉन्टेंट के दम पर न सिर्फ 500 करोड़ क्लब में धमाकेदार एंट्री की, बल्कि बॉलिवुड के सुपर सितारों को भी उनके कमाई के रेकॉर्ड तहस-नहस करके तगड़ी चुनौती दे दी है।

कॉमन रूम

कॉन्टेंट की चर्चा | 'स्त्री 2' की सफलता फिल्म इंडस्ट्री में चर्चा का विषय बन गई है। दरअसल, अभी तक किसी फिल्म के ब्लॉकबस्टर होने पर उसकी सफलता का क्रेडिट किसी सितारे के खाते में जाता था। पहली बार ऐसा हो रहा है, जब फिल्म के सुपरहिट होने की वजह उसके दमदार कॉन्टेंट और सीधे दर्शकों से जुड़ाव को माना जा रहा है।

दर्शकों का खयाल | मतलब साफ है कि अब फिल्म की सफलता के लिए सुपर सितारे से ज्यादा उसका मजबूत कॉन्टेंट जरूरी है। 'स्त्री 2' की सफलता के बाद माना जा रहा है कि तमाम फिल्म निर्माता अपनी फिल्मों में दर्शकों की बदली पसंद के मुताबिक बदलाव कर रहे हैं।

फीका साल | 2024 को बॉलिवुड फिल्मों के लिहाज से काफी कमजोर माना जा रहा था। इस साल किसी सुपरस्टार की फिल्म रिलीज नहीं हो रही है। ऐसे में, किसी को बहुत बड़ी सफलता की उम्मीद नहीं थी।

600 करोड़ पर नजर | कमाई के मामले में फिलहाल 'स्त्री 2' से आगे सिर्फ शाहरुख खान की 'जवान' है, जिसने बीते साल 643 करोड़ रुपये की कमाई की थी। 'स्त्री 2' जल्द ही 600 करोड़ क्लब में भी दस्तक दे सकती है। इस उम्मीद की बड़ी वजह यह है कि 'स्त्री 2' की रिलीज के करीब डेढ़ महीने बाद तक कोई दूसरी बड़े बजट की फिल्म नहीं आ रही है। इसका फायदा 'स्त्री 2' को मिल सकता है। अगर बॉक्स ऑफिस के आंकड़ों में राजकुमार बॉलिवुड के किंग को पीछे छोड़ देते हैं, तो यह भी एक अलग कहानी होगी।

THE SPEAKING TREE

और पढ़ने के लिए देखें

hindi.speakingtree.in

कपड़ों और चेहरे की तरह अपनी वाणी भी सहेज लें

चेतनादित्य आलोक

मनुष्य की असली पहचान उसकी कद-काठी और पहनावे से नहीं, उसके व्यवहार से होती है। और व्यवहार में वाणी का बड़ा महत्व है। वेश-भूषा और कद-काठी बाहरी पहचान हैं, इसलिए ये मस्तिष्क में अंकित हो जाती हैं। वहीं, वाणी और व्यवहार से बनी पहचान अमिट हो जाती है, क्योंकि यह मन और हृदय पर अंकित होती है। व्यक्ति का आकार, रंग-रूप समय और परिस्थितियों के साथ बदल जाते हैं। उसे पहचानना मुश्किल हो जाता है, लेकिन वाणी से बनने वाली पहचान ही व्यक्ति की असली पहचान के रूप में मन में स्थिर होती है। कई बार बोलने का वह अंदाज उस व्यक्ति की पहचान बन जाता है।

वाणी में किसी का व्यक्तित्व झलकता है। जिस प्रकार विभिन्न संगीत वाद्ययंत्रों की पहचान उनके स्वरों से होती है, वैसे ही विभिन्न व्यक्तियों की पहचान उनकी वाणी से होती है। यही कारण है कि हर व्यक्ति की वाणी दूसरों से अलग और विशिष्ट होती है। हर किसी के बोलने का अंदाज और वाणी में छिपी भावनाएं दूसरों से भिन्न होती हैं। इसलिए अपनी इस पहचान को संवारकर रखना चाहिए।

रंग-रूप और कद-काठी दूसरों के लिए महत्वपूर्ण नहीं होते, लेकिन वाणी से दूसरों को तृप्ति मिलती है। कोई किसी को न तो अपना रंग-रूप दे सकता है, न अपनी आकर्षक कद-काठी, लेकिन अपनी मीठी बोली से तृप्ति की बारिश में नहला सकता है। वाणी अपना प्रभाव अवश्य छोड़ती है। अच्छे विचारों को पढ़ने और सुनने से लोगों को प्रेरणा मिलती है और उनका जीवन बदल जाता है, जबकि बुरे और गंदे विचारों से जीवन नकारात्मकताओं से भर जाता है।

वाणी का प्रभाव आसपास के वातावरण और संपूर्ण सृष्टि पर भी पड़ता है। विज्ञान ने भी इस बात पर शोध किया है कि वाणी में निहित शब्द कभी नष्ट नहीं होते। वे वायुमंडल में सदा के लिए गुंजायमान रहते हैं और समानधर्मी व्यक्तियों के मन से टकराकर प्रतिक्रिया करते हैं। जो रिश्ते और भरोसे का एक वातावरण बनाता है। हमारी वाणी में अद्भुत शक्तियां होती हैं और इसमें बेशुमार सामर्थ्य छिपा होता है। यही कारण है कि वाणी को परमात्मा की अनमोल देन माना जाता है। लेकिन अफसोस की बात है कि आजकल लोग इसका दुरुपयोग कर इसे व्यर्थ में ही बर्बाद कर देते हैं। इसके कारण उन्हें पाप, ताप, शाप, कष्ट, दुख और अपमान सहन करना पड़ता है। यह वैसा ही है जैसे पावर हाउस में बनने वाली बिजली का दो तिहाई हिस्सा बेकार चला जाता है, क्योंकि अभी तक ऐसा यंत्र नहीं बना है जो पूरी बिजली को संरक्षित कर सके।

इसलिए, क्यों न हम अपनी वाणी को एक परफेक्टली ट्यून किए गए वाद्य यंत्र की तरह सीखें और बुरी, गंदी और कड़वी वाणी को मधुर और कर्णप्रिय बना लें। जब तक हम इसे सीख नहीं लेते, तब तक वाणी की यह संपदा बेकार हो जाएगी। वाणी की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए हमें उतना ध्यान देना चाहिए, जितना हम अपने कपड़ों और बाहरी लुक पर देते हैं। जैसे घर से बाहर निकलते समय हम बालों को संवारते हैं और जूते पॉलिश करते हैं, वैसे ही वाणी को भी संवारना चाहिए, ताकि कभी पछताना न पड़े।

जिस तरह से घाटी आतंक से मुक्त हुई जम्मू में भी आतंकवाद का ख़ात्मा होगा

जम्मू-कश्मीर के चुनावों पर देश-दुनिया की नजरें टिकी हैं। चुनाव में एक बड़ा मुद्दा है जम्मू-कश्मीर का राज्य का दर्जा। इस बीच, वहां रैडिकल पॉलिटिक्स उभरने की भी चर्चा है। जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल **मनोज सिन्हा** से **नरेंद्र नाथ** ने इन तमाम पहलुओं पर बातचीत की है। प्रस्तुत हैं इस बातचीत के मुख्य अंश :

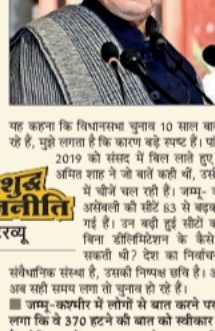

■ आप जब जम्मू-कश्मीर आए, तब कई तरह की चुनौतियां थीं। अब यहां विधानसभा चुनाव हो रहे हैं। आप अपने कार्यकाल को किस तरह आंकते हैं?

केंद्र में नरेंद्र मोदी की अगुआई वाली सरकार ने जम्मू-कश्मीर के लिए जो ऐतिहासिक निर्णय लिए, अनुच्छेद 370 व 35 A हटाया, उसके बाद यहां विकास का नया सफर शुरू हुआ। महिलाओं को यहां पहले अधिकार नहीं थे, लेकिन उन्हें भी देश के बाकी हिस्सों की तरह तमाम अधिकार मिले। अति पिछड़ा वर्ग हो या सफाई कर्मचारियों का तबका या फिर शैक्षणिक रूप से पिछड़े वर्ग के लोग, इन्हें आरक्षण का लाभ नहीं मिलता था। उन्हें यह सुविधा मिली। बढ़ई सहित कई वंचित भाइयों को ST का दर्जा मिला। पिछले पांच वर्षों में जम्मू-कश्मीर में यकीनन विकास का नया युग शुरू हुआ है।

विशुद्ध राजनीति

इंटरव्यू

■ कई लोगों का मानना है कि जमीन पर काम तो हुआ है, टूरिस्ट भी बढ़े हैं, कानून व्यवस्था भी बेहतर हुई है लेकिन लोकल लेवल पर भागीदारी उतनी नहीं हुई। आप इस पर क्या कहेंगे?

लोकतंत्र की खासियत है कि इसमें आलोचनाएं होती हैं। इसे मैं अच्छी बात मानता हूं। यहां देर से पंचायती राज सिस्टम लागू हुआ, लेकिन देश के किसी भी दूसरे राज्य से बेहतर। 32 हजार से ज्यादा चुने हुए प्रतिनिधि यहां के विकास में भागीदार हैं। ये सारे लोकल ही तो हैं। यह कहना कि विधानसभा चुनाव 10 साल बाद अब हो रहे हैं, मुझे लगता है कि कारण बड़े स्पष्ट हैं। पांच अगस्त 2019 को संसद में बिल लाते हुए गृह मंत्री अमित शाह ने जो बातें कही थीं, उसी सीक्वेंस में चीजें चल रही हैं। जम्मू- कश्मीर में असेंबली की सीटें 83 से बढ़कर 90 हो गई हैं। उन बढ़ी हुई सीटों की बाउंड्री बिना डीलिमिटेशन के कैसे तय हो सकती थी? देश का निर्वाचन आयोग संवैधानिक संस्था है, उसकी निष्पक्ष छवि है। आयोग को अब सही समय लगा तो चुनाव हो रहे हैं।

■ जम्मू-कश्मीर में लोगों से बात करने पर अंदाजा लगा कि वे 370 हटने की बात को स्वीकार कर चुके हैं, लेकिन उन्हें राज्य का दर्जा वापस चाहिए। क्या उन्हें मिलेगा?

गृह मंत्री संसद में यह कह चुके हैं, हाउस में कही गई बात का महत्व होता है। पीएम नरेंद्र मोदी ने भी राष्ट्र के नाम संबोधन में जम्मू-कश्मीर के बारे में कहा कि उसे राज्य का दर्जा फिर से मिलेगा। इसीलिए इस बात को लेकर हाय तौबा मचाने की जरूरत नहीं। सही समय पर राज्य का दर्जा जरूर मिलेगा।

■ लोकसभा चुनाव में हमने देखा कि लोगों की भागीदारी बढ़ी, पर कहीं-कहीं रैडिकल पॉलिटिक्स उभरी। कितनी चिंता की बात है?

रैडिकल पॉलिटिक्स को लेकर चिंता जम्मू-कश्मीर तक सीमित नहीं है। देश के बाकी हिस्सों से भी कुछ इस तरह की खबरें आई हैं। अभी तक चुनाव में किसी को रोकने का कानून नहीं है। इस बारे में दलों को मंथन करना चाहिए।

■ चुनाव के लिए पूरी तैयारी हो चुकी है?

उपराज्यपाल के नाते मैं यह सुनिश्चित करवाऊंगा कि चुनाव में संवैधानिक व्यवस्था का पालन हो, स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव हो। पिछले लोकसभा चुनाव में विरोधियों ने भी शिकायत नहीं की। इस बार भी निष्पक्ष चुनाव होगा।

■ चुनाव के बाद जो भी नई सरकार गठित होगी, उसके लिए आपका क्या संदेश होगा?

जो भी चुनी हुई सरकार हो वह शांति, समृद्धि और विकास का अजेंडा आगे बढ़ाए। अगर ऐसा रहा तो उसे हमारा पूरा समर्थन होगा।

■ पिछले कुछ बरसों में घाटी में आतंकी हमले कम हुए हैं, लेकिन जम्मू इलाके में बढ़ गए हैं...।

आतंकी घटनाएं कम नहीं हुई हैं, पूरी तरह समाप्त हो गई हैं, खासकर घाटी में। अब पाकिस्तान के इशारे पर बंद नहीं होता। 34 साल बाद सिनेमाघर शुरू हुए। मुहर्रम का जुलूस शुरू हुआ। G20 और लोकसभा चुनाव में बड़े मतदान के बाद पड़ोसी निराश है। यही कारण है कि पड़ोसी ने निराशा में विदेशी आतंकियों की घुसपैठ जम्मू रीजन में जरूर करवाई है, लेकिन वहां भी हम नई रणनीति से काम कर रहे हैं। हमारे बहादुर सुरक्षा बल कुछ दिनों में वहां से भी आतंकवाद का नामोनिशान मिटा देंगे।

रीडर्स मेल

www.edit.nbt.in

■ बगावत की नौबत

12 सितंबर के लेख 'हरियाणा में अपनों ने ही बढ़ा दी है मुश्किल' में हरियाणा BJP के भीतर गहराते असंतोष और बगावत को उजागर किया गया है। पार्टी ने पिछले चुनाव में सफल रहे कई विधायकों के टिकट काटे, जिनमें चार मंत्री भी शामिल हैं। नए चेहरों को तरजीह देने से पार्टी में बगावत की स्थिति उत्पन्न हो गई है। चुनावी राजनीति में ऐसी स्थिति आम तौर पर पार्टी के अंदर आपसी फूट और गुटबाजी का संकेत होती है। कई बार चुनाव परिणामों पर भी इसका असर पड़ता है। BJP नेतृत्व के लिए बगावत को यथासंभव रोकना और उसके असर को कम से कम करना एक बड़ी चुनौती है।

अनुज चौहान, ईमेल से

■ RSS का दांव

यह पत्र 10 सितंबर के लेख 'जाति जनगणना के पक्ष में क्यों है RSS' से संबंधित है। मोदी सरकार का तीसरा कार्यकाल बिना किसी अड़चन के चल रहा है। इसमें रोड़े अटकाने के लिए विपक्ष तरह-तरह के मुद्दे उछाल रहा है। जाति जनगणना हो भी जाती है तो गरीबों को कुछ मिलने वाला नहीं है। यह सारी कवायद सिर्फ वोट की राजनीति मात्र है। ऐसे में RSS का जातिगत जनगणना से सहमत होना अहम है। इससे विपक्ष की पूरी रणनीति बेकार हो जाएगी।

विभूति बुपक्या, ईमेल से

■ सच सामने आया

9 सितंबर का संपादकीय 'नीयत का सवाल' पढ़ा। आखिरकार पाकिस्तानी आर्मी चीफ ने स्वीकार कर ही लिया कि करगिल युद्ध में पाकिस्तानी सेना की भूमिका थी। हालांकि पाकिस्तान की ओर से इसके संकेत समय-समय पर दिए जाते रहे हैं। जनरल परवेज मुशर्रफ अपनी किताब में स्वीकार कर चुके हैं कि इस युद्ध के चलते ही नवाज शरीफ और उनके संबंधों में खटास आई थी। 2010 में पाकिस्तानी सेना ने अपनी आधिकारिक वेबसाइट पर करगिल युद्ध में मारे गए अपने सैनिकों के नामों का उल्लेख भी कर ही दिया था।

राजेश जैन, ईमेल से

nbtedit@timesofindia.com पर अपनी राय नाम-पते के साथ मेल करें।

अंतिम पत्र

स्टीव स्मिथ बोले, विराट कोहली सोच में ऑस्ट्रेलियाई हैं - एक खबर - पर दिल तो हिंदुस्तानी है, सौ टका!

प्रियंका सक्सेना

7,489 करोड़ रुपये से अधिक का नुकसान उठाना पड़ा है देश में लोगों को साइबर धोखाधड़ी के कारण पिछले एक साल के दौरान। इस साल के आरंभिक चार माह में ही लगभग आठ लाख साइबर फ्राड के मामले सामने आए हैं।

संजय श्रीवास्तव
वरिष्ठ पत्रकार

साइबर कमांडो

डिजिटल धोखाधड़ी से मुक्ति की उम्मीद

स्मार्टफोन ने जहां एक ओर हमारे रोजमर्रा के जीवन को आसान बनाया है, वहीं पिछले कुछ समय से इसके माध्यम से ठगी होने से लोगों की परेशानी भी बढ़ गई है। साइबर फ्राड के मामलों में लगभग एक साल से 'डिजिटल अरेस्ट' के एक नए तरीके ने लोगों की मुश्किलें बढ़ा दी हैं। आम लोगों को इन मुश्किलों से बचाने के उद्देश्य से केंद्र सरकार ने इसी सप्ताह 'साइबर कमांडो' के गठन की घोषणा की है। यह कदम साइबर फ्राड से निपटने में सक्षम साबित होगा। उम्मीद की जा रही है कि इस प्रयास के बेहतर परिणाम सामने आ सकते हैं

प्रतीकात्मक

नई तकनीकों के प्रयोग से पिछले दो दशक से डिजिटल लेनदेन का उपयोग निरंतर बढ़ रहा है। स्मार्टफोन के आने के बाद से एक दशक से तो इसका उपयोग सामान्य हो गया है। लेकिन इसका एक साइड इफेक्ट यह हुआ है कि वित्तीय धोखाधड़ी का खतरा भी सामान्य हो गया है। साइबर धोखाधड़ी के कारण बीते महज एक साल के दौरान देश के लोगों ने 7,489 करोड़ रुपये से ज्यादा का नुकसान उठाया। इस साल शुरुआती चार महीने में ही लगभग आठ लाख साइबर फ्राड के मामले हुए, जिसमें लोगों के 1750 करोड़ रुपये ठग लिए गए। साइबर ठगी का एक नया तरीका सालभर पहले सामने आया और सरकार के तमाम प्रयासों के बावजूद वह काबू में नहीं आ रहा है, बल्कि बढ़ता ही जा रहा है। यह खतरनाक और चिंताजनक साइबर खतरा है- डिजिटल अरेस्ट।

डिजिटल अरेस्ट का मतलब है बिल्कुल वास्तविक लगने वाले ईडी, सीबीआइ, पुलिस अधिकारी बनकर अथवा उनके असली दिखते, परंतु बनावटी थाने, कार्यालय से फोन करके किसी को झूठ बोलकर भयग्रस्त कर देना। इस तरह के साइबर अपराधी लोगों को फोन करके उनके किसी करीबी के दुर्घटनाग्रस्त होने, तस्करी या ड्रग के मामले में फंसने या फिर गिरफ्तार होने की बात कहकर डरा देते हैं और पुलिस, ईडी आदि की गिरफ्तारी का भय दिखाकर घर से निकलने नहीं देते और भयादोहन कर धन वसूलते हैं। लोग घर में कैदी बन जाते हैं और फिरौती के रूप में भारी रकम चुकाते हैं और बाद में पता चलता है कि वे ठगी के शिकार हुए।

डिजिटल अरेस्ट का पहला मामला पिछले साल दिसंबर में दर्ज किया गया था, जहां उत्तर प्रदेश के एक व्यक्ति को मनगढ़ंत मनी-लांड्रिंग मामले में फंसाया गया। इसके बाद तो इस तरह की साइबर ठगी में व्यापक तेजी आ गई। इसमें जो शिकार बनते जा रहे हैं उनमें डाक्टर, साफ्टवेयर इंजीनियर, सेना के बड़े अधिकारी, आइआइटी प्रोफेसर जैसे ढेरों उच्च शिक्षित एवं जागरूक लोग शामिल हैं। साइबर अपराधियों ने लखनऊ की एक न्यूरोलाजिस्ट को सात दिन डिजिटल अरेस्ट रखकर उसके सात खातों से लगभग तीन करोड़ रुपये का लेन देन किया तो एक अवकाश प्राप्त मेजर जनरल पांच दिन 'डिजिटल अरेस्ट' बने रहे, दो करोड़ की फिरौती के बाद उन्हें पता चला कि ठगे गए। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र, हरियाणा समेत देश के तमाम राज्यों में ऐसे मामले आए दिन सामने आ रहे हैं।

संगठित आर्थिक अपराध : गृह मंत्रालय के अनुसार यह एक संगठित आनलाइन आर्थिक अपराध है और संभवतः इसे सीमा पार दुबई, पाकिस्तान में बैठे अपराधियों द्वारा चलाया जा रहा है। हालांकि अपने देश में भी इसके अपराधी पकड़े गए हैं। डेटा और सिस्टम में अनधिकृत घुसपैठ, डेटा चोरी, उसमें मनोवांछित या शरारतपूर्ण बदलाव, घोटाले या व्यवधान, इसके जरिए स्कैम वगैरह के काफी मामले पहले से ही आ रहे थे, इधर कुछ महीनों से एनसीबी, सीबीआइ, आरबीआइ और कानून प्रवर्तन अधिकारी के साथ साथ प्रदेश पुलिस के जवान बनकर लोगों को धमकाने और डिजिटल अरेस्ट के जरिए ठगने के भी बहुतेरे मामले सामने आने के बाद गृह मंत्रालय ने साइबर अरेस्ट और ब्लैकमेलिंग को लेकर चेतावनी जारी की। यह एक लचर कदम था जो समस्या की गंभीरता के अनुकूल नहीं था।

गृह मंत्रालय की इस कार्रवाई के बावजूद ब्लैकमेल और डिजिटल अरेस्ट के मामले तेजी बढ़ने लगे तो उसने हजार से ज्यादा स्काइप आइडी को ब्लाक किया जिसके जरिये अपराधी सरकारी अफसर बनकर ठगी करते थे। साथ ही सरकार ने टेलिकाम कंपनियों को निर्देश देकर 28 से अधिक सिम को ब्लाक और लगभग दो लाख सिम कार्ड्स को बंद या रि-वेरीफाई करने की कार्रवाई की। लेकिन बेहतर होने के बावजूद ये कदम नाकाफी साबित हुए। अब गृह मंत्रालय बढ़ते डिजिटल अरेस्ट और आनलाइन फ्राड के मामलों की पहचान, जांच और उनसे निपटने के लिए दूसरे मंत्रालयों, उनसे संबद्ध एजेंसियों, आरबीआइ और दूसरे संगठनों के साथ मिलकर काम कर रहा है जो फिलहाल सही दिशा लग रही है।

मंत्रालय इसके लिए राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के संबंधित अधिकारियों को तकनीकी सहायता दे रहा है। भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र की स्थापना इसीलिए हुई थी कि वह प्रमुख बैंकों, वित्तीय मध्यस्थों, भुगतान एग्रीगेटर्स, दूरसंचार सेवा प्रदाताओं, आइटी मध्यस्थों और राज्यों तथा केंद्र शासित प्रदेशों की कानून प्रवर्तन एजेंसियों की क्षमताओं को बढ़ाए, साथ ही साइबर अपराध से निपटने वाले विभिन्न हितधारकों के बीच समन्वय में सुधार लाए। ये हितधारक मिलकर काम करेंगे तो फर्क साफ दिखेगा। 'साइबर कमांडो' कार्यक्रम देश में साइबर सुरक्षा की दिशा में एक समझदारी भरा कदम है। राज्यों, केंद्र शासित प्रदेशों और केंद्रीय पुलिस संगठनों से चुनिंदा जवानों को लेकर उन्हें आइआइटी कानपुर, मद्रास, कोट्टायम और रायपुर जैसे संस्थान द्वारा कठोर प्रशिक्षण प्रदान करने के बाद इनकी विशेष शाखा स्थापित कर साइबर अरेस्ट जैसे अपराधों के खतरों का मुकाबला करने के लिए प्रशिक्षित 'साइबर कमांडो' का उपयोग करना अच्छी योजना है। डिजिटल फोरेंसिक से लेकर साइबर सुरक्षा के उपायों के बारे में सब कुछ जानने वाले ये साइबर कमांडो जो आधुनिक साइबर हमलों की जटिलताओं से निपटने और भारत के डिजिटल बुनियादी ढांचे को सुरक्षित करने के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित होंगे, वे डिजिटल स्पेस को सुरक्षित करने में राज्यों और केंद्रीय एजेंसियों की बेहतर सहायता करेंगे।

इस पहल से समन्वय प्लेटफार्म का साझा मंच डिजिटल अरेस्ट जैसे साइबर अपराध से संबंधित सभी सूचनाओं का व्यापक आंकड़ा केंद्र बन जाएगा, जिससे संबंधित राज्य सरकारों को इन जानकारियों को साझा करना सुगम हो जाएगा। इससे अपराधों के मानचित्रण और विश्लेषण के लिए एक मजबूत मंच बनेगा जो इसकी जांच के तरीके में क्रांति ला सकता है। जैसे-जैसे हमारा देश डिजिटल क्रांति को अपनाता जाएगा, वैसे-वैसे अपने साइबर बुनियादी ढांचे की सुरक्षा को मजबूत बनाने के जरूरत भी बढ़ती जाएगी। चूंकि साइबर अपराधों की संख्या, विस्तार और उसकी नुकसान पहुंचाने की क्षमता बढ़ती जा रही है, ऐसे में सरकार द्वारा साइबर संसार में देश और देशवासियों की सुरक्षा को मजबूत करने के लिए ऐसे दूरदर्शी और सुविचारित कदम उठाने और अपने डिजिटल शस्त्रागार को नए हथियारों से लैस करना बहुत आवश्यक है, ताकि सरकारी और निजी दोनों क्षेत्र साइबर अपराधियों से सुरक्षित हैं, यह सुनिश्चित हो। (ईआरसी)

नई पीढ़ी अधिक हो रही डिजिटल ठगी का शिकार

राजेंद्र शर्मा

सामान्य लोगों की तुलना में नई पीढ़ी ठगी का शिकार अधिक हो रही है। वैश्विक आंकड़ों के अनुसार, आम आदमी की तुलना में जेन जी के युवा तीन गुना अधिक फ्राड के शिकार हो रहे हैं। इसका सबसे बड़ा कारण है इंटरनेट मीडिया पर सर्वाधिक समय जेन जी की पीढ़ी ही दे रही है। वस्तुतः 1996 से 2010 के बीच जन्म लेने वाले युवाओं को जेन जी के नाम से पुकारा जाने लगा है। रोजमर्रा के जीवन में इंटरनेट पर निर्भरता इस पीढ़ी के लोगों में अपेक्षाकृत बहुत अधिक है। रही सही कसर कोरोना के कारण आनलाइन पढ़ाई और 'वर्क फ्राम होम' ने पूरा कर दिया। इससे लोगों को स्मार्टफोन की लत इस तरह से लग गई कि लोग 'बिंज वाचिंग' का शिकार होते जा रहे हैं। वस्तुतः 'बिंज वाचिंग' पहली बार 2003 में चलन में आया, परंतु यह 2013 में अधिक लोकप्रिय हुआ। कोरोना काल में लाकडाउन के कालखंड में 'बिंज वाचिंग' और भी अधिक पांव पसारने में सफल रही। यह एक नए तरह का नशा हो गया है और इसमें लोग इंटरनेट मीडिया से जुड़े किसी भी प्लेटफार्म पर आने वाले लुभावने विज्ञापनों सहित विभिन्न प्रकार के आफर्स के चक्कर में आ जाते हैं।

स्मार्टफोन से खरीदारी का आदेश देना नए जमाने का नए तरह का नशा है। ड्रग्स की भाषा में बात करें तो यह डिजिटल ड्रग्स है और किसी अन्य नशे से इसका नशा किसी भी तरह से कमतर नहीं है। मेडिकल की भाषा में कहा जाए तो यह एक तरह की वो बीमारी है जिसे मनोचिकित्सक साइकोसोमैटिक डिसआर्डर कहने लगे हैं।

'डेलाइट' की एक रिपोर्ट में बताया गया है कि जेन जी के युवा अन्य की तुलना में तीन गुणा ज्यादा जालसाजों के शिकार इसलिए हो रहे हैं, क्योंकि आज की पीढ़ी मोल भाव पर बहुत कम विश्वास करती है। यह पीढ़ी आसानी से आनलाइन आफर/ प्रपोजल्स आदि के जाल में फंस जाती है और किसी भी खरीद या निवेश पर पर्याप्त अध्ययन किए बिना या जानकारी जुटाए बिना, उसमें रकम लगा देती है। वैसे इसका एक कारण उनके पास समयाभाव को भी समझा जा रहा है। यही कारण है कि डिजिटल दुनिया के जालसाज इंटरनेट मीडिया पर बड़े ही आकर्षक तरीके से अपने प्रस्ताव या अपने उत्पाद को प्रदर्शित करते हैं जिससे व्यक्ति उसके जाल में फंस जाता है। यहां तक कि साइबर ठगी का शिकार होने के साथ ही कई बार तो वह व्यक्ति अपनी जमा पूंजी से भी हाथ धो बैठता है। ऐसे में आज की युवा पीढ़ी को इंटरनेट मीडिया प्लेटफार्म्स पर आने वाले प्रस्तावों पर गंभीरता से सोच विचार कर ही निर्णय करना चाहिए। यह सही है कि इंटरनेट मीडिया के बहुत सारे लाभ सामने आए हैं, परंतु इसके साइड इफेक्ट्स को भी समझना होगा। सभी प्रकार के आनलाइन आफर सही नहीं होते, ऐसे में सही आफर और गलत आफर के अंतर को समझने की दृष्टि विकसित करनी होगी, फैक्ट चेक करना होगा, तभी जाकर स्वयं को ठगे जाने से बचाया जा सकता है। **(लेखक सामाजिक मामलों के जानकार हैं)**

खरी-खरी

बुआजी हिंदी से मुलाकात

आत्माराम भाटी

हर साल की भांति इस साल भी 14 सितंबर को बुआजी हिंदी को याद करने का दिवस है। अब आप सोच रहे होंगे कि हिंदी को बुआजी कैसे लिख रहा हूं। बात ऐसी है कि देश में जो रिश्तों के शब्द हैं उनके कापीराइट पहले से हैं। इसलिए हिंदी से रिश्तेदारी के उद्देश्य से यही शब्द भटकता हुआ मिला।

हमारे देश में 'माता' शब्द का कापीराइट हमारी धार्मिक आस्था की प्रतीक देवियों के पास है या फिर गाय के पास है। 'पिता' शब्द गांधी जी के पास है। 'चाचा' शब्द नेहरू जी के लिए रजिस्टर्ड है। 'बहन' शब्द बंगाल और उत्तर प्रदेश में राजनीति की बड़ी नेत्रियों की शोभा बढ़ा रहा है। 'भाई' शब्द का ठेका तो किन लोगों के पास है आपको पता ही है। चूंकि हिंदी स्त्रीलिंग है, इसलिए बतौर रिश्तेदारी के लिए 'बुआजी' शब्द ही खाली मिला।

इस बार बुआजी हिंदी को जन्म दिवस की बधाई देने का कीड़ा मेरे दिमाग में कुलबुला रहा था। लेकिन समस्या यह थी कि बुआजी मिलेंगी कहां पर। फिर ध्यान आया कि केंद्र सरकार के किसी कार्यालय में मिल जाएंगी, क्योंकि वहां तो हिंदी दिवस के नाम पर पाक्षिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। मैं चल पड़ा केंद्र सरकार के कार्यालयों की ओर। वहां जानकारी मिली कि हिंदी दिवस मनाने के लिए मिश्रा जी कार्यक्रम प्रभारी हैं। मैंने नमस्कार किया। बोले, 'कहिए मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं।'

मैंने कहा, 'कल हिंदी दिवस है। मैं उसे जन्म दिवस की बधाई देने के लिए तलाश रहा हूं। आपके यहां 13 दिनों से कार्यक्रम हो रहे हैं, इसलिए मैंने सोचा कि हो सकता है आपके यहां अपने सम्मान में होने वाले कार्यक्रम में आई हो।'

मिश्रा जी ने कहा, 'भाई साहब, आप भी बढ़िया मजाक कर लेते हैं।' फिर धीरे से अपने पास बैठे दूसरे बाबू से कहा, 'लगता है कि यह आदमी दिमाग से खिसका हुआ है।' फिर मेरी ओर देखते हुए कहा, 'भाई साहब, यहां कोई हिंदी-बिंदी नहीं आई है। प्लीज आप यहां से जाइये, हमारा माथा मत खाइये।'

आप लोग ही बताइये कि हमारी हिंदी बुआजी मिलेंगी कहां पर...

पोस्ट

वेरिफिकेशन की प्रक्रिया शुरू होते ही देहरादून के पलटन बाजार से रेहड़ी वालों का हुजूम गायब हो गया। इसका क्या मतलब है? अतिक्रमण, अवैध कब्जा, गैरकानूनी निर्माण और वेरिफिकेशन के बीच सीधा रिश्ता है?

सुमंत@sumantkabir

अभी तक भारत के मुख्य न्यायाधीश को उनके कुछ फैसलों के चलते जो लोग लोकतंत्र का प्रहरी बता रहे थे, वे ही गणेश पूजा और आरती के बाद से उन पर आज सवाल उठा रहे हैं। क्या तमाशा है भाई यह।

अमिताभ अग्निहोत्री@Aamitabh2

खरगे जी बोले हैं कि यदि कांग्रेस 20 सीटें और जीत जाती तो भाजपा के ज्यादातर नेता इस समय जेल में होते। मुझे खरगे जी की इस बात पर कोई संदेह नहीं।

मैकटू@iMac_too

बाबूजी कहते थे, 'मन का हो तो अच्छा, न हो तो ज्यादा अच्छा।' ज्यादा अच्छा? जी, क्योंकि फिर वह ईश्वर के मन का होता है और ईश्वर हमेशा आपका अच्छा ही करता है।

अमिताभ बच्चन@SrBachchan

शशि शेखर
संपादकीय प्रभारी, रांची

झारखंड डायरी

कहीं सिरदर्द न बन जाएं चुनावी रेवड़ियां

झारखंड इन दिनों घोषणाओं के घोड़े पर सवार होकर सरपट दौड़ रहा है। हर दिन नई-नई घोषणाएं की जा रही हैं। वैसे विधानसभा चुनाव की अभी तिथि घोषित नहीं हुई है, लेकिन सत्ता पक्ष से लेकर विपक्ष तक सभी चुनावी मूड में हैं और लगातार अपने तरकश से नए-नए धारदार तीर निकालकर एक-दूसरे पर प्रहार करने में जुटे हुए हैं। झारखंड की सरकार भी पूरी तरह चुनावी रंग में रंगी नजर आ रही है।

153 दिन जेल में रहने के बाद जब से हेमंत सोरेन ने मुख्यमंत्री पद की दोबारा शपथ ली है, उसके बाद से वे निरंतर ताबड़तोड़ घोषणाएं ही कर रहे हैं। पहले वह कहते थे कि भारतीय जनता पार्टी ने प्रदेश का खजाना खाली कर दिया है, कुछ बचा ही नहीं। ऐसे में अब वह विकास कहां से करें। प्रदेश के वित्त मंत्री रामेश्वर उरांव भी यही भाषा बोलते रहे, लेकिन विधानसभा चुनाव नजदीक आते ही अचानक ऐसा लग रहा है कि झारखंड के खजाने में इतना धन आ गया है कि हर दिन नई घोषणा की जा रही है।

किसानों के लिए 100 यूनिट मुफ्त बिजली योजना का दायरा बढ़ाकर 200 यूनिट किया गया है। फिर उनके पुराने बिजली बिल को भी माफ कर दिया गया। इससे महंगी बिजली के बावजूद गुणवत्तापूर्ण बिजली न मिलने के कारण उद्योग धंधों पर प्रतिकूल असर पड़ रहा है। जाहिर है, मुफ्त बिजली की योजना इस समस्या को और बढ़ाएगी। इसी तरह किसानों की कर्जमाफी का दायरा 50 हजार रुपये से बढ़ाकर दो लाख रुपये कर दिया गया है। महिलाओं के खाते में प्रतिमाह एक हजार रुपये की सहायता और सम्मान राशि भेजने वाली मंईयां योजना भी लागू हुई है। वहीं, अधिवक्ताओं के लिए भी हर महीने पांच हजार रुपये के भत्ता की घोषणा की गई है। अबुआ आवास, अबुआ स्वास्थ्य कार्ड, बिरसा हरित क्रांति, गुरुजी क्रेडिट कार्ड सहित अन्य योजनाओं का लाभ भी लाभार्थियों को दिया जा रहा है। मंईयां योजना का लाभ पहले 21 से 50 वर्ष की महिलाओं को मिल रहा था। अब इसका दायरा बढ़ाते हुए पात्रता की न्यूनतम आयु 18 वर्ष तय कर दी गई है। इससे लाभार्थियों की संख्या में वृद्धि हुई है।

एक कार्यक्रम के दौरान हेमंत सोरेन का स्वागत करते हुए नागरिक। फाइल

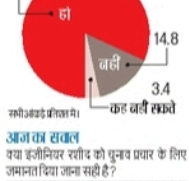

प्रदेश में ताबड़तोड़ लाई जा रही योजनाओं को देखकर ऊपरी तौर पर ऐसा लग सकता है कि सरकार ने राज्य का खजाना गरीबों-वंचितों और जरूरतमंदों के लिए खोल दिया है। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन यह भी कह रहे हैं कि इन योजनाओं का दायरा आगे और बढ़ेगा। हेमंत सोरेन प्रमंडलवार शिविर लगाकर लाभार्थियों के बीच इन योजनाओं की राशि और अधिकार पत्र का वितरण कर रहे हैं। इस दौरान वह भारतीय जनता पार्टी पर निरंतर हमलावर हैं और राज्य में अलग अलग अवधियों में रहे लगभग 20 वर्षों के भाजपा के कार्यकाल पर सवाल भी उठा रहे हैं। उनका आरोप है कि भारतीय जनता पार्टी ने प्रदेश में लगभग 20 वर्षों तक शासन किया, लेकिन उस दौरान प्रदेश के गांवों में विकास की किरण नहीं पहुंचा पाई। अब जब महागठबंधन की सरकार काम कर रही है तो कदम-कदम पर बाधा डालने की कोशिश हो रही है। उधर, भाजपा लगातार यह आरोप लगा रही है कि ये घोषणाएं केवल विधानसभा चुनाव जीतने के लिए की जा रही है। भाजपा सवाल भी उठा रही है कि साढ़े चार वर्षों तक हेमंत सरकार ने नागरिकों के कल्याण के लिए कुछ क्यों नहीं किया।

बताने की आवश्यकता नहीं कि इन योजनाओं का सीधा दुष्प्रभाव राज्य के खजाने और वित्तीय स्थिति पर परिलक्षित होने की आशंका बढ़ गई है। हालांकि झारखंड ऐसा अकेला राज्य नहीं है जहां वोट के लिए रोज नई-नई घोषणाएं की जा रही हैं। अन्य राज्य भी कमोबेश आज इसी राह पर चल रहे हैं। ऐसे में आवश्यकता इस बात की है कि इन घोषणाओं से खजाने पर पड़ने वाले बोझ की भरपाई की भी व्यवस्था की चिंता की जाए, ताकि वित्तीय संतुलन बना रहे। हालांकि वकीलों को भत्ता देने की घोषणा के मामले में झारखंड सरकार ने यह पहल की है और सभी मंत्रियों ने इस मद में एक-एक महीने का वेतन देने की घोषणा भी की है, लेकिन केवल इतने से काम चलने वाला नहीं है।

अन्य राज्यों की बात करें तो हिमाचल प्रदेश में इस माह पहली बार ऐसा हुआ है कि वहां के सरकारी कर्मचारियों को समय पर वेतन नहीं मिला। वहीं दूसरी ओर विकास पर भी असर पड़ा है। यही स्थिति कर्नाटक की भी है। सर्वोच्च न्यायालय भी मुफ्त की योजनाओं पर चिंता जाहिर कर चुका है। गरीबों के नाम पर खजाना खोल देना चुनाव जीतने में भले सहायक हो, लेकिन अच्छा होगा कि सरकार गरीबों के लिए स्थायी आमदनी की चिंता करे।

जागरण जनमत — कल का परिणाम

क्या मणिपुर में राष्ट्रपति शासन लगाने की मांग सही है?

सभी आंकड़े प्रतिशत में।

आज का सवाल

क्या इंजीनियर रशीद को चुनाव प्रचार के लिए जमानत दिया जाना सही है?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

देशविरोधी सोच का परचम लेकर 'हाथ',
भाई अपना दिख रहा अब पन्नू के साथ।
अब पन्नू के साथ गा रहा वह कव्वाली,
और उमर इल्हान बजाती दिखतीं ताली!
कहे जार्ज सी सैम पुत्र आ बैठो गोदी,
रचो यहीं से आय साजिशें देशविरोधी!!

\- ओमप्रकाश तिवारी

मंथन

प्रो. कन्हैया त्रिपाठी
चेयर प्रोफेसर, केंद्रीय विश्वविद्यालय, बठिंडा, पंजाब

जनमानस में बढ़ती हिंदी की पैठ

पिछले एक दशक में हिंदी भाषियों के इतर लोगों में भी हिंदी के प्रति लगाव बढ़ा है। इसमें केंद्र सरकार के प्रयासों का भी योगदान है। जनमानस में हिंदी की बढ़ती पैठ नई आशा जगा रही है

भारत के एकीकरण एवं सम्मान की भाषा राजभाषा हिंदी है। यह आज भारतीय संस्कृति की वाहक बन चुकी है। स्वतंत्रता से पहले हिंदी देश की संपर्क भाषा के रूप में महसूस की गई। भारत में सर्वाधिक जनसंख्या इस भाषा को बोलने वालों की है। हिंदीतर लोगों ने भी हिंदी को बहुत मान दिया। हिंदी से भारत के लोग ही नहीं जुड़ रहे हैं, अपितु विदेश में भी बड़ी संख्या में लोग हिंदी सीख रहे हैं। वस्तुतः नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार हिंदी के विकास के लिए प्रतिबद्ध दिख रही है। इसमें गृह मंत्रालय का भी बड़ा योगदान दिख रहा है, जिसके जिम्मे राजभाषा विभाग है। गृह मंत्री अमित शाह हिंदी के विस्तार के लिए व्यापक कार्य कर रहे हैं।

गतिशील समाज का निर्माण : थोड़ा पीछे चलें तो देश की स्वतंत्रता के पश्चात जब राजभाषा व राष्ट्रभाषा की बहस चली तो वह समय कुछ और था, अब समय कुछ और है। उस समय मतैक्यता नहीं थी कि हिंदी को राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार किया जाए या नहीं। उस समय जिस क्षेत्र के लोग हिंदी को अपनाने के बारे में हिचक रहे थे, आज वहां के लोग स्वयं को हिंदी में अभिव्यक्त कर रहे हैं। सभी लोगों में हिंदी में बात करने के लिए होड़ लगी है। देश का जनमानस तभी इस तरह का करवट लेता है, जब हमारे नेतृत्व के मन में होता है कि सभी इस सही दिशा में चलें और एक गतिशील समाज का निर्माण करें।

चुनौतियां : सबको स्मरण आता है और सुखद अनुभूति देता है वह पल, जब अटल बिहारी वाजपेयी ने संयुक्त राष्ट्र में हिंदी में भाषण दिया था। केंद्र सरकार के प्रयासों से हिंदी में कार्यालय, विद्यालय, विश्वविद्यालय और हमारे अंतःकरण का जो प्रज्ञालय है, उसमें हिंदी सुभाषित हुई है। हिंदी के लिए इतना प्रयास करने वाला नेतृत्व जब हमारे पास है तो भी हमारे देश की अकादमिक जगत की भाषा अंग्रेजी बनी हुई है, यह चिंताजनक है। यह अकादमिक जगत कब हिंदी अपनाएगा? कब वह अपने बच्चों के लिए ऐसा वातावरण तैयार करेगा, जब हिंदी में सबकुछ होना सुनिश्चित होगा? देश में भाषाओं को लेकर विभिन्न विश्वविद्यालय स्थापित किए गए। सबने अच्छा कार्य किया, परंतु महाराष्ट्र में स्थित महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय अपनी वह अमिट छाप नहीं छोड़ पाया जिसकी उम्मीद इस संस्थान से की गई थी। उम्मीद अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल से भी थी कि वह हिंदी भाषा में व्यापक स्तर पर काम करेगा, परंतु उसने भी निराश ही किया।

सच कहें तो हिंदी के लिए समर्पित इन विश्वविद्यालयों से निर्मित पाठ्यक्रम और पठन-पाठन को, जो हिंदी के लिए कर्तव्यबोध थे, उसे इनके उन्मुक्त नेतृत्व ने सींचने की जगह सुखा दिया। अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय ने आनन-फानन में मेडिकल पाठ्यक्रम व दूसरे अन्य पाठ्यक्रम को तैयार कराया जिसमें इतनी गलतियां थीं कि उसकी बहुत आलोचना हुई। केवल काम गिनने-गिनाने के लिए यदि हिंदी विश्वविद्यालय कार्य करेंगे तो हिंदी का भला नहीं होगा। जबकि ये तो उच्च शिक्षा के ऐसे परिसर थे, जहां से समूचे विश्व में हिंदी का डंका बजता, परंतु अब तक ऐसा संभव होता दिख नहीं रहा है। वस्तुतः इन विश्वविद्यालयों के नेतृत्व में यदि हिंदी विश्वविद्यालय के मूल उद्देश्य की समझ होती, कुछ करने की इच्छाशक्ति होती तो हमारे शीर्ष नेतृत्व इन विश्वविद्यालयों के माध्यम से हिंदी को और समृद्धि प्रदान करते। अब समय आ गया है कि इन विश्वविद्यालयों की नकेल कसी जाए। उनके लक्ष्य निर्धारित किए जाएं।

न्यायपालिका से जुड़े हिंदी : हिंदी से संबंधित एक मामला न्यायपालिका से भी जुड़ा है। वस्तुतः हमारे देश के न्यायालयों के निर्णय अधिकांशतया अंग्रेजी में ही होते हैं। इसमें भी परिवर्तन की आवश्यकता है। न्यायालय में निर्णय या न्याय हिंदी में आने पर बड़ी संख्या में लोगों को लाभ होगा। आशा की जानी चाहिए कि जनमानस को न्यायालय के निर्णयों को समझने में होने वाली समस्याओं को देखते हुए वे इस संबंध में स्वतः संज्ञान लेते हुए निर्णय लेंगे। ऐसी अपेक्षा उनसे की जा सकती है। साथ ही, केंद्र सरकार की ओर से एक निर्णायक पहल होनी चाहिए जिसमें न्यायालय में भी हिंदी के उपयोग पर बल हो, अकादमिक जगत में हिंदी का पूर्ण वातावरण हो, विभिन्न आयोगों से निकलने वाले प्रतिवेदनों और सलाह भी हिंदी में उपलब्ध हों। हिंदी की सहगामिनी भाषाओं में प्रकाशित अच्छी रचनाओं के हिंदी में अनूदित होने से भी हिंदी का व्यापक उत्थान होगा। हिंदी को समृद्धि देने वाले यदि पूरी इच्छाशक्ति के साथ काम करने के लिए तत्पर हो जाएं तो हिंदी के विकास के सभी द्वार खुल जाएंगे।

प्रतीकात्मक

निःसंदेह यह सामूहिक प्रयास भारत के लिए भाषागत नवोत्थान की नई कहानियां अंकित करेगा। ऐसे में गृह मंत्री से अपेक्षाएं बढ़ जाती हैं, क्योंकि हिंदी को गतिशील बनाने और किसी निर्णायक लक्ष्य को प्राप्त करने में सर्वाधिक सहयोग उन्हीं से अपेक्षित है।

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
शुक्रवार 13 सितंबर, 2024

दैनिक जागरण

सुख उदारता और दुख त्याग का पाठ पढ़ाने आते हैं

राजनीतिक क्षुद्रता

सुप्रीम कोर्ट के प्रधान न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ के आवास पर गणपति पूजा के कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जाने पर विपक्षी नेताओं की आपत्ति उनकी राजनीतिक क्षुद्रता का ही परिचायक है। क्या विपक्षी दल यह कहना चाहते हैं कि प्रधानमंत्री और सुप्रीम कोर्ट के प्रधान न्यायाधीश के बीच निजी कार्यक्रमों में किसी तरह की मेल-मुलाकात नहीं होनी चाहिए? क्या वे यह चाह रहे हैं कि प्रधानमंत्री को गणपति पूजा में सम्मिलित होने का प्रधान न्यायाधीश का निमंत्रण ठुकरा देना चाहिए था या फिर प्रधान न्यायाधीश को अपने आवास पर किसी को निमंत्रित ही नहीं करना चाहिए था? आखिर उनकी आपत्ति का आधार क्या है? कहीं उन्हें इससे तो समस्या नहीं कि प्रधान न्यायाधीश ने अपनी धार्मिक आस्था प्रकट करने और इस दौरान प्रधानमंत्री ने उनके आवास पर उपस्थित रहने में संकोच नहीं किया? कम से कम उन्हें तो इससे कोई समस्या नहीं होनी चाहिए, जो संवैधानिक पदों पर रहने के दौरान सरकारी खर्चों पर इफ्तार की दावतों में शान से शिरकत किया करते थे। यह विडंबना ही है कि प्रधान न्यायाधीश और प्रधानमंत्री के एक साथ दिखने का विरोध वे भी कर रहे हैं, जो नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी की घनघोर भारत विरोधी अमेरिकी सांसद इल्हान उमर से मुलाकात को सामान्य बताने के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगाए हुए हैं और तरह-तरह के कुतर्क दे रहे हैं। किसी धार्मिक-सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रधान न्यायाधीश और प्रधानमंत्री के साथ दिखने से यह निष्कर्ष निकालना शरारत के अलावा और कुछ नहीं कि इससे सुप्रीम कोर्ट की ओर से दिए जाने वाले फैसले प्रभावित हो सकते हैं? इस हिसाब से तो न्यायाधीशों को अपने को आवास और न्यायालय तक ही सीमित कर लेना चाहिए, क्योंकि कहीं पर भी कोई नेता उनसे टकरा सकता है।

इसकी अनदेखी नहीं की जानी चाहिए कि मौजूदा व्यवस्था में सुप्रीम कोर्ट के प्रधान न्यायाधीश की नियुक्ति में सरकार की कोई भूमिका नहीं होती, जबकि अतीत में होती थी और यह किसी से छिपा नहीं कि उस दौरान किस तरह प्रधानमंत्री के चहेते हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट के प्रधान न्यायाधीश बनाए गए। इसके लिए परंपराओं और साथ ही राजनीतिक मर्यादा की भी खुली अनदेखी की गई। शीर्ष पदों पर बैठे लोगों का एक निजी जीवन भी होता है। इस अपेक्षा का कोई मतलब नहीं कि ऐसे लोगों के पद की गरिमा तभी बनी रहेगी, जब वे केवल अधिकारिक कार्यक्रमों में ही एक-दूसरे से मेल-मुलाकात करेंगे, क्योंकि फिर तो उनका एक-दूसरे के सुख-दुख में शामिल होना ही निषेध हो जाएगा। यह अच्छा हुआ कि राजनीतिक क्षुद्रता की परवाह न करते हुए प्रधान न्यायाधीश ने उन क्षणों की फोटो और वीडियो सार्वजनिक करने में कोई संकोच नहीं किया, जब वह अपने आवास पर प्रधानमंत्री एवं अन्य अतिथियों के साथ गणपति पूजा कर रहे थे। राजनीति करने के और भी विषय हैं। एक सामान्य-सहज समागम पर संकीर्णता का परिचय देना बचकानी राजनीति के अलावा और कुछ नहीं।

रैगिंग क्यों

हिमाचल प्रदेश में कुछ समय के अंतराल में शिक्षण संस्थानों में रैगिंग के मामले लगातार सामने आना चिंतनीय है। उच्च शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत कुछ विद्यार्थी इस तरह की गतिविधियों में संलिप्त होकर अपने भविष्य से खिलवाड़ करते हैं। अधिकतर शिक्षण संस्थानों में प्रवेश के समय विद्यार्थियों से शपथपत्र भी लिया जाता है कि वह ऐसी किसी भी गतिविधि में संलिप्त नहीं होंगे। इसके बावजूद कुछ विद्यार्थी रैगिंग कर अपने भविष्य को दांव पर लगा देते हैं। पीड़ित विद्यार्थी भी इससे प्रभावित होता है। कई बार नए विद्यार्थी तनाव में आ जाते हैं। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी) मंडी, नेरचौक स्थित मेडिकल कालेज, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान हमीरपुर व कांगड़ा जिला के टांडा स्थित डाक्टर राजेंद्र प्रसाद मेडिकल कालेज एवं अस्पताल में रैगिंग के मामले सामने आए थे। संस्थानों ने रैगिंग के दोषी पाए गए प्रशिक्षुओं के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की थी। इससे भी कोई सीख नहीं ली गई और अब सोलन जिले के निजी शिक्षण संस्थान में रैगिंग हुई। इसका वीडियो इंटरनेट मीडिया पर प्रसारित हो रहा है। पुलिस ने पांच आरोपितों को गिरफ्तार किया है जबकि संस्थान प्रबंधन ने भी कार्रवाई की है। विद्यार्थियों को समझना चाहिए कि अभिभावक कड़ी मेहनत से अर्जित कमाई से उनके भविष्य को संवारने में जुटे हैं। उनका प्रयास रहता है कि बच्चे को किसी तरह की परेशानी का सामना न करना पड़े। बच्चों से आस होती है कि वे अच्छी शिक्षा लेकर जीवन में कुछ हासिल करेंगे। लेकिन इस तरह की घटनाओं में शामिल होकर बच्चे उनकी उम्मीदों को तोड़ने के साथ अपने करियर पर भी दाग लगाते हैं। विद्यार्थियों का लक्ष्य होना चाहिए कि उन्हें अच्छी शिक्षा ग्रहण करनी है। ऐसी किसी भी गतिविधि से दूर रहना चाहिए, जिससे उनके भविष्य पर आंच आ सकती है।

राजनीतिक स्वार्थ के लिए संकट को निमंत्रण

प्रो. गौरव वल्लभ

अर्जेंटीना और वेनेजुएला का वित्तीय पतन उन भारतीय राज्यों के लिए सख्त चेतावनी है, जो रेवड़ियों का सहारा ले रहे हैं

वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में चुनावी लोकलुभावनवाद का प्रचलन खतरनाक स्तर पर पहुंच चुका है। वोट हासिल करने के लिए मुफ्त बिजली, कर्ज माफी, पुरानी पेंशन योजना को फिर से शुरू करने जैसी पेशकश करने का चलन देश के राजनीतिक दलों में तेजी से आम होता जा रहा है। हालांकि ऐसे उपाय उदार लग सकते हैं, लेकिन वे चुनाव जीतने के लिए राज्यों के भविष्य को गिरवी रख रहे हैं। भारतीय रिजर्व बैंक और कई शोध संगठनों ने चौंका देने वाले आंकड़े दिए हैं कि ये तथाकथित कल्याणकारी उपाय राजकोषीय जहर हैं, जो आने वाले समय में देश की आर्थिक स्थिरता के लिए गंभीर खतरा पैदा कर सकते हैं। इसे पंजाब और हिमाचल प्रदेश के उदाहरणों से अच्छे से समझा जा सकता है। वित्त वर्ष 2023-24 के लिए भारतीय राज्यों के लिए औसत ऋण और जीएसडीपी अनुपात लगभग 31 प्रतिशत रहा, जबकि पंजाब का यह अनुपात 50 प्रतिशत के करीब है, जो मुख्य रूप से मुफ्त बिजली और कर्ज माफी के कारण है। पंजाब मौजूदा कर्जों पर ब्याज भुगतान को कवर करने के लिए और उधार लेने के लिए मजबूर है। वित्त वर्ष 2024-25 में पंजाब की ओर से ब्याज के मद में 23,900 करोड़ रुपये का भुगतान किए जाने का अनुमान है, जो इसकी राजस्व प्राप्तियों का 23 प्रतिशत है। 2023-24 के संशोधित अनुमान के अनुसार पंजाब का कुल पूंजीगत परिव्यय बजट में निर्धारित 10,355 करोड़ से 38 प्रतिशत कम होने का अनुमान है। इससे यह चिंता होती है कि बजट का कितना हिस्सा परिसंपत्ति निर्माण की ओर निर्देशित किया जा रहा है। पंजाब ने 2024-25 में बिजली सब्सिडी पर 20,200 करोड़ रुपये खर्च करना तय किया है। यह पिछले दो वर्षों में आवंटित की गई राशि के बराबर है। अकेले इस सब्सिडी से वित्त वर्ष 2024-25 में राज्य की राजस्व प्राप्तियों का 19 प्रतिशत हिस्सा खर्च होने की उम्मीद है।

हिमाचल की वित्तीय स्थिति राजकोषीय कुप्रबंधन का एक और उदाहरण है। कांग्रेस सरकार आने के बाद से हिमाचल लगातार बढ़ती हुई वित्तीय देनदारियों से जूझ रहा है, जिसका बकाया ऋण वित्त वर्ष 2021-22 में जीएसडीपी के 37 प्रतिशत से बढ़कर 2024-25 में 42.5 प्रतिशत हो गया है। यह भी अस्थिर राजकोषीय प्रथा को दर्शाता है। सरकारी कर्मचारियों के वेतन में देरी इसी वित्तीय तनाव को उजागर करती है। हाल में अतिरिक्त राजस्व एकत्र करने के लिए हिमाचल सरकार ने दूध उत्पादकों को समर्थन देने के लिए बिजली की खपत पर 0.1 प्रति यूनिट का दूध उपकर और पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए औद्योगिक उपभोक्ताओं के लिए 0.1 प्रति यूनिट का अतिरिक्त उपकर लगाने का भी निर्णय किया। इतना ही नहीं अतिरिक्त राजस्व के लिए हिमाचल ने वैज्ञानिक, औद्योगिक और औषधीय उपयोग के लिए भांग की खेती को भी वैध कर दिया। ये सभी कदम राज्य में भयंकर वित्तीय कठिनाइयों को दर्शा रहे हैं। वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए सरकार का खर्च 52,965 करोड़ रुपये होने का अनुमान है और राज्य को 5,479 करोड़ का कर्ज चुकाना है। हालत यह है कि ब्याज भुगतान में वृद्धि की भरपाई पूंजीगत खर्चों में कमी से की जा रही है। इस राजकोषीय दबाव के कारण 2024-25 में विभिन्न क्षेत्रों में बजट में कटौती की गई है। शहरी विकास पर खर्च में 32 प्रतिशत की कमी आई है, जबकि सामाजिक कल्याण, कृषि और जल आपूर्ति के लिए आवंटन में क्रमशः 15, 9 और 13 प्रतिशत की कमी की गई है। बढ़ते घाटे के साथ हिमाचल को वित्तीय अस्थिरता के बढ़ते जोखिम का सामना करना पड़ रहा है। दोनों राज्यों में, दीर्घकालिक जरूरतों की उपेक्षा करते हुए, पर्याप्त धनराशि अल्पकालिक राजनीतिक वादों की पूर्ति में खपा दी गई है। ध्यान राजकोषीय स्वास्थ्य को मजबूत करने पर दिया जाना चाहिए।

अवधेश राजपूत

अर्जेंटीना और वेनेजुएला का वित्तीय पतन उन राज्यों के लिए सख्त चेतावनी है, जो रेवड़ियों का सहारा ले रहे हैं। कभी समृद्ध रहा अर्जेंटीना अत्यधिक खर्च और लोकलुभावन नीतियों के कारण ढह गया, जबकि वेनेजुएला ने अल्पकालिक लाभ के लिए अपनी तेल संपदा को बर्बाद कर दिया। दोनों देश राजकोषीय कुप्रबंधन के कारण मुद्रास्फीति, गरीबी और राजनीतिक अस्थिरता में फंस गए। यदि भारतीय राज्य इसी राह पर चलते रहे तो वे इन देशों की तरह दुखद आर्थिक इतिहास दोहराने का जोखिम उठाएंगे। इसके भयानक परिणाम हो सकते हैं, जैसे अनियंत्रित मुद्रास्फीति और गरीबी में वृद्धि।

भारतीय राजनीति में मुफ्त सुविधाओं का दुरुपयोग सिर्फ एक आर्थिक मुद्दा नहीं है। यह लोकतांत्रिक शासन की नींव को भी खतरे में डालता है। अल्पकालिक राजनीतिक लाभ के लिए राज्य वित्तीय संकट के जोखिम को निमंत्रण दे रहे हैं। इस तरह के वित्तीय कुप्रबंधन से निवेशकों का भरोसा कम हो सकता है, उधार लेने की लागत बढ़ सकती है और देश की आर्थिक प्रगति धीमी हो सकती है। अंततः इन नीतियों का बोझ नागरिकों पर ही पड़ता है। शिक्षा, स्वास्थ्य और बुनियादी ढांचे जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों से धन को गैर-संवहनीय योजनाओं के वित्तपोषण में आवंटन से राज्य ऐसी आवश्यक सेवाएं प्रदान करने में असमर्थ हो जाते हैं, जो लोगों को गरीबी से बाहर निकाल सकती हैं। मुफ्त बिजली जैसी महंगी छूट जारी रखने के बजाय राज्यों को दीर्घकालिक समाधानों में निवेश करना चाहिए, जैसे सौर पैनल लगाना, महिलाओं के लिए कार्यस्थल में सुधार करना या कृषि अनुसंधान एवं विकास को वित्तपोषित करना। ये निर्भरता को कम करते हैं और विकास को बढ़ावा देते हैं।

राजनीतिक दलों को मुफ्त उपहार के वादों के साथ उनके वित्तीय प्रभाव के बारे में भी लोगों को बताना होगा। इसे कानूनी रूप से बाध्यकारी करना चाहिए, ताकि दीर्घकालीन कल्याणकारी योजनाओं के लिए स्थायी वित्तपोषण सुनिश्चित किया जा सके। हमें जिम्मेदार नागरिकों के रूप में अपने राजनीतिक दलों से इस संदर्भ में जवाबदेही की भी मांग करनी होगी, अन्यथा अल्पकालिक राजनीतिक लाभ भारत और भारतीय राज्यों की दीर्घकालिक समृद्धि को पंगु बना देंगे और भविष्य की पीढ़ियों को आज की राजकोषीय लापरवाही का बोझ उठाना पड़ेगा।

(लेखक एक्सएलआरआइ, जमशेदपुर में वित्त के प्रोफेसर हैं)

response@jagran.com

अनुसंधान को विकास से जोड़ने की पहल

बद्री नारायण

नेशनल रिसर्च फाउंडेशन भारत को विकसित बनाने के लक्ष्य को प्राप्त करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन सकता है

पिछले दिनों नेशनल रिसर्च फाउंडेशन (एनआरएफ) की पहली बैठक हुई। इस बैठक में प्रधानमंत्री मोदी ने भी शिरकत की। नेशनल रिसर्च फाउंडेशन को पांच फरवरी, 2024 को एनआरएफ एक्ट बना कर स्थापित किया गया है। इसे ''अनुसंधान नेशनल रिसर्च फाउंडेशन'' यानी एएनआरएफ नाम दिया गया है। एएनआरएफ अब अपने मिशन की दिशा में बढ़ता हुआ दिख रहा है। उम्मीद है कि यह भारत में विकास एवं शोध के सूत्रों को जोड़ने का काम करेगा। विकास और शोध में गहरा संबंध होता है। सतत शोध विकास को दिशा देता है। यह जनजीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का सतत मूल्यांकन कर विकास की गति, प्रक्रिया एवं प्रभावों की पड़ताल करता रहता है। भारत में आजादी के बाद से विकास की अवधारणा विकसित करने का काम राजनीतिक नेतृत्व, नौकरशाही, विद्वानों की टीम सार्थक रूप से करती रही है। इसमें शोध की भूमिका ज्यादातर परियोजनाओं के महज मूल्यांकन तक ही सीमित रहती थी। देश में विकास परियोजनाओं को संकल्पित करने एवं उनको कार्यान्वित करने में शोध की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण नहीं मानी जाती थी। साथ ही विज्ञान एवं तकनीक के क्षेत्र में कुछ केंद्र और कुछ व्यक्तित्वों के इर्द-गिर्द ही शोध का दायरा सीमित रहता था।

1990 के बाद उदारवादी अर्थव्यवस्था लागू होने के बाद भारत में विकास का स्वरूप बदला एवं उसकी गति तेज हुई। 2014 में प्रधानमंत्री मोदी द्वारा देश की सत्ता संभालने के बाद विकास की यह गति और तेज हुई। विकास को एक मिशन मोड में लाया गया। इसमें राज्यसत्ता, सरकार, जनता, नेतृत्व के साथ ही उद्योग, उदारशील समूहों एवं कारपोरेट भी नए भागीदार बन कर उभरे। विकास के इस नए परिदृश्य में देश में शोध की जरूरत एक नए सपोर्ट इंजन के रूप में सबको महसूस हो रही थी। इसी जरूरत को पूरा करते हुए मोदी सरकार ने देश में शोध को विकास की एक आत्मिक दृष्टि के रूप में विकसित करने के लिए अनुसंधान नेशनल रिसर्च फाउंडेशन स्थापित करने का काम शुरू किया।

यह देखना सुखद है कि अनुसंधान नेशनल रिसर्च फाउंडेशन ने भारत में विकास को दिशा देने, उसे ''आइडिया सपोर्ट'' देकर उसे प्रभावी बनाने एवं उसकी सतत समीक्षा कर उसके प्रभावों को सार्थक बनाने का काम करना प्रारंभ कर दिया है। सरकार की इस पहल ने देश में एक तो अभी तक बिखरे पड़े एवं अनेक तरह के शोध के प्रयासों को एकजुट एवं समायोजित कर उसमें नए भागीदारों को जोड़कर उसे सम्यक रूप से नियोजित कर विकसित भारत के महाअभियान से जोड़ने का काम किया है। दूसरा, इससे देश में शोध का न्याय संगत एवं जनतांत्रिक वितरण भी संभव हो पाएगा। तीसरा, इससे इंडस्ट्री, कारपोरेट, प्राइवेट शोध फाउंडेशन सभी एक मंच पर आकर एक साथ अपने विचार, आंकड़े एवं संसाधनों का आदान-प्रदान कर देश में विकसित भारत के महाअभियान में अपना योगदान दे पाएंगे। इससे अनेक प्रकार के शोध के संसाधन एवं स्रोत जो इधर-उधर बिखरे हैं, सब एक होकर विज्ञान, तकनीक एवं सामाजिक शोध के परिक्षेत्र को प्रभावी बना पाएंगे। एएनआरएफ की शीर्ष समिति में शोध की महत्वपूर्ण संस्थाओं के शोध लीडर शामिल हैं। विज्ञान एवं तकनीक के क्षेत्र के अनेक बड़े विद्वान इस अवधारणा को जमीन पर उतारने के कार्य में लगे हैं। इसका एक महत्वपूर्ण लक्ष्य नवोन्मेषी शोध का एक ऐसा परिक्षेत्र विकसित करना है, जिसमें राज्य निर्देशित विकास की अवधारणा, परियोजनाओं एवं प्रयासों को जनता, समाज एवं राष्ट्र के जीवन को बदलने में सर्वाधिक उपयोगी साबित हो सके।

एएनआरएफ गवर्निंग बोर्ड की बैठक में पीएम मोदी। प्रेट्र

यह जानना जरूरी है कि एएनआरएफ न केवल विज्ञान, तकनीक, औद्योगिक उत्पादन, चिकित्सा के क्षेत्रों में ही शोध के लिए न्याय संगत, नवोन्मेषी एवं जनतांत्रिक इकोसिस्टम रचने का काम करेगा, बल्कि यह लिबरल आर्ट, समाज विज्ञान जैसे शोध को मानवीय एवं सामाजिक आधार देने वाले ज्ञान के क्षेत्रों में भी बदलाव लाने की कोशिश करेगा। इसके कारण नवोन्मेषी शोधों का एक ऐसा माहौल बन सकेगा, जिसमें भारतीय विश्वविद्यालयों एवं शिक्षा संस्थानों में शोध की पारंपरिक प्रकृति में आमूलचूल परिवर्तन हो सकेगा। इससे विश्वविद्यालयों में आमजन के जीवन से जुड़े मुद्दों और जरूरतों पर शोध के कार्य तो होंगे ही, साथ ही आम आदमी की लोक मेधा एवं जन-अंतर्दृष्टि को भी अकादमिक शोधों में महत्व मिलेगा। इससे शोध जगत में समाज को स्वयं एक शोध की प्रयोगशाला के रूप में देखने की प्रवृत्ति विकसित होगी। इससे एक ऐसा अकादमिक इकोसिस्टम बनेगा, जिसमें जन-विज्ञान, लोक तकनीकी, लोक ज्ञान, लोक चिकित्सकीय व्यवहारों को महत्व मिलेगा, जो एक तरह से राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 का मूल आत्मा है। दुनिया के विकसित देशों में ऐसे रिसर्च फाउंडेशन कई दशकों से कार्य करते हुए उनके विकास को दिशा एवं दृष्टि दे रहे हैं। भारत में भी इधर-उधर बिखरे एवं अनियोजित ऐसे प्रयासों को एक सूत्र में जोड़कर विकसित भारत के मिशन में उपयोग किया जा सकता है। साथ ही इसके बनने से भारत में अकादमिक संस्थानों के शोधों एवं सरकार नियोजित विकास के बीच की दूरी कम होगी एवं उनके बीच संवाद होगा।

प्रसिद्ध फ्रांसीसी विचारक मिशेल फुको ने कहा है कि नालेज ही पावर है। इस वाक्य को थोड़ा बदल दें तो कहा जा सकता है कि नालेज ही विकास का आधार है अर्थात ज्ञान ही शक्ति का मूल स्रोत है। यह ज्ञान हमें अनुसंधान से मिलता है। प्रधानमंत्री मोदी ने 2047 तक भारत को विकसित बनाने का लक्ष्य रखा है। एएनआरएफ उस लक्ष्य को प्राप्त करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन सकता है।

(लेखक जीबी पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, प्रयागराज के निदेशक हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

अच्छाइयों का सागर

कितना अच्छा हो अगर चेहरे के साथ भीतर के भाव भी दिखाई देने लगें। दूसरों की आंखों की नमी देख हम भावुक हो जाते हैं, लेकिन भीतर में व्याप्त अच्छाइयां दिखने लग जाएं तो शायद यह विश्व अलग ही हो। ऐसा न होने का कारण हमारी अज्ञानता है। कबीर दास ने शायद आदमी की इसी अज्ञानता पर ही कहा था- 'पानी में मीन पियासी, मोहे सुन-सुन आवे हांसी।' कोई वस्तु आपके हाथ में हो और आप उसे खोजें, तो लोग हंसेंगे। कस्तूरी की सुगंध से भ्रमित मृग इधर-उधर भाग कर उसे ढूंढे तो उसकी अज्ञानता पर आदमी हंसता है, लेकिन अपने भीतर समाहित अच्छाइयों के सागर को आदमी यदि बाहर ढूंढता है तो सारे पशु जगत को उस पर हंसना चाहिए।

जब हम अपने भीतर देखने की कला में निष्णात हो जाते हैं, तो हमारे जीवन का एक नया आयाम सामने आता है, लेकिन भीतर से अनजान आदमी ज्यादातर बाहर ही देखता है। भीतर देखने की रुचि लाखों में किसी एक की जागती है। भीतर जिसने एक बार भी देख लिया, बाहर का सारा आकर्षण उसके लिए समाप्त हो जाएगा। बाहर की दुनिया में रहने की उसकी आदत छूट जाएगी। फिर ऐसे लोग अधिकांश समय समाधि की अवस्था में ही रहना पसंद करेंगे।

बाहर की दुनिया में रहने से बुराइयां एवं विकृतियां प्रबल बनती हैं। क्रोध, लोभ, मोह, भय, अहंकार, घृणा के भाव आते हैं। यह भाव ही हिंसा है। मारना-काटना तो उसका परिणाम है, जो प्रत्यक्ष दिखाई देता है। खुद को भूलकर दूसरों को देखने से हीनभावना या अहं भावना जागती है। मन की ये दो बड़ी ग्रंथियां हैं। इन्हीं से निःसृत होते हैं भाव। जब हम भीतर देखते हैं तो केवल स्व दिखाई देता है, कोई पर दिखाई नहीं देता। ऐसे लोगों का जीना सार्थक होता है। आप कितने साल जिए यह अहम नहीं है, बल्कि इन वर्षों में आपने कितनी जिंदगी जी, यह मायने रखता है।

ललित गर्ग

महज डिग्री न बांटें शिक्षण संस्थान

देवेंद्रराज सुथार

शिक्षा प्रणाली को इस तरह से पुनर्गठित करना होगा कि यह छात्रों को न सिर्फ ज्ञान, बल्कि जीवन कौशल भी प्रदान करे

विडंबना है कि एक तरफ हम विकसित राष्ट्र बनने का सपना देख रहे हैं, वहीं दूसरी तरफ हमारे शिक्षित युवा अपनी योग्यता से कहीं कमतर नौकरियों के लिए संघर्ष कर रहे हैं। हाल में हरियाणा के सरकारी विभागों, बोर्डों, निगमों और नगर निकायों में सफाई कर्मचारी की नौकरी के लिए छह हजार से अधिक पोस्ट ग्रेजुएट, करीब 40 हजार ग्रेजुएट और 12वीं तक की पढ़ाई कर चुके 1.2 लाख अभ्यर्थियों ने आवेदन किया है। 15 हजार रुपये प्रतिमाह वेतन वाली इस नौकरी के लिए कुल 3.95 लाख अभ्यर्थियों ने आवेदन किया है। यह कई सवाल खड़े करता है। क्या हमारे शिक्षण संस्थान वास्तव में छात्रों को जीवन की वास्तविकताओं के लिए तैयार कर रहे हैं या वे महज डिग्री बांटने के केंद्र बन गए हैं? हमें यह समझना होगा कि शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ किताबी ज्ञान देना नहीं है, बल्कि व्यावहारिक कौशल और रचनात्मक सोच विकसित करना भी है।

जब उच्च शिक्षित लोगों को भी उनके योग्यता के अनुरूप नौकरी नहीं मिल रही है, तो यह स्पष्ट है कि समाज में आगे बढ़ने के अवसर सीमित हो रहे हैं। यह सिर्फ आर्थिक असमानता नहीं है, बल्कि सामाजिक और मानसिक स्तर पर भी इसका गहरा असर पड़ रहा है। सिर्फ सरकारी नौकरियां बढ़ाने या निजी क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़ाने से यह समस्या हल नहीं होगी। यह एक अल्पकालिक उपाय हो सकता है, लेकिन दीर्घकालिक दृष्टि से यह बेरोजगारी की जड़ में छिपी संरचनात्मक समस्याओं को संबोधित नहीं करता। ऐसा वातावरण तैयार करना चाहिए जो युवाओं को नौकरी खोजने के बजाय नौकरियां सृजित करने के लिए प्रेरित करे। शिक्षा प्रणाली को इस तरह से पुनर्गठित करना होगा कि यह छात्रों को न सिर्फ ज्ञान, बल्कि जीवन कौशल भी प्रदान करे।

हर काम सम्मानजनक है। सफाई कर्मचारी से लेकर प्रोफेसर तक, हर भूमिका समाज के लिए महत्वपूर्ण है, लेकिन यह सुनिश्चित करना भी महत्वपूर्ण है कि क्षमता और योग्यता के अनुरूप अवसर मिलें। यह समस्या रातों-रात हल नहीं होगी। इसके लिए दीर्घकालिक योजना, सरकार, शिक्षण संस्थानों, उद्योग और समाज के संयुक्त प्रयासों की आवश्यकता होगी। हमें ऐसा माहौल बनाना होगा जहां हर व्यक्ति को अपनी पूरी क्षमता का उपयोग करने का अवसर मिले। यह सिर्फ रोजगार का मुद्दा नहीं है-यह युवाओं के सपनों, अर्थव्यवस्था के भविष्य और देश की प्रगति का सवाल है। हमें इस चुनौती को अवसर के रूप में देखना चाहिए- एक ऐसा भारत बनाने का अवसर जहां शिक्षा सिर्फ डिग्री न हो, बल्कि जीवन की तैयारी हो, जहां विकास का लाभ समाज के हर वर्ग तक पहुंचे और जहां हर युवा को अपने सपने साकार करने का मौका मिले।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

मेलबाक्स

मणिपुर में बार-बार की अशांति

'चिंता बढ़ाते मणिपुर के हालात' शीर्षक से प्रकाशित आलेख में दिव्य कुमार सोती ने सही लिखा है कि मणिपुर में शांति और स्थिरता भारतीय हितों के लिए अहम है, क्योंकि म्यांमार में चीनी और अमेरिकी खुफिया एजेंसियां अपना जाल बिछाने में लगी हुई हैं। मणिपुर में करीब एक लाख सुरक्षा कर्मी तैनात हैं। इसके बावजूद भी डेढ़ साल से किसी किस्म की कड़ी कार्रवाई अभी तक नहीं की जा सकी है। सही बात है कि मणिपुर में किए जा रहे नए ड्रोन और राकेट हमले दिखाते हैं कि बांग्लादेश में शेख हसीना सरकार के पतन और अमेरिका समर्थित मुहम्मद यूनुस सरकार के सत्ता में आने से मणिपुर में कुकी अलगाववादियों के हौसले और बढ़ गए हैं। मणिपुर में चहुंओर विश्वास का संकट खड़ा हो गया है। महिलाएं पूर्वोत्तर के इन स्थानों में सुरक्षा बलों के साथ धक्का-मुक्की करती हैं, हिंसक तत्वों की ढाल बनती हैं। सीआरपीएफ जैसा अर्धसैनिक बल इनके सामने असहाय दिखता है, क्योंकि पुरुष सैनिकों द्वारा उन पर बल प्रयोग संभव नहीं है। ऐसी स्थिति में आवश्यक हो जाता है कि मणिपुर में महिला अर्धसैनिक बलों की भी बड़ी संख्या में तैनाती हो। खालिस्तानी आतंकवाद के दौर में पंजाब में तमाम आतंकी गुटों के बलपूर्वक निशस्त्रीकरण के लिए चलाए गए सैन्य अभियान जैसा ही अभियान मणिपुर में भी चलाया जाए।

bhimsinghpardeshi2@gmail.com

मणिपुर में शांति कब आएगी

'चिंता बढ़ाते मणिपुर के हालात' शीर्षक वाले आलेख में दिव्य कुमार सोती ने यह रेखांकित किया है कि मणिपुर की गंभीर स्थिति के बावजूद सरकार की तरफ से निर्णायक और प्रभावशाली कदमों की कमी साफ-साफ नजर आ रही है। मणिपुर के हालात देखते हुए यह कहना गलत नहीं होगा कि सरकार समस्या सुलझाने के बजाय उसमें उलझी हुई दिख रही है। जहां एक तरफ जातीय संघर्ष की आग धधक रही है, वहीं दूसरी तरफ प्रशासनिक कूटनीति की बर्फ पिघलने का नाम नहीं ले रही। यह मामला सिर्फ कानून और व्यवस्था का नहीं, बल्कि राजनीतिक इच्छाशक्ति का है। पर यहां सवाल उठता है- सरकार आखिर किस इंतजार में है? ऐसा लगता है कि मणिपुर की जनता ने शायद कोई ''पवित्र धैर्य'' प्रतियोगिता में हिस्सा लिया है, जिसमें उन्हें राजनीतिक अस्थिरता और हिंसा को बिना कुछ कहे सहना है। हर बार एक ही तरह के बयानों से समाधान की उम्मीद जताई जाती है, लेकिन धरातल पर कुछ भी ठोस नहीं दिखता। क्या हम मान लें कि राज्य और केंद्र सरकारें किसी 'जादुई समाधान' की प्रतीक्षा में हैं? या फिर ये मुद्दा किसी फाइल में धूल चाटने के लिए छोड़ दिया गया है? किसी भी समस्या का समाधान संवाद और समझ से होता है, लेकिन यहां तो बातचीत के बजाय 'बांटो और राज करो' की नीति नजर आ रही है। अगर मणिपुर को वाकई में स्थिरता की ओर ले जाना है, तो यह वक्त है जब राजनीतिक इच्छाशक्ति दिखाई जाए, और सिर्फ बयानबाजी से नहीं, बल्कि जमीनी कामों से। कहीं ऐसा न हो कि हम इसी तरह बैठकर उस दिन का इंतजार करते रहें, जब मणिपुर का मामला 'इतिहास' बन जाए।

awanishg30@gmail.com

राहुल गांधी के बयान

राहुल गांधी से देश के समर्थन में बयान की अपेक्षा करना वैसा ही है जैसा कि अपेक्षा करना कि नीम के पेड़ में आम लगेंगे या फिर गुलाब के पौधे से कांटे हट जाएंगे। कांग्रेस के 70 वर्ष के कार्यकाल में जनमानस को गुमराह करने की रही है। कांग्रेस झूठ बोल कर तथा मुस्लिम वर्ग से ही कुछ वोट समेटने में सफल हो सकती है अन्यथा नहीं। भविष्य में भी उसकी रणनीति यही रहने वाली है। आज मैन्यूफैक्चरिंग के विषय में बोलने वाली कांग्रेस यह बताए कि 2000 के आस पास भारत के 40 सबसे बड़े निर्यातक चीन क्यों शिफ्ट हो गए। कांग्रेस ने भारत में इलेक्ट्रानिक्स को बढ़ावा क्यों नहीं दिया? क्यों करप्शन को फैलने दिया? कांग्रेस के पास इन प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं है, क्योंकि उसकी संस्कृति ही देश को गुमराह करना है।

nutantawakley@gmail.com

इस स्तंभ मे किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमे पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।
अपने पत्र इस पते पर भेजें :
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल: mailbox@jagran.com

संस्थापक- स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक- स्व. नरेन्द्र मोहन, चेयरमैन एमेरिटस-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक- संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।
****

सम्पादकीय

आत्महत्या किसी समस्या का हल नहीं

दुनियाभर में तेजी से बढ़ती आत्महत्या की प्रवृत्ति पर रोक लगाने के लिए प्रतिवर्ष 10 सितम्बर को विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के सहयोग से 'विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस' मनाया जाता है। इस दिवस की शुरुआत 'इंटरनेशनल एसोसिएशन फॉर सुसाइड प्रिवेंशन'(आईएएसपी) द्वारा 2003 में की गई थी। इन दिन पीले रंग के रिबन को प्रतीक के रूप में पहना जाता है, जिसका यह संदेश है कि आत्महत्या की रोकथाम के बारे में जन जागरूकता से लोगों की जान बचाई जा सकती है। इस दिवस का उद्देश्य आत्महत्या की मनोवृत्ति पर शोध करना, जागरूकता फैलाना और डेटा एकत्रित करना है। डब्ल्यूएचओ के मुताबिक प्रतिवर्ष दुनियाभर में करीब आठ लाख लोग आत्महत्या के जरिये जीवनलीला खत्म कर डालते हैं, जिनमें बड़ी संख्या में आत्महत्या के मामले 15 से 29 वर्ष के लोगों में होते हैं। जबकि आत्महत्या का प्रयास करने वालों का आंकड़ा इससे बहुत ज्यादा है। प्रतिवर्ष विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस की थीम निर्धारित की जाती है। आत्महत्या रोकथाम दिवस की 2024 की थीम है 'आत्महत्या पर कहानी बदलना।' इस थीम का उद्देश्य आत्महत्याओं को रोकने के लिए कलंक को कम करने और खुली बातचीत को प्रोत्साहित करने के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाना है। लोगों में अवसाद निरन्तर बढ़ रहा है, जिसके चलते ऐसे कुछ व्यक्ति आत्महत्या जैसा हृदयविदारक कदम उठा बैठते हैं। डब्ल्यूएचओ के आंकड़ों के अनुसार दुनियाभर में 79 फीसदी आत्महत्या निम्न और मध्यवर्ग वाले देशों के लोग करते हैं और इसमें बड़ी संख्या ऐसे युवाओं की होती है, जिनके कंधों पर किसी भी देश का भविष्य टिका होता है। दुनियाभर के साथ-साथ भारत में आत्महत्याओं का आंकड़ा काफी चिंताजनक है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) ने वर्ष 2022 में भारत में आत्महत्या के मामलों को लेकर जारी रिपोर्ट में बताया था कि वर्ष 2022 में भारत में कुल 170924 लोगों ने आत्महत्या की जबकि 2021 में भारत में 164033 लोगों ने आत्महत्या की थी। एनसीआरबी के मुताबिक आत्महत्या की घटनाओं के पीछे पेशेवर या कैरियर संबंधी समस्याएं, अलगाव की भावना, दुर्व्यवहार, हिंसा, पारिवारिक समस्याएं, मानसिक विकार, शराब की लत, वित्तीय नुकसान, पुराने दर्द इत्यादि मुख्य कारण हैं। आज छात्र अपनी शिक्षा एवं भविष्य को लेकर गहरे असमंजस में हैं। किसी को करिअर या नौकरी की चिंता सता रही है तो कोई वित्तीय संकट से जूझ रहा है। तनाव के दौर में निजी रिश्तों में भी खटास बढ़ी है और आमजन में नकारात्मक विचारों का बढ़ता प्रवाह तथा उपरोक्त चिंताएं कई बार अवसाद का रूप ले लेती हैं, जिसके चलते कुछ लोग परेशानियों से निजात पाने के लिए आत्महत्या का खतरनाक रास्ता चुन लेते हैं। जब कोई व्यक्ति ज्यादा बुरी मानसिक स्थिति से गुजरता है तो एकाएक अवसाद में चला जाता है। इसी अवसाद के कारण ऐसे कुछ लोग आत्महत्या कर लेते हैं, जिसका उनके परिवार के साथ-साथ समाज पर भी बहुत नकारात्मक असर पड़ता है।

पेरिस पैरालंपिक के संदेश को समझना जरूरी

2021 के टोक्यो पैरालंपिक में ही भारत ने संकेत दे दिए थे कि अब भारत पैरा स्पोर्ट्स के शिखर पर जाने को बेताब है। तो 2024 के पेरिस पैरालंपिक उस ख्वाब को भी हमारे दिव्यांग खिलाडियों ने काफी तक सच भी साबित कर दिया। एक दौर था जब भारत इन खेलों में दो-चार पदक ही ले पाता था। पर अब वह दिन चले गए। भारत अब दो अंकों में पदक हासिल कर रहा है और आसानी से अपने पिछले रिकॉर्ड को तोड़ रहा है। बेशक, पिछले टोक्यो खेलों में भारत के 19 पदक के प्रदर्शन ने देश में पैरालंपिक खेलों को बढ़ावा देने की दिशा में एक लंबी छलांग लगाई थी। इस अर्थ में, पेरिस में यह देखना था कि क्या भारत इन खेलों में तेजी से आगे बढ़ रहा है अथवा नहीं।

आर.के.सिन्हा

पेरिस में ओलंपिक खेलों में लचर प्रदर्शन के बाद पैरालंपिक में भारतीय एथलीटों के प्रदर्शन से सारा देश खुश है। हमारे एथलीटों ने अपने उल्लेखनीय और शानदार अविश्वसनीय प्रदर्शन से देश का मान बढ़ाया है। इन दिव्यांग खिलाड़ियों ने शारीरिक चुनौतियों का सामना करने के बावजूद अपने उल्लेखनीय खेल से हरेक भारतीय प्रेरित किया है। भारत ने पैरालंपिक में 29 पदकों (सात स्वर्ण, नौ रजत और 13 कांस्य) जीते, जो कि अबतक का एक रिकॉर्ड है। इसमें कोई शक नहीं है कि पदक तालिका में भारत का 18वां स्थान, सरकार द्वारा दिव्यांग खिलाड़ियों को दिए जाने वाले प्रोत्साहन और सुविधाओं में बढ़ोत्तरी का ही प्रमाण है। इस पैरालंपिक में भारतीय कोचों और सहायक कोच भी पेरिस में खिलाड़ियों को हर तरह के सहयोग के लिए पर्याप्त संख्या में मौजूद थे।

पहली बार भारतीय एथलीटों के लिए खेल गांव में एक स्पेशल रिकवरी सेंटर बनाया गया था। इससे खिलाड़ियों को चोटों से उबरने और अपनी फिटनेस को तेजी से सुधारने में मदद मिली, जिससे वे अपने प्रदर्शन में निरंतरता बनाए रख सके।भारत ने पेरिस पैरालंपिक में 77 कोच और सहयोगी स्टाफ भेजे, जो टोक्यो पैरालंपिक में भेजे गए 45 कोच और सहयोगी स्टाफ से कहीं ज्यादा थे। इससे खिलाड़ियों को बेहतर मार्गदर्शन और देखभाल मिली, जिसका सीधा असर उनके प्रदर्शन पर पड़ा। पैरालंपिक में देश की भागीदारी ने केवल 16 वर्षों में एक उल्लेखनीय छलांग लगाई है। 2008 में बीजिंग पैरालंपिक में पाँच एथलीटों के मुकाबले अब भारतीय दल 84 हो गया है। बीते रविवार को खेलों की समाप्ति से पहले भारत के पैरालंपियनों ने एक भारतीय रेस्तरां में सुस्वादु भोजन का आनंद भी लिया। हमारे खिलाड़ी जश्न के मूड में थे। ये जश्न मनाने के हकदार भी थे।

पैरालंपिक में हमारे श्रेष्ठ प्रदर्शन के साथ ही देश और समाज को दिव्यांगों के प्रति अधिक उदार और मानवीय रवैया अपनाना होगा। अभी भी दिव्यांगों के हक में बहुत कुछ किया जाना शेष है। क्या हमारे देश में दिव्यांगों विकलांगों के मन-माफिक घरों या कमर्शियल इमारतों का निर्माण हो रहा है? कतई नहीं। अब लक्जरी होम, सी-फेसिंग फ्लैट, एलिट होम वगैरह के दौर में कितने बिल्डर और आर्किटेक्ट सोचते भी हैं दिव्यांगों के मन-माफिक घर बनाने के संबंध में। वास्तव में, बहुत ही कम।

अफसोस है कि हमारे यहां दिव्यांगो के लिए हाई-राइस बिल्डिंगों और दूसरे घरों में पर्याप्त जरूरी सुविधाएं उपलब्ध करवाने को लेकर सही ढंग नहीं सोचा जा रहा। दिव्यांगों को लेकर रीयल एस्टेट कंपनियों और आर्किटेक्ट बिरादरी को ज्यादा संवेदनशील रुख अपनाना ही होगा। रीयल एस्टेट क्षेत्र से जुड़े सभी स्टेकहोल्डर्स को विकलांगों और बुजुर्गों के लिए सुगम या कहें कि यूजर फ्रेंडली घर बनाने चाहिए। हालांकि भारत में रीयलएस्टेट सेक्टर ने बीते चंदेक दशकों के दौरान लंबी छलांग लगाई है,पर उन रीयल एस्टेट कंपनियों को उंगुलियों पर गिना जा सकता है जो दिव्यांगो तथा बुजुर्गों की सुविधा का ध्यान रखकर निर्माण कर रही हैं। अब उदाहरण के लिए आपको इस तरह की आवासीय और कमर्शियल इमारतें कम ही मिलेंगी जिनमें विकलांगों की व्हीलचेयर को लिफ्ट के अंदर लेकर जाया जा सकता है। लिफ्ट में इतना कम स्पेस रहता है कि व्हीलचेयर को उसके अंदर लेकर जाना मुमकिन नहीं होता। बाथरूम और किचन में कैबिनेट इतनी ऊंचाई में होते हैं कि दिव्यांग शख्स के लिए उनका इस्तेमाल करना बेहद कठिन होता है। इस तरह के मसलों को देखने की जरूरत है। अमेरिका में उन्हीं रियलटर्स को दिव्यांगों को घर मुहैया करवाने की इजाजत दी जाती है, जो इसके लिए योग्य और प्रशिक्षित हैं लेकिन, भारत में ऐसा कोई कानून नहीं है।

भारत में मानसिक और शारीरिक तौर पर विकलांग लोगों को रोजाना किसी न किसी तरह के भेदभाव का सामना करना ही पड़ता है। 2011 के आंकड़ों के मुताबिक भारत में करीब दो करोड़ 60 लाख विकलांग हैं। हालांकि गैर-सरकारी संगठनों के मुताबिक इनकी संख्या और बढ़ी है और यह छह और सात करोड़ के बीच हैं। संबंधित सरकारी महकमों को सुनिश्चित करना चाहिए ताकि बिल्डर और आर्किटेक्ट दिव्यागों के मन-माफिक ही इमारतें खड़ी करें। दिव्यांगों को देश के बाकी नागरिकों की तरह देखा जाना चाहिए। उन्हें अहसानों की जरूरत तो नहीं पर सामाजिक सम्मान के वे अवश्य ही हकदार हैं। पेरिस पैरालंपिक के विजेताओं को भी उसी तरह से पुरस्कृत किया जाये, जैसे ओलंपिक खेलों के विजेता हुए हैं।देश में 16 किस्म की मान्य विकलांगता वें हैं। विकलांगों के आवास के लिए विशेष योजना बनाने की जरूरत है। व्हीलचेयर पर चलने वाली आबादी का मानना है कि कहीं भी प्रवेश की अगमता सुविधा होना अत्यंत महत्वपूर्ण है।एक विकलांग व्यक्ति को अपने घर से बाहर लाने, कॉलेज या दफ्तर जाने के लिए, बस पकड़ने, शॉपिंग कांप्लेक्स जाने या अन्य सार्वजनिक इमारतों में प्रवेश की वैसी ही सुविधा होनी चाहिए, जैसी सामान्य लोगों के लिए होती है। देश में स्थिति यह है कि अधिकतर स्थानों पर विकलांग व्यक्ति आसानी से जा ही नहीं सकते हैं।

अगर पश्चिम की देशों की बात करें तो वहां पर सार्वजनिक भवनों के गेट बहुत भारी-भरकम नहीं होते, जिससे कि व्हीलचेयर पर बैठा व्यक्ति भी बिना किसी अन्य सहायता के स्वयं ही सुगमता से आ-जा सकता है। सभी प्रसाधन स्थान भी इन सुविधाओं को ध्यान में रख बनाए गए हैं। लिफ्ट में खासतौर पर ऑपरेशनल स्विचों को नीचे की तरफ लगाया जाता है, जिससे विकलांग व्यक्ति को परेशानी का सामना न करना पड़े। पेरिस पैरालंपिक देश के लिए एक संदेश भी है कि हमें दिव्यांगों को उनके हकों को देना ही होगा।

आज का राशिफल

[illegible]

मेष

काम की भागदौड़ के कारण परिजनों के प्रति ध्यान नहीं दे पाएंगे। हानिकर विचार, वर्तन और आयोजन से दूर रहें। पेट से संबंधित परेशानी हो सकती है। कहीं जाने का कार्यक्रम आज हो सकें, तो टाल दें। सरकारी कार्यों में सफलता प्राप्त होगी।

वृष

आपके लिए आज का दिन शुभफलदायी होगा। विविध क्षेत्रों में मिलने वाले लाभ से आपकी प्रसन्नता में वृद्धि होगी। मित्रों के पीछे खर्च भी होगा और उनसे लाभ भी प्राप्त होगा। किसी प्रवास या पर्यटन स्थल पर जाने से दिन रोमांचक बन जाएगा।

मिथुन

आज आपको अपने उग्र स्वभाव पर संयम रखने की जरूरत है। शारीरिक और मानसिक रूप से शिथिलता का अनुभव होगा। अधिक परिश्रम के बावजूद अपेक्षित सफलता नहीं मिलेगी। संतान के विषय में आपको चिंता हो सकती है।

कर्क

विवाहोत्सुक लोगों को जीवन साथी प्राप्त होने के योग हैं। रुचिकर भोजन प्राप्त होगा। आज का दिन आप के लिए शुभ फलदायी होगा। व्यावसायिक स्थल पर वातावरण अनुकूल रहेगा। काम में सफलता प्राप्त करने में आसानी होगी। पेट से संबंधित परेशानी हो सकती है।

सिंह

आज आप दृढ़ मनोबल और आत्मविश्वास के साथ काम कर सकेंगे। इस काम का फल भी आपको अपेक्षानुसार मिलेगा। सरकारी क्षेत्र में लाभ होगा तथा आर्थिक व्यवहार करने में सफलता प्राप्त होगी।

कन्या

नई परियोजना की शुरुआत के लिए आज दिन शुभ है। सरकार की ओर से लाभ मिलने संभावना है। छोटे प्रवास का आयोजन हो सकता है। दोस्तों, करीबियों या पड़ोसियों के साथ पुरानी अनबन की घटना में सकारात्मक परिणाम आएगा। मायके से लाभदायी समाचार प्राप्त होंगे।

तुला

क्रोध की मात्रा अपेक्षाकृत अधिक रहेगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। आज आपके अहम को कोई चोट न पहुंचे और आपका किसी से झगड़ा न हो, इसका ध्यान रखें। शारीरिक रूप से शिथिलता और मानसिक रूप से चिंता बनी रहेगी।

वृश्चिक

पारिवारिक वातावरण अनुकूल नहीं रहेगा। परिजनों के साथ गलतफहमी न हो इसका ध्यान रखें। अभ्यास में अभिरुचि होते हुए भी विद्यार्थियों को अपेक्षित परिणाम नहीं प्राप्त होगा। अनैतिक प्रवृत्तियों से दूर रहें। धन का अधिक खर्च होगा।

धनु

आज आप में आत्मविश्वास की अधिकता रहेगी। किसी भी काम को करने के लिए जल्दबाजी से नुकसान हो सकता है। पिता और बड़ों से लाभ होगा। सामाजिक रूप से मान-सम्मान में वृद्धि होगी। वाणी और व्यवहार उग्रता न हो, इसका ध्यान रखें।

मकर

नौकरी में पदोन्नति होगी। गृहस्थ जीवन में भी आनंद का वातावरण छाया रहेगा। व्यापार के उद्देश्य से कहीं बाहर भी जाना हो सकता है। आज स्वास्थ्य कुछ नरम-गरम रहने की संभावना है। शारीरिक रूप से आलस्य की भावना रहेगी।

कुंभ

मित्रों और स्वजनों के साथ वैचारिक स्तर पर मनमुटाव हो सकता है। स्वभाव में उग्रता और क्रोध की भावना रहेगी। धार्मिक काम में धन का खर्च होगा। धन का आकस्मिक व्यय हो सकता है। विवाद या झगड़े से हर संभव दूर रहें।

मीन

आर्थिक दृष्टिकोण से सावधानी बरतने का समय है। आज नकारात्मक मानसिकता के साथ व्यवहार न करें। शारीरिक और मानसिक रूप से आप अस्वस्थ रहेंगे। मन में दुख और असंतोष की भावना हो सकती है। आंखों में पीड़ा होने की संभावना है।

शख्सियत

कुछ लोगों का जीवन भी बड़ा ही अद्भुत होता है वे अपने लिए कभी जी ही नहीं पाते उनका अपना मूल्य दूसरा ही जान पाते हैं,ऐसी ही शख्सियत समाज में सेवा का बीड़ा उठाकर अपने कर्तव्य को करने से पीछे नहीं हटते हैं ऐसे ही लोग समाजसेवी कहलाते हैं

बनवारी लाल सिंघल
(पूर्व विधायक)

नमस्कार मित्रों हमारी आज की शख्सियत कॉलम के स्टार हैं पूर्व शहर विधायक बनवारी लाल सिंघल जोकि इस समय वर्तमान में वैश्य महा सम्मेलन के प्रदेश अध्यक्ष व बीजेपी प्रदेश कार्य समिति सदस्य पद को सुशोभित कर रहे हैं। 4 अगस्त 1964 अलवर में जन्में बनवारी लाल ने ख्याति इतनी पाई कि एक बार तो पूरे राजस्थान में इनका नाम ऊर्जा के साथ लिया जाने लगा। साधारण परिवार में जन्में पढ़ाई पूरी की और 1984 में रामगढ़ चले गए वहा मेडिकल स्टोर खोला मगर लग गए गाय बचाने में । जैसे ही सूचना गौ तस्करों के गाय ले जाने की सूचना मिलती अपनी दुकान छोड़कर गाय बचाने में निकल जाते और गौ तस्करों से सीधा मुकाबला कर गायों को मुक्त करवाते।

रामगढ़ में बीजेपी के मंडल अध्यक्ष के रूप में राजनीति में प्रवेश किया। दो बार रघुवर दयाल जी जो एमएलए रहे उनके चुनाव में काम किया। 1993 में ज्ञान देव आहूजा जी टिकट लेकर आए तो उनके चुनाव में काम किया। उसके बाद अलवर आ गए और संघ में शामिल हो गए। वर्ष 2004 में विश्व हिंदू परिषद में नगर अध्यक्ष के दायित्व पर अलवर में काम किया जिसमें मुंसा खेड़ा में हिंदू हत्याकांड में लीड रोल अदा किया और विश्व हिंदू परिषद के जिला अध्यक्ष का कार्य संभालते हुए हिंदुत्व पर बड़ा काम किया जिनमें चुहड़ सिद्ध में पशु बलि बंद करवाई।

रामगढ़ और तिजारा में बड़ी मात्रा में गौ तस्करों द्वारा गौ हत्या मामले को पुरजोर तरीके से उठाकर उसके लिए टास्क फोर्स तैनात करवाने में सफलता हासिल की। अलवर में हिंदुत्व के मामलों में काम करते हुए वर्ष 2008 में विश्व हिंदू परिषद से बीजेपी में प्रवेश किया और टिकट लाकर चुनाव लडा और कांग्रेस के कब्जे में चली आ रही अलवर की सीट पर बीजेपी की विजय हासिल की। वर्ष 2008 में जब कांग्रेस के कब्जे से बीजेपी को अलवर सहित 3 सीट से 7 सीट पर विजय हासिल हुई।

संघर्ष से सफलता तक:-जीवन में संघर्षों की पुस्तक लिखते हुए, अपने ही शहर के अपनों के आशीर्वाद से पुष्पित होते हुए विधानसभा तक का सफर, वो भी ऐतिहासिक। प्रारंभिक जीवन कठोरतम संघर्ष के साथ। जीवन का मध्य भाग इस जुनून के साथए कि राजनेता और राजनेताओं के निर्माता के मध्य का अंतर समाप्त करना है। उच्च राजनीतिक आदर्शों की स्थापना करने के इरादे से कुछ पूर्व के वरिष्ठ राजनेताओं की कार्यशैली का अनुसरण कर आमजन को सीधे न्याय और सहायता दिलवाने का मजबूत संकल्प लेकर कार्य करना आदत रहा। अधिकारी हों या कर्मचारी, आमजन के लिए सीधे कॉन्फ्रेंस कॉल के माध्यम से त्वरित न्याय कर सहायता उपलब्ध करवाना। विप्र, धेनु यानि गौमाता, सुर यानि सज्जन वृंद व संतों की सेवा का भाव लेकर सांस्कृतिक मूल्यों को सहेजने की उत्कंठा। सदैव कुछ न कुछ नया सीखने की लालसा और फिर जो जनहित का लगे उसे लागू करवाने की प्रबल इच्छाशक्ति। जीवन पारदर्शितापूर्ण हो, किसी को मिलने या संपर्क करने के लिए किसी मध्यस्थ की आवश्यकता नहीं पड़े ऐसी सहज सुलभता को स्थापित किए जाने का प्रयास करते हुए 10 वर्ष का विधायक कार्यकाल विकास और कानून व्यवस्था की मजबूत व्यवस्था स्थापित की। इनकी शख्सियत में एक बात यहां जोडना चाहूंगा कि कहीं भी कोई संकट आया तो कई बार तो ये पुलिस व मीड़िया से पहले पहुँच गए। दैनिक बढ़ता राजस्थान की टीम इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करती है।

जय हिन्द
रूपक शर्मा

आज का इतिहास

13 सितंबर की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ

- फ्रांस के राजा लुई14वें ने 1791 मेंनया संविधान अंगीकार किया।
- एंग्लो-मिस्र युद्धः तेल अल केबिर की लड़ाई 1882 में लड़ी गई।
- पोलिश संसद द्वारा जिडायनिया बंदरगाह निर्माण अधिनियम 1922 में पारित कर दिया गया।
- लिबिया के एल अजिजिया में धरती पर तब तक का उच्चतम तापमान दर्ज किया गया। छाया में मापा गया यह तापमान 136.4 डिग्री एफ (58 डिग्री सी) था।
- स्पेन में 1923 को सैन्य तख्ता पलट। मिगेल डे प्रिमो रिवेरा ने सत्ता संभाली और तानाशाह सरकार की स्थापना की। ट्रेड यूनियनों को 10 साल के लिए प्रतिबंधित कर दिया गया।
- लाहौर जेल में 1929 को भूख हड़ताल के 63 दिनों के बाद जतिन दास की मौत हो गई।
- प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु ने 1947 में 40 लाख हिंदुओं और मुसलमानों के पारस्परिक स्थानांतरण का सुझाव दिया।
- उप प्रधानमंत्री वल्लभ भाई पटेल ने 1948 में सेना को हैदराबाद में घुस कर कार्रवाई करने और उसे भारतीय संघ के साथ एकीकृत करने का आदेश दिया।
- अल्बानिया 1968 में वारसॉ संधि से अलग हुआ।
- भारत के विश्वनाथन आनंद ने 2000 को शेनयांग में पहला फिडे शतरंज विश्व कप जीता।
- ओसामा बिन लादेन को 2001 में पकड़ने हेतु अमेरिका द्वारा पाकिस्तान पर दबाव डाला गया।
- इस्रायल ने 2002 में फिलिस्तीन अधिकृत गाजा पट्टी पर हमला किया।
- सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता हेतु समर्थन देने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका ने 2005 में मानकों की घोषणा की।
- इब्सा (भारत-ब्राजील-साउथ अफरीका त्रिगुटीय संगठन) का पहला शिखर सम्मेलन 2006 में ब्राजील की राजधानी ब्रासीलिया में शुरू।

विशेष आलेख

भारत से नफरत रखने वाली अमेरिका की सांसद से राहुल गाँधी का मिलने का औचित्य!

रामस्वरूप रावतसरे

अमेरिकी दौरे पर गए कॉन्ग्रेस नेता राहुल गाँधी ने जिन लोगों से मुलाकात की है, उनमें इल्हान उमर भी शामिल हैं। उमर अमेरिकी संसद के निचले सदन की सदस्य हैं। इस्लामपरस्ती ही उनकी पहचान है। भारत और हिंदुओं से घृणा को लेकर अक्सर चर्चा में रहती हैं। इल्हान उमर अमेरिकी सांसदों के उस समूह का हिस्सा थीं जिसने वाशिंगटन डीसी के रेबर्न हाउस में कॉन्ग्रेस नेता के साथ बैठक की। इसकी मेजबानी अमेरिकी सांसद ब्रेडली जेम्स शेरमन ने की। उमर के अलावा इस बैठक मे सांसद जोनाथन जैकसन, रो खन्ना, राजा कृष्णमूर्ति, बारबरा ली, श्री थानेदार, जीसस जी ग्रासिया, हैंक जॉनसन और जैन शाकोवस्की भी शामिल थे। न्यूज एजेंसी एएनआई के अनुसार सूत्रों ने बताया है कि राहुल गाँधी ने अमेरिकी राजनयिक डोनाल्ड लू से भी मुलाकात की है। डोनाल्ड लू को तिकड़मों से दूसरे देशों की सरकार गिराने के लिए जाना जाता है। अमेरिकी विदेश विभाग ने बताया है कि डोनाल्ड लू 10-16 सितंबर के बीच भारत और बांग्लादेश की यात्रा करेंगे।

विपक्ष का नेता बनने के बाद राहुल गाँधी की यह पहली अमेरिकी यात्रा है। इस दौरान उन्होंने अपने ही देश और उसकी सरकार को बदनाम करने के लिए कई प्रोपेगेंडा को विदेशी जमीन से हवा दी है। यहाँ तक कि खालिस्तानी आतंकियों के सुर में सुर मिलाते हुए यह बताने की कोशिश की है कि भारत में सिखों को पगड़ी पहनने की इजाजत नहीं है। उन्हें गुरुद्वारा नहीं जाने दिया जा रहा है। इन बयानों के बाद राहुल गाँधी की इल्हान उमर और डोनाल्ड लू के साथ मुलाकात भी विवादों में आ गई है। यदि उमर और लू के अतीत पर गौर करें तो यह मुलाकात भारतीय हितों के अनुकूल नहीं लगती है। भाजपा के प्रवक्ता प्रदीप भंडारी का कहना है कि इल्हान उमर के साथ मुलाकात से स्पष्ट है कि राहुल गाँधी भारत विरोधी लोगों के साथ हैं। कॉन्ग्रेस नेता ऐसे लोगों के साथ खड़े होकर उनका मनोबल बढ़ाते हैं। जैसे भारत में संसद के उच्च सदन को राज्यसभा और निचले सदन को लोकसभा कहते हैं, उसी तरह अमेरिका में उच्च सदन को सीनेट और निचले सदन को प्रतिनिधि सभा या हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव कहते हैं। इल्हान उमर, अमेरिकी संसद के निचले सदन की सदस्य हैं। डेमोक्रेटिक पार्टी से नाता रखती हैं। अफ्रीकी मूल की इस अमेरिकी महिला सांसद के बयानों में भारत के प्रति घृणा और पाकिस्तानपरस्ती साफ दिखती है। वे पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर का दौरा कर चुकी हैं। तब आतंकियों को संरक्षण देने वाले पाकिस्तान ने उनका जोरदार स्वागत किया था। हालाँकि, भारत की क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता का उल्लंघन करने वाली अमेरिकी सांसद के इस दौरे का ना केवल भारत, बल्कि अमेरिका ने भी विरोध किया था। भारत ने उनकी इस यात्रा को निंदनीय बताया, जबकि अमेरिका के जो बाइडन प्रशासन ने उनके पीओके दौरे को व्यक्तिगत गतिविधि बताकर खुद को उनसे अलग कर लिया था। इल्हान उमर की पैदाइश सोमालिया की है। कट्टरपंथी इस्लामी विचार रखती हैं। हालिया पाकिस्तान दौरे में इमरान खान से मिलीं। उनकी जमकर तरीफ की। इमरान ने भी उमर की 'इस्लामोफोबिया के मुद्दों पर साहसी और सैद्धांतिक रुख' की सराहना की। उन्होंने पाकिस्तान के राष्ट्रपति सुल्तान महमूद चौधरी और पाकिस्तान के नए प्रधानमंत्री शाहबाज शरीफ से भी मुलाकात की और जम्मू-कश्मीर में मानवाधिकारों के कथित उल्लंघन पर चर्चा की। इसके बाद भारतीय विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने उमर को एजेंडावादी बताते हुई जबर्दस्त फटकार लगाई थी। उन्हें संकीर्ण सोच वाली नेता बताते हुए कहा कि भारत क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता का उल्लंघन बर्दाश्त नहीं करेगा। इल्हान उमर के बारे में बताया जाता है कि वो पहली अफ्रीकी शरणार्थी हैं, जो चुनाव जीतकर अमेरिकी संसद में पहुँची हैं। उमर 2019 मे मिनिसोटा से सांसद चुनी गई थीं। इस संसदीय सीट से चुनाव जीतने वाली वह पहली अश्वेत महिला हैं। साथ ही, अमेरिकी संसद पहुँचने वाली पहली दो मुस्लिम-अमेरिकी महिलाओं में भी शामिल हैं। उमर के परिवार ने गृहयुद्ध के कारण सोमालिया छोड़ दिया था, उस वक्त उमर महज आठ वर्ष की थीं। उनके परिवार ने कैन्या के शरणार्थी शिविर में चार साल बिताए और फिर 1990 के दशक मे अमेरिका आए। दादा ने उमर को उनकी किशोरावस्था में ही राजनीति में करियर बनाने के लिए प्रेरित किया। वह 2016 में चुनाव जीतकर मिनिसोटा की प्रतिनिधि सभा पहुँची और तीन साल बाद 2019 में वो अमेरिकी संसद के लिए चुनी गईं। सोमालिया में ही पैदा हुई मानवाधिकार कार्यकर्ता अयान हिरसी अली ने 12 जुलाई 2019 को वॉल स्ट्रीट जर्नल में लिखे लेख में कहा था, किसी के मन में किसी के प्रति प्रति नफरत घर कर जाए तो उससे उबरना मुश्किल होता है। इल्हान उमर के साथ भी यही बात लागू है। अयान के मुताबिक, इल्हान उमर उन मुस्लिमों मे शामिल हैं, जो दुनिया में जो भी गलत हो रहा है, उसके लिए एकमात्र दोषी यहूदियों को मानती हैं। उनमें गैर-मुसलमानों के प्रति भी नफरत कूट-कूटकर भरी है, क्योंकि उन्हें बचपन से यही सिखाया गया है। वहीं, भारत में काफी चर्चित पाकिस्तानी मूल के लेखक और पत्रकार तारेक फतेह भी इल्हान उमर को भारत विरोधी कट्टर इस्लामवादी करार दे चुके हैं। इल्हान उमर के बारे में यह भी कहा जाता है कि वह बातें स्वतंत्रता-समानता की करती हैं, लेकिन कट्टर इस्लाम के प्रति उनका झुकाव साफ-साफ झलकता है। वे बुर्का, हिजाब की जबर्दस्त पैरोकार हैं। उन्होंने ही अमेरिकी प्रतिनिधि सभा में वैश्विक स्तर पर इस्लामोफोबिया से लड़ने के लिए विशेष प्रतिनिधि का पद सृजित करने का प्रस्ताव पेश किया, जिसे सदन की मंजूरी भी मिल गई। लेकिन, उनके इस कदम की रिपब्लिकन पार्टी के टिकट पर अमेरिकी कॉन्ग्रेस का चुनाव लड़ चुकी एक और मुस्लिम नेता डालिया अल-अकिदी ने जबर्दस्त विरोध किया था। उन्होंने अरब न्यूज मे एक लेख लिखकर पूछा है कि क्या इस्लाम के नाम पर आतंकी वारदातों को अंजाम देने वालों को मुस्लिम आतंकी कहना भी इस्लामोफोबिया के दायरे में आएगा? अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एक चुनावी रैली में इल्हान उमर पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा था, इल्हान उमर को अमेरिका, यहाँ के शासन-प्रशासन और यहाँ के लोगों से नफरत है। वह हमारे देश से घृणा करती हैं। वह ऐसी जगह से आई हैं जहाँ सरकार है ही नहीं और यहाँ आकर हमें ही ज्ञान दे रही हैं कि अपना देश कैसे चलाना चाहिए?

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक व प्रकाशक श्रीमती कल्पना विजयवर्गीय द्वारा बढ़ता राजस्थान प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं प्रकाशित, संपादक- प्रधान संपादक- ताराचन्द विजयवर्गीय मो. 9414242258, 9214048888, जयपुर फोन नं.0141-2796794, टोंक कार्यालय-बाईपास निवाई, टोंक फोन नं.01432-244881 निवाई 01438-222201,202,203 अलवर कार्यालय, कोटा कार्यालय ई मेल-badhatarajasthan@yahoo.com *पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार

बिज़नेस स्टैंडर्ड
वर्ष 17 अंक 179

नई पहल से मिलेगी मदद

देश में इलेक्ट्रिक व्हीकल (ईवी) के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए केंद्र सरकार ने बुधवार को दो योजनाओं को मंजूरी दी और इनके लिए 14,000 करोड़ रुपये का आवंटन किया गया। देश में कार्बन उत्सर्जन में कमी लाने के लिए ईवी को प्रोत्साहन देना जरूरी है। द पीएम इलेक्ट्रिक ड्राइव रिवॉल्यूशन इन इनोवेटिव व्हीकल एनहैंसमेंट (पीएम ई-ड्राइव) योजना के लिए 10,900 करोड़ रुपये का आवंटन किया गया जो अगले दो वर्षों में फास्टर एडाप्शन ऐंड मैन्युफैक्चरिंग ऑफ (हाइब्रिड एंड) इलेक्ट्रिक व्हीकल्स (फेम) को प्रतिस्थापित करेगी। फेम की शुरुआत 2015 में 900 करोड़ रुपये की आरंभिक पूंजी की मदद से की गई थी। इस योजना का दूसरा संस्करण जो गत वित्त वर्ष समाप्त हुआ उसमें 11,500 करोड़ रुपये का बजट आवंटित किया गया था। उम्मीद है कि नई योजनाएं देश में ईवी को अपनाए जाने की दिशा में मददगार होंगी और पिछली पहलों की कामयाबी को आगे ले जाएंगी। चूंकि ईवी की आरंभिक लागत पेट्रोल-डीजल इंजनों की तुलना में अधिक होती है इसलिए उसे अपनाने के लिए राजकोषीय समर्थन जरूरी माना जाता है।

पीएम ई-ड्राइव योजना की मदद से 24.7 लाख इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहनों, 3.16 लाख इलेक्ट्रिक तिपहिया वाहनों और 14,028 ई बसों को मदद मिलने की उम्मीद है जिन्हें करीब 3,679 करोड़ रुपये का प्रोत्साहन दिया जाएगा। इस योजना के तहत इलेक्ट्रिक ट्रक और इलेक्ट्रिक एंबुलेंस को बढ़ावा देने के लिए 500 करोड़ रुपये प्रत्येक की राशि आवंटित की गई है जबकि 200 करोड़ रुपये का आवंटन 74,000 सार्वजनिक चार्जिंग स्टेशनों के लिए किया गया है। इसके अलावा पीएम-ईबस सेवा-पेमेंट सिक्युरिटी मैकेनिज्म (पीएसएम) योजना के लिए 3,435.33 करोड़ रुपये का आवंटन किया गया है और यह सार्वजनिक परिवहन प्राधिकरण से ई बसों की खरीद और संचालन पर ध्यान केंद्रित करेगी। योजना के तहत चालू वर्ष से लेकर 2028-29 तक 38,000 इलेक्ट्रिक बसें शुरू की जानी हैं। योजना के तहत शुरुआती दिन से अगले 12 वर्षों तक बसों के परिचालन में भी मदद करेगी।

इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहनों की मदद के अलावा इस बार वाणिज्यिक स्तर पर ईवी को अपनाने पर भी जोर है। उदाहरण के लिए इस बार इलेक्ट्रिक कारों के लिए कोई प्रावधान नहीं है। वाणिज्यिक वाहनों पर ध्यान देना समझ में आता है और राजकोषीय समर्थन अधिक मूल्यवान साबित हो सकता है क्योंकि वाणिज्यिक वाहन अधिक प्रदूषण फैलाते हैं। उदाहरण के लिए अगर राजधानी में अधिक इलेक्ट्रिक ट्रक माल लेकर आएंगे तो इससे काफी राहत मिलेगी। इसी प्रकार इलेक्ट्रिक बसें भी देश के कई शहरों के यातायात के कारण होने वाला प्रदूषण कम करेंगी क्योंकि वे डीजल से चलने वाली बसों का स्थान लेंगी। सार्वजनिक परिवहन को बजट समर्थन महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इनमें से अधिकांश घाटे में हैं और इस स्थिति में नहीं हैं कि वे अहम निवेश कर सकें। ऐसे में यह महत्त्वपूर्ण है कि उनका योगदान सीमित रहे। चार्जिंग स्टेशन पर ध्यान देना भी जरूरी है। इसी समाचार पत्र में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार एक ईवी चार्जिंग कंपनी ने भारतीय डाक सेवा के साथ मिलकर हैदराबाद के एक पोस्ट ऑफिस में ईवी चार्जिंग स्टेशन शुरू किया। ऐसे और प्रयासों को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। डाक घर प्रायः शहरों में प्रमुख स्थानों पर मौजूद हैं और वहां उपलब्ध जमीन पर ईवी चार्जिंग स्टेशन की स्थापना उपयुक्त हो सकती है।

पीएम ई-ड्राइव योजना में एक नई विशेषता होगी खरीदारों के लिए आधार प्रमाणित ई-वाउचर। खरीदारों को ये वाउचर भारी उद्योग मंत्रालय द्वारा जारी किए जाएंगे और खरीदार को इस पर हस्ताक्षर करके डीलर के पास जमा करना होगा। डीलर इस पर हस्ताक्षर करके मांग संबंधी प्रोत्साहन पाने के लिए अपलोड करेगा। यह पहल वास्तविक लाभार्थी को चिह्नित करने में मदद करेगी लेकिन यह सुनिश्चित करना जरूरी होगा कि प्लेटफार्म सुचारु रूप से काम करे और फंड जल्दी स्थानांतरित हो सकें। इसमें बाधा और देरी से डीलर प्रभावित हो सकते हैं और ईवी की बिक्री पर असर पड़ सकता है। सफल शुरुआत के लिए सरकार को स्वदेशीकरण और मूल्य सीमा तय करने जैसे मुद्दों से सावधानी से निपटना चाहिए। पिछली योजना को इन विषयों ने प्रभावित किया था।

अजय मोहंती

बजट में बढ़ती जानकारी और राजकोषीय सूझबूझ

इस वर्ष के बजट में एक नया वक्तव्य शामिल किया गया है, जो पारदर्शिता बढ़ाने की दिशा में स्वागत योग्य कदम है। विस्तार से बता रहे हैं ए के भट्टाचार्य

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने गत 23 जुलाई को 2024-25 का बजट पेश किया और संसद ने उसे 8 अगस्त को मंजूरी दे दी। इस बजट में वित्त मंत्री ने एक नई और अहम जानकारी दी, जिसकी लगभग अनदेखी ही कर दी गई। यह जानकारी या खुलासा बजट के व्यय दस्तावेज के वक्तव्य क्रमांक 27-ए में दिया गया है।

इसे उसी दस्तावेज में शामिल वक्तव्य क्रमांक 27 समझने की भूल न करें, जिसमें केंद्र सरकार द्वारा पूरी तरह निपटाए जाने बॉन्ड और राष्ट्रीय लघु बचत कोष (एनएसएसएफ) से ऋण लेकर चलाई जा रही योजनाओं और धनराशियों का जिक्र होता है। इन्हें बाद में सरकारी खजाने से चुकाया जाता है। यह अलग बात है कि पिछले दो वर्षों में सूझबूझ के साथ हो रहे राजकोषीय प्रबंधन के कारण 2021-22 के बाद से ऐसे ऋण या बॉन्ड का सहारा नहीं लेना पड़ा है।

किंतु वक्तव्य 27 को व्यय दस्तावेज में फिर भी रखा गया है, जो 2016-17 से 2021-22 तक की गई राजकोषीय गलती की याद दिलाता है। ध्यान रहे कि बॉन्ड और एनएसएसएफ से लिए गए ऋण को राजकोषीय जवाबदेही और बजट प्रबंधन (एफआरबीएम) अधिनियम के तहत सरकारी कर्ज का हिस्सा माना जाता है। दूसरे शब्दों में उनकी मदद लेने से सरकार को वास्तव में हुए राजकोषीय घाटे पर पर्दा पड़ जाता है।

इससे भी बुरी बात यह है कि मार्च 2019 तक के बजट में इन बॉन्ड या ऋण का कोई जिक्र नहीं किया गया था। 2019-20 के बजट में पहली बार व्यय दस्तावेज में वक्तव्य क्रमांक 27 दिखाई दिया था। इसके साथ ही ऐसे मामलों में पारदर्शिता के संबंध में जागरूकता बढ़ी। अगले दो सालों में वित्त मंत्रालय ने सचेत प्रयास किए कि ऐसे बॉन्ड और ऋण की कम से कम मदद ली जाए। 2022-23 में यह मदद लेनी बंद भी कर दी गई।

2016-17 से 2021-22 तक छह वर्षों के दौरान केंद्र सरकार ने बॉन्ड और एनएसएसएफ ऋण के जरिये करीब 6 लाख करोड़ रुपये जुटाए। इसमें से करीब 4.61 लाख करोड़ रुपये एनएसएसएफ ऋण से आए थे और बॉन्ड की हिस्सेदारी करीब 1.37 लाख करोड़ रुपये थी। परंतु पिछले दो वर्षों में सरकार ने इस रकम का तेजी से निपटान किया और एनएसएसएफ का पूरा ऋण चुका दिया। अब सरकारी खजाने पर केवल 1.37 लाख करोड़ रुपये की देनदारी बची है। यह राजकोषीय सूझबूझ सराहनीय है।

तकरीबन ऐसी ही समझदारी और पारदर्शिता दिखाते हुए 2024-25 के बजट दस्तावेज में पहली बार वक्तव्य क्रमांक 27-ए पेश किया गया जिसमें चुनिंदा सरकारी कंपनियों द्वारा बजट से इतर जुटाए गए संसाधनों का ब्योरा शामिल है। ये कंपनियां हैं भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग (एनएचएआई) और इंडियन रेलवे फाइनेंस कॉरपोरेशन (आईआरएफसी)।

इन दोनों कंपनियों द्वारा जुटाए गए संसाधन देनदारी हैं, लेकिन एफआरबीएम अधिनियम के तहत उन्हें केंद्र सरकार का कर्ज नहीं माना जाता है। फिर भी वित्त मंत्रालय ने इन उधारियों को अतिरिक्त जानकारी के रूप में सार्वजनिक पटल पर रखा। इससे पता चलता है कि वित्त मंत्रालय राजकोषीय सूझबूझ को कितनी गंभीरता के साथ ले रहा है।

उदाहरण के लिए एनएचएआई की स्थापना भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण अधिनियम के तहत की गई थी। यह बाजार से धन उधार लेता है और टोल संग्रह तथा अन्य प्रकार की आय से उसे चुकाता है। इसी प्रकार आईआरएफसी भारतीय रेल के साथ पट्टे वाली अपनी व्यवस्था के जरिये धन जुटाती है ताकि रेलवे की रोलिंग स्टॉक की जरूरतें पूरी की जा सकें।

इसमें केंद्र के खजाने के लिए वित्तीय जोखिम साफ नजर आते हैं। अगर एनएचएआई अपना कर्ज चुकाने के लिए टोल से पर्याप्त कमाई नहीं कर पाया तो उसे उबारने के लिए केंद्र सरकार को ही आगे आना होगा। इसका बोझ सरकारी खजाने पर ही पड़ेगा। इसी तरह आईआरएफसी धन की कमी के कारण बॉन्डधारकों को रकम नहीं दे पाई या कर्ज नहीं चुका पाई तो उसकी भरपाई रेल मंत्रालय को ही करनी होगी। अगर एनएचएआई और आईआरएफसी की बकाया देनदारी तेजी से बढ़ती है तो जोखिम और अधिक हो जाएगा। 2019-20 में एनएचएआई और 2020-21 में आईआरएफसी की देनदारी बढ़ते हुए हम देख ही चुके हैं। 2013-14 में एनएचएआई की बकाया देनदारी 23,356 करोड़ रुपये थी, जो 2019-20 में नौ गुना बढ़कर 2.48 लाख करोड़ रुपये हो गई। आईआरएफसी की बकाया देनदारी 2013-14 के 76,539 करोड़ रुपये से बढ़कर 2020-21 में 4.09 लाख करोड़ रुपये हो गई। बीते कुछ वर्षों में दोनों की बकाया देनदारी में इजाफे की गति काफी धीमी हुई है और उनकी सालाना शुद्ध अतिरिक्त उधारी भी घटी है। इसमें संदेह नहीं है कि बजट दस्तावेज में शामिल करने से इसके प्रति जागरूकता बढ़ेगी और उन लोगों को सावधानी बरतने का संदेश मिलेगा, जो आगे चलकर केंद्र में लोक वित्त संभालेंगे।

सावधानी का संदेश आवश्यक है क्योंकि अतीत में अक्सर सरकारें खजाने को हुआ वास्तविक घाटा छिपाने के लिए राजकोषीय बाजीगरी करती रही हैं। 1987 में अपना इकलौता बजट पेश करते हुए राजीव गांधी ने तेल पूल खाते में मौजूद अतिरिक्त रकम को खामोशी से सरकार की व्यय पूर्ति में इस्तेमाल कर लिया था। यह घाटे को कम दिखाने का चतुराई भरा लेकिन राजकोषीय दृष्टि से नासमझी भरा कदम था। कई वर्ष बाद संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन सरकार के वित्त मंत्री पलनिअप्पन चिदंबरम और उनके बाद आए प्रणव मुखर्जी ने 2005 से 2010 के बीच तेल कंपनियों को कीमत नहीं बढ़ाने के कारण हुए घाटे की भरपाई सीधे सब्सिडी देकर नहीं की बल्कि 1.34 लाख करोड़ रुपये के तेल बॉन्ड जारी कर दिए। उर्वरक कंपनियों के लिए भी इसी वजह से उर्वरक बॉन्ड जारी किए गए। इस तरह के बॉन्ड जारी करने की कोई जानकारी 2008-09 तक बजट में नहीं दी गई।

खुशकिस्मती से 2010-11 में यह राजकोषीय नासमझी बंद हो गई। परंतु खजाने पर इन बॉन्ड का बोझ ब्याज की शक्ल में आया, जो एक के बाद एक सरकारों को परेशान करता रहा। वर्तमान सरकार को भी यह बोझ उठाना पड़ा है। मोदी सरकार ने भी सरकारी बैंकों के पुनर्पूंजीकरण के लिए बॉन्ड जारी किए, जिस पर सवाल खड़ा किया जा सकता है। मगर उसने कम से कम खुलासा तो किया है और सभी को बताया है कि ब्याज और मूलधन चुकाने में अगले कुछ वर्षों तक कितनी रकम जाएगी। जो भी हो आज के खर्च का बोझ भविष्य के वित्त मंत्रियों और सरकारों पर डालना राजकोषीय दृष्टि से गैर जिम्मेदाराना कदम होता है और बिना जानकारी दिए किया जाए तो और भी नुकसानदेह होता है।

वर्ष 2024-25 के बजट में पहली बार 2023-24 के व्यय एवं प्राप्ति के प्रमुख आंकड़े शामिल किए गए हैं, जो जुलाई में बजट तैयार करते समय आ गए थे। ताजातरीन आंकड़ों का इस्तेमाल सराहनीय है। परंतु बजट दस्तावेज में वक्तव्य 27-ए को शामिल करना और भी सराहनीय है, जबकि एफआरबीएम अधिनियम के मुताबिक ऐसा करने की कोई आवश्यकता नहीं थी।

उम्मीद करनी चाहिए कि यह वक्तव्य आने वाले वर्षों में भी बजट में रहेगा ताकि सरकार और लोक नीति पर टिप्पणी करने वाले बकाया देनदारी में किसी भी अस्वाभाविक उछाल की ओर ध्यान दिला सकें और सरकार इसे चेतावनी मानकर जरूरी कदम उठा सके। वाणिज्यिक गतिविधियों में लगे सरकारी स्वामित्व वाले और भी सांविधिक निकायों की बकाया देनदारी को भी शायद इस वक्तव्य में शामिल किया जाना चाहिए ताकि इसे अधिक ठोस और सार्थक स्वरूप दिया जा सके।

पड़ोसी देशों से खत्म होते मित्रतापूर्ण संबंध

बांग्लादेश की प्रधानमंत्री के तौर पर शेख हसीना के लंबे कार्यकाल के शर्मिंदगी भरे अंत ने देश के भविष्य को अनिश्चितता में झोंक दिया है। इस पूरे घटनाक्रम का एक परिणाम यह भी हुआ है कि दक्षिण एशिया में भारत अलग-थलग पड़ गया है। इस बात पर मतभेद हो सकते हैं कि भारत के नीति निर्माता इतने पुरजोर तरीके से हसीना का समर्थन क्यों करते रहे, जबकि यह स्पष्ट हो चुका था कि उनकी लोकप्रियता तेजी से घट रही है। लेकिन हकीकत यह है कि उन्होंने ऐसा किया और उसी का परिणाम है कि अब भारत-बांग्लादेश संबंध तनावपूर्ण हो गए हैं।

एक देश की सरकार द्वारा दूसरे देश के नेता का खुला समर्थन किया जाना अधिकत मामलों में गलत फैसला हो सकता है, लेकिन इस गलती को ठीक करना भी आसान होता है। किंतु भारत और बांग्लादेश के बीच का रिश्ता कुछ ज्यादा ही पेचीदा है क्योंकि यह इस बात पर निर्भर है कि बांग्लादेश के नागरिक अपने देश के कौन सी विचारधारा चुनते हैं।

बांग्लादेश में भारत को ऐसे निष्पक्ष और तटस्थ पड़ोसी के रूप में देखा जाता है, जो जरूरत पड़ने पर या मदद मांगने पर हर प्रकार के सहयोग के लिए तैयार रहता है। लेकिन वह बांग्लादेश को बराबर का भागीदार मानता है। इससे उस देश के भीतर ऐसा राजनीतिक माहौल बनता है, जिसमें 1971 के जज्बे - सांस्कृतिक आजादी और धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवाद का सम्मान किया जाता है। लेकिन अगर ऐसा राजनीतिक माहौल बनता है, जिसमें भारत को दखल देने वाला खतरा मान लिया जाए तो बांग्लादेश के लोग अपने देश को और अलग-थलग रखना चाहेंगे तथा धार्मिक राष्ट्रवाद की ओर बढ़ेंगे। यह वास्तव में खतरा है क्योंकि निरंकुशता की ओर बढ़ने के बाद भी हसीना सरकार को भारत के स्पष्ट समर्थन ने बांग्लादेश में ऐसे राजनीतिक बदलाव की स्थिति पैदा कर दी, जो आगे जाकर उस देश के साथ हमारे देश को भी नुकसान पहुंचाएगी।

इसलिए यह बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है कि हमारे देश में बांग्लादेश के बारे में अधिकतर चर्चा से कुछ हासिल नहीं हुआ है। भारत जब पड़ोसी देशों में सताए गए लोगों के पक्ष में बोलता है तो अच्छा लगता है। इस बात में भी कोई संदेह नहीं है कि बांग्लादेश के हिंदू समुदायों के कई सदस्यों पर लक्षित हमले किए गए हैं। लेकिन यह बात बेहद अनैतिक लगती है कि जब छात्रों का नरसंहार हुआ तब देश के राष्ट्रीय विमर्श से यह मुद्दा लगभग गायब रहा और अब यह उभर गया है।

नीति नियम

मिहिर शर्मा

बांग्लादेश के साथ अपने संबंध सुधारना हमारे देश की प्राथमिकताओं में जरूर शामिल होना चाहिए। इसके अलावा बांग्लादेश की मौजूदा सरकार को देश में व्यवस्था बहाल करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए और उसकी मदद भी की जानी चाहिए। साथ ही अगले चुनाव स्वतंत्र और निष्पक्ष तरीके से कराए जाने चाहिए क्योंकि पिछले दो चुनाव वास्तव में स्वतंत्र और निष्पक्ष नहीं थे।

भारत के लिए यह बात कहना कुछ मुश्किल हो सकता है क्योंकि पिछले चुनाव निष्पक्ष नहीं होने पर उसने उनके बारे में कुछ भी नहीं कहा था। फिर भी भारत को ऐसा करना चाहिए। बेशक अगला चुनाव भी पर्याप्त समय लेकर कराया जाना चाहिए ताकि नई सरकार को बांग्लादेश के संस्थानों की बेहतरी के लिए काम करने का समय मिल सके। साथ ही सरकार को यह सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त समय भी मिल जाए कि अवामी लीग या लीग की परंपराओं और विचारधारा को लेकर आने वाली कोई भी पार्टी चुनावों में भागीदारी कर सके और वोटों के मामले में अपनी सच्ची ताकत को निष्पक्ष तरीके से परख सके।

तर्क बुद्धि तो यही कहती है कि बांग्लादेश घटनाक्रम के बाद हमारे देश में इस बात पर गंभीर विमर्श होना चाहिए कि हमारी नीतियों में क्या खामियां रही हैं। क्या हमारे निर्णायकों को खतरे की घंटियां सुनाई नहीं दी थीं? हमारी वैकल्पिक योजना क्या थी? क्या बांग्लादेश के विपक्षी दलों के साथ उनका संपर्क बना हुआ था? क्या घटनाक्रम उनके लिए अप्रत्याशित था? लेकिन विमर्श करने के बजाय हम अमेरिका से लेकर पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी तक सभी पर दोष मढ़ने में जुटे हुए दिख रहे हैं।

हालांकि इस वक्त तार्किक विचार नहीं कर पाना पूरी तरह से हैरान नहीं करता। पिछले कुछ वर्षों में मालदीव और नेपाल की सरकारों को भारत विरोधी रुख अपनाने पर अपने देश के भीतर काफी फायदा मिला है। हम इस राजनीतिक उथल-पुथल को कारगर तरीके से संभालने में नाकाम रहे हैं: जब भी हम हस्तक्षेप करते हैं तब वह दखल काफी सख्ती के साथ होता है। हम किसे पसंद करते हैं, यह साफ नजर आ जाता है और इस तरह नजर आता है कि उनके प्रति संदेह बढ़ जाता है। अति राष्ट्रवाद के शिकार हमारे मीडिया के कथ्यों से पड़ोसी देशों की जनता में नाराजगी पैदा हो गई।

जब हम कुछ अच्छा करते हैं- जैसे श्रीलंका को आर्थिक संकट के दौरान वित्तीय मदद करना - तब भी हम उसमें बहुत वक्त लगा देते हैं और जरूरत से ज्यादा किफायती भी बनते हैं। इसके अलावा हम दूसरे पक्ष को इतना झुकने के लिए मजबूर कर देते हैं कि हमारा आभार जताने के बजाय उसके भीतर कड़वाहट की भावना बढ़ने लगती है।

हम अपने पड़ोसी देश के साथ अच्छे संबंध बनाने के लिए अपनी अर्थव्यवस्था के रुतबे का पूरा फायदा भी नहीं उठा पा रहे हैं। बांग्लादेश के साथ व्यापार और कारोबार जितनी तेजी से बढ़ना चाहिए था, उतना नहीं बढ़ पाया है। कुछ पड़ोसी देशों में भारतीय कंपनियों की हमने मदद की मगर कभी-कभार उस मदद के कारण विवाद की स्थिति बन गई है। जिन परियोजनाओं का वादा हमने पड़ोसियों से किया, उनकी प्रगति भी बहुत धीमी है और कई बार लगता है कि इसके कारण स्थानीय स्तर पर भ्रष्टाचार होने लगा।

भूटान को छोड़कर इस वक्त दक्षिण एशिया में भारत के दोस्ताना ताल्लुकात अपेक्षाकृत कम हैं। क्या इससे कोई फर्क पड़ता है? शायद नहीं, क्योंकि भारत बड़ा देश है। लेकिन शायद फर्क पड़ता है। कुछ ही देश हैं, जो पड़ोसियों के साथ मित्रता नहीं होने पर भी अपनी वृद्धि तथा विकास पर ध्यान केंद्रित कर पाए हैं। इस नाकामी के लिए किसे जिम्मेदार ठहराया जाएगा?

आपका पक्ष

चिकित्सा बीमा के नियम सभी के लिए पारदर्शी हों

केंद्र सरकार द्वारा 70 वर्ष से अधिक आयु के नागरिकों को आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के अंतर्गत छह करोड़ नागरिकों को पांच लाख रुपये तक बीमा योजना का लाभ सराहनीय पहल है। केंद्र सरकार ने यह घोषणा सभी नागरिकों और आय वर्ग के लिए समान रूप से की है। यह भी आवश्यक है कि कानूनी रूप से संतान को माता-पिता और परिवार के अन्य वृद्ध जन और अशक्त परिजनों की देखभाल की बाध्यता हो। दीर्घकालिक परिप्रेक्ष्य में सरकार की आर्थिक स्थिति में परिवर्तन होने पर इस योजना में भी बदलाव आ सकता है। ऐसी स्थिति के लिए समाज और प्रशासन को अपनी वैकल्पिक व्यवस्था रखने की आवश्यकता है। सभी सरकारी और निजी अस्पतालों में वृद्ध रोगियों के लिए जेरियाट्रिक्स विभाग हो जहां केवल वृद्ध रोगियों की चिकित्सा नियमित रूप से हो सके। जो वरिष्ठ नागरिक

केंद्र सरकार 70 वर्ष से अधिक आयु के सभी नागरिकों के लिए आयुष्मान योजना के अंतर्गत 5 लाख रुपये तक बीमा सुविधा लाई है

आयुष्मान भारत योजना के लाभ के योग्य न हों उनके लिए सभी निजी अस्पतालों में ओपीडी और इनडोर चिकित्सा के लिए एक निश्चित छूट मिलनी चाहिए। बीमित रोगी की चिकित्सा का खर्च एक बहुत कठिन और कठोर प्रक्रिया है। मेडिकल इंश्योरेंस के नियम भी सभी नागरिकों के लिए पारदर्शी हों और कौन-कौन से इलाज बीमा से कवर हैं, ये शर्तें ठीक नहीं हैं क्योंकि मधुमेह के रोगी को हृदय, लीवर और किडनी की बीमारियां साधारण बात है। इसलिए केवल मधुमेह तक बीमा सीमित करना मेडिकल दृष्टि से भी अनुचित है। समग्र रूप से चिकित्सा बीमा क्षेत्र में व्यवस्था को समावेशी और पारदर्शी तथा रोगियों के लिए हितकर रहना चाहिए।

विनोद जौहरी, दिल्ली

शारीरिक गतिविधि स्वास्थ्य के लिए जरूरी

शारीरिक गतिविधि अच्छे स्वास्थ्य से जुड़ी हुई है यह बात ऐसे समय में सच नहीं हो सकती जब युवा अधिकतम स्क्रीन समय के साथ इलेक्ट्रॉनिक गैजेट का उपभोग करते हैं और बाहरी मनोरंजक गतिविधियों में कम समय बिताते हैं। कड़वी सच्चाई यह है कि भारतीय अपने पड़ोसियों या अपने यूरोपीय समकक्षों की तुलना में फिटनेस बेंचमार्क में भी स्थान नहीं रखते हैं। चाहे जन जागरूकता की कमी के कारण स्थितियां प्रतिकूल हों या उनकी तकनीकी समझ या नियमित व्यायाम के बजाय आराम चाहने वाली मानसिकता के कारण, वास्तविक डेटा चौंकाने वाला है। डेल बर्ग एडवाइजर्स, एशिया पैसिफिक और सोसाइटी एक्सेलेरेटर द्वारा खेल और शारीरिक गतिविधि पर पहला राष्ट्रीय सर्वेक्षण बताता है कि 20 करोड़ भारतीय डब्ल्यूएचओ द्वारा निर्धारित मानक में निष्क्रिय हैं। वयस्कों को सप्ताह में 150 मिनट और बच्चों और किशोरों को प्रतिदिन 60 मिनट की गतिविधि की आवश्यकता होती है। कई एनजीओ और निजी कंपनियां खेलों को प्रोत्साहित कर रही हैं। खेलो इंडिया, योग जैसे भारत सरकार के प्रमुख कार्यक्रम, वर्कआउट के माध्यम से आंतरिक और बाहरी उपचार के मूल्यों को आत्मसात करने के लिए सकारात्मक कदम हैं।

विजय सिंह अधिकारी, नैनीताल

पाठक अपनी राय हमें इस पते पर भेज सकते हैं : संपादक, बिज़नेस स्टैंडर्ड, 4, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली 110002. आप हमें ईमेल भी कर सकते हैं : lettershindi@bsmail.in
पत्र/ईमेल में अपना डाक पता और टेलीफोन नंबर अवश्य लिखें।

देश-दुनिया

फोटो - पीटीआई

राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल ने बुधवार को सेंट पीटर्सबर्ग में रूस के राष्ट्रपति व्लादीमिर पुतिन से मुलाकात की। डोभाल ने रूस के सुरक्षा सलाहकार सर्गेई शोइगु से भी मुलाकात की और यूक्रेन तथा रूस के बीच संघर्ष को समाप्त कराने में भारत की संभावित भूमिका पर चर्चाओं के बीच 'आपसी हितों के' अनेक मुद्दों पर बातचीत की। डोभाल-शोइगु मुलाकात ब्रिक्स (ब्राजील, रूस, भारत, चीन, दक्षिण अफ्रीका) देशों के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकारों के एक सम्मेलन से इतर हुई।

अमेरिका में चुनाव

हैरी-ट्रंप टीवी बहस

अमेरिका के राष्ट्रपति चुनाव में आयोजित टीवी बहस में हैरी और ट्रंप ने स्वास्थ्यरक्षा और अर्थव्यवस्था जैसे मुद्दों पर परस्पर विरोधी विचार रखे। 2024 का राष्ट्रपति चुनाव अमेरिकी इतिहास में सर्वाधिक गहन तथा ध्रुवीकृत है। इस राजनीतिक संघर्ष में दो प्रमुख व्यक्तियों-पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप तथा उप-राष्ट्रपति कमला हैरिस के बीच टीवी पर आमने-सामने बहस हुई। उनके विचारों में नीतिगत मुद्दों, भाषण शैली और अमेरिका के प्रति दृष्टिकोण में तीखे विरोधाभास सामने आए जिससे देश में व्याप्त गहरा वैचारिक विभाजन स्पष्ट है। उप-राष्ट्रपति कमला हैरिस ने एकता, न्याय व समावेशन पर जोर दिया। अपनी आकर्षक भाषण शैली तथा 'अभियोजन' की पृष्ठभूमि के चलते कमला हैरिस ने अपना विमर्श अमेरिका में विभाजनों को पाटने तथा प्रगतिशील सुधारों पर केन्द्रित रखा। हैरिस ने ज्यादा समतापूर्ण समाज बनाने पर अपनी प्रतिबद्धता के साथ ही स्वास्थ्यरक्षा सुधारों, छोटे बिजनेसों की प्रगति, जलवायु कार्रवाई तथा महिलाओं के 'पसंद के अधिकार' पर जोर दिया। बहस के दौरान उन्होंने सर्वाधिक महत्वपूर्ण ढंग से महिलाओं के प्रजनन अधिकारों पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि यह न केवल महिला अधिकार, बल्कि मूलभूत मानवाधिकार का मुद्दा है। मध्यमार्गी मतदाताओं को आकर्षित करने के लिए हैरिस ने इस धारणा का भी खंडन किया कि वे बहुत अधिक उदारवादी हैं।

दूसरी ओर डोनाल्ड ट्रंप ने राष्ट्रवाद, आर्थिक संरक्षणवाद तथा अवस्थापना-विरोधी लफ्फाजी पर केन्द्रित अपना लोकरंजक संदेश दिया। ट्रंप ने सीमा सुरक्षा, आर्थिक प्रगति, ऊर्जा स्वतंत्रता तथा अनेक ग्रामीण व कामगार वर्ग के अमेरिकनों के सरोकारों पर ध्यान केन्द्रित किया जो विकसित होती वैश्विक अर्थव्यवस्था में पीछे छूट गए हैं। एक बार उन्होंने मध्य से वाम की ओर झुके एजेंडे के कारण हैरिस को 'मार्क्सवादी' तक कह दिया। ट्रंप अपने मतदाताओं

से सीधे जुड़ सकते हैं और यह उनकी शक्तिशाली उपलब्धि है। उन्होंने नियंत्रण हटाने तथा 'अमेरिका फर्स्ट' नीतियों पर जोर दिया जो मतदाताओं को आकर्षित करती हैं और इसी कारण ट्रंप को आर्थिक हितों का चैंपियन माना जाता है। लेकिन अपनी पूरी बहस में ट्रंप में विश्वास की कमी तथा रक्षात्मक भाव दिखा, जबकि जो बाइडेन के साथ बहस में वे ज्यादा आक्रामक थे। इसके साथ ही वे कमला हैरिस द्वारा प्रस्तुत तथ्यों से पस्त दिखे कि उनकी आलोचना न केवल उनके कर्मचारियों, बल्कि डिक चेनी जैसे रिपब्लिकनों ने भी की है, जो अब हैरिस के पक्ष में चले गए हैं। कोविड-19 वैश्विक महामारी तथा 6 जनवरी को हुए 'कैपिटाल दंगों' जैसे मुद्दों से निपटने में अक्षमता भी बहस में उन पर हावी रही। इससे उनका विश्वास और हिल गया तथा उनको पीछे हटना पड़ा। लेकिन फिलहाल जनता के मन में सबसे बड़ा सवाल यही है कि इनमें से अंततः कौन विजयी होगा। प्रतियोगिता कड़ी है, पर कमला हैरिस थोड़ी लाभ की स्थिति में हैं, हालांकि ट्रंप के समर्थक आधार और मतदाताओं को अनदेखा करना उचित नहीं होगा जो काफी मुखर हैं। कमला हैरिस के एजेंडे में शामिल 'जलवायु कार्रवाई', 'इस्राइल नीति' तथा 'बंदूक नीति' जैसे मुद्दे अनेक अमेरिकनों को पसंद नहीं हैं और वे ट्रंप को अपना प्रतिनिधि चुन सकते हैं। ट्रंप की पकड़ अमेरिकी मतदाताओं के बड़े हिस्से पर बनी हुई है जिनमें खासकर श्वेत, ग्रामीण व कामगार वर्ग शामिल हैं। यह तबका अनुभव करता है कि वे हालिया वर्षों में अमेरिका द्वारा अपनाई 'प्रगतिशील दिशा' से पीछे छूट गए हैं। ट्रंप के अति-सरलीकृत विचार भले ही व्यावहारिक न हों, पर वे जनता को आकर्षित करते हैं।

हरियाणा चुनाव में कांटे की टक्कर

हरियाणा में कड़े मुकाबले वाले विधानसभा चुनाव में राजनीतिक परिदृश्य गठबंधनों में परिवर्तन तथा लंबे चौड़े वादों से प्रभावित हो रहा है। यहां भाजपा और कांग्रेस में कांटे की टक्कर है।

कल्याणी शंकर
(लेखिका, वरिष्ठ पत्रकार हैं)

हरियाणा में कड़े मुकाबले वाले विधानसभा चुनाव में राजनीतिक परिदृश्य गठबंधनों में परिवर्तन तथा लंबे चौड़े वादों से प्रभावित हो रहा है। इस चुनाव में फिलहाल भाजपा और कांग्रेस में कांटे की टक्कर दिख रही है। ऐसे में यह सवाल महत्वपूर्ण है कि राज्य के विधानसभा चुनाव में किसे विजय मिलेगी? क्या सत्तारूढ़ भाजपा राज्य पर अपना कब्जा बनाए रखेगी या उभरती हुई कांग्रेस को चुनाव में विजय से एक अवसर मिलेगा? वर्तमान समय में पूरा देश हरियाणा के साथ ही महाराष्ट्र, झारखंड तथा जम्मू कश्मीर में होने वाले विधानसभा चुनाव परिणामों की सांस रोक कर प्रतीक्षा कर रहा है। इन विधानसभा चुनावों से इन राज्यों का भविष्य निर्धारित होने के साथ ही पूरे देश के राजनीतिक परिदृश्य पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ेगा।

हरियाणा विधानसभा की 90 सीटों पर विविधतापूर्ण एवं बहुकोणीय मुकाबला होना निश्चित है। हालांकि, राज्य के इस विधानसभा चुनाव में मुख्य मुकाबला भाजपा और कांग्रेस के बीच है, लेकिन अनेक छोटी पार्टियां भी अपनी किस्मत आजमा रही हैं। इन पार्टियों में 'आम आदमी पार्टी'-आप, समाजवादी पार्टी, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी मार्क्सवादी-माकपा तथा हरियाणा लोकहित पार्टी शामिल हैं। ये पार्टियां विधानसभा चुनाव में शामिल हो कर राज्य के चुनावी परिदृश्य में विविधता पैदा कर रही हैं। भाजपा के साथ ही जननायक जनता पार्टी-जेजेपी भी मैदान में है जिसने चंद्रशेखर आजाद के नेतृत्व वाली आजाद समाज पार्टी-कांशीराम के साथ गठबंधन कर दुष्यंत चौटाला को अपना मुख्यमंत्री उम्मीदवार घोषित किया है। इसके साथ ही इंडियन नेशनल लोकदल-इनेलोद व बहुजन समाज पार्टी-बसपा ने गठबंधन कर अभय सिंह चौटाला को अपना मुख्यमंत्री उम्मीदवार घोषित किया है।

हालांकि, भाजपा और कांग्रेस ने अपने मुख्यमंत्री उम्मीदवारों की घोषणा नहीं की है, पर पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा चुनावी संघर्ष में कांग्रेस का नेतृत्व कर रहे हैं। भाजपा के नए मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी पार्टी का नेतृत्व कर रहे हैं। लेकिन भाजपा और कांग्रेस, दोनों आंतरिक समस्याओं का सामना कर रही हैं। भाजपा के मंत्री रणजीत सिंह चौटाला तथा विधायक लक्ष्मण दास नापा ने विधानसभा चुनाव में टिकट न मिलने पर पार्टी छोड़ दी है।

भाजपा के अनेक अन्य प्रमुख नेताओं तथा जिला नेताओं ने भी उनके टिकटों पर विचार न करने के कारण पार्टी छोड़ दी है। कांग्रेस और उसके गठबंधन साझीदार आप में सीट साझा के लिए लंबी चर्चा हुई, पर हरियाणा में हुड्डा समेत अन्य कांग्रेस नेता उसे ज्यादा सीटें देने को तैयार नहीं थे। इस कारण अंततः आप और कांग्रेस के बीच गठबंधन टूट गया और आप राज्य की सभी सीटों पर चुनाव लड़ने के लिए तैयार है। पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा के नेतृत्व में कांग्रेस को उम्मीद है कि दस साल बाद वह फिर से सत्ता में वापस आ सकती है। पार्टी ने रणनीतिक रूप से काफी समय तक समाजवादी पार्टी और आम आदमी पार्टी-आप के साथ गठबंधन का प्रयास किया, पर अंततः वह विफल हो गई। इस बीच दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल 'शराब घोटाले' में संलिप्तता के आरोपों का सामना कर रहे हैं और जेल में बंद हैं। हरियाणा का चुनाव सभी पार्टियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। जहां भाजपा राज्य में अपने तीसरे कार्यकाल के लिए मैदान में है, वहीं कांग्रेस पुनः सत्ता में आने के लिए संघर्ष कर रही है। अन्य क्षेत्रीय पार्टियां भी सत्ता में अपनी साझेदारी चाहती हैं। जहां तक लोकसभा में प्रतिनिधित्व का सवाल है, 2019 में भाजपा ने राज्य की सभी दस सीटों पर विजय पाई थी, पर 2024 में वह केवल पांच सीटें जीत सकी और कांग्रेस ने बाकी पांच सीटों पर कब्जा कर लिया। 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा अपने दम पर बहुमत नहीं प्राप्त कर सकी और उसने जनता दल युनाईटेड-जदयू तथा तेलगू देशम पार्टी-टीडीपी की सहायता से सरकार बनाई।

वर्ष 2014 के पहले भाजपा हरियाणा में छोटी पार्टी हुआ करती थी। लेकिन 2014 लोकसभा चुनाव के बाद पार्टी में मजबूती व गतिशीलता आई। 2019 में भाजपा को राज्य विधानसभा में 40 सीटों पर विजय मिली और वह बहुमत से केवल 6 सीट पीछे रह गई। ऐसे में दस सीटें जीतने वाली दुष्यंत चौटाला की जननायक जनता पार्टी-जेजेपी ने भाजपा का समर्थन किया। लेकिन हाल में जेजेपी ने भाजपा से गठबंधन तोड़ दिया है।

हरियाणा में भाजपा का मत-प्रतिशत 2019 में 58.2 प्रतिशत था, लेकिन वह 2024 में घट कर 46.11 प्रतिशत रह गया। इसका मुख्य कारण किसानों द्वारा न्यूनतम समर्थन मूल्य-एमएसपी की कानूनी गारंटी की मांग थी। 2024 में कांग्रेस तथा क्षेत्रीय पार्टियों के गठबंधन-'इंडिया' ने भाजपा के मत प्रतिशत में सेंध लगा दी। मार्च में भाजपा ने मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर के स्थान पर नायब सिंह सैनी को मुख्यमंत्री बना दिया। नए मुख्यमंत्री ने अनेक कल्याणकारी योजनाओं की घोषणा की है। उन्होंने सरकारी नौकरियां भरने के साथ ही जाट मुद्दे के समाधान का वादा किया है। लेकिन अभी भाजपा को मिलने वाले जाटों के समर्थन पर संदेह है। इसके साथ ही नायब सिंह सैनी का छः महीने का सीमित कार्यकाल संभवतः ज्यादा असर नहीं छोड़ पाया है। कांग्रेस 2024 के लोकसभा चुनाव में अपनी सीटें दूनी करने से बहुत उत्साहित है।

राज्य में कांग्रेस बेरोजगारी, मुद्रास्फीति, किसानों के मुद्दे तथा विवादास्पद 'अग्निवीर योजना' पर जनता का ध्यान केन्द्रित कर रही है। पार्टी जनता से प्राप्त सुझावों के आधार पर अपना चुनाव घोषणापत्र तैयार कर रही है जिसमें अनेक कल्याणकारी योजनाओं का वादा किया जा सकता है। इनमें 6,000 रुपये की वृद्धावस्था पेंशन तथा 300 यूनिट मुफ्त बिजली जैसी चीजें शामिल हो सकती हैं। पार्टी 452,000 पहली बार वोट देने वाले मतदाताओं तथा 4.09 मिलियन युवा मतदाताओं पर भी ध्यान केन्द्रित कर रही है, जबकि भाजपा इनमें रणनीतिक रूप से विभाजन करना चाहती है। आप का थोड़ा असर हरियाणा के सीमान्त क्षेत्रों में है। कांग्रेस नेता राहुल गांधी 'इंडिया' गठबंधन को एकजुट बनाए रखने का प्रयास कर रहे थे, पर अब आप ने अलग चुनाव लड़ने का फैसला किया है। कहा जाता है कि पहले आप में पांच सीटों पर चुनाव लड़ने पर सहमति जताई थी। कांग्रेस में भी व्यापक आंतरिक गुटबाजी व्याप्त है। कांग्रेस दो गुटों में विभाजित है जिनमें से एक का नेतृत्व पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा तथा दूसरे का नेतृत्व पूर्व केन्द्रीय मंत्री कुमारी शैलजा कर रही हैं। पार्टी दोनों गुटों को खुश करने का प्रयास कर रही है, पर हुड्डा का पहले मुख्यमंत्री रहने के कारण ज्यादा असर है। पाला बदलने वालों तथा पूर्व मुख्यमंत्रियों को कांग्रेस उम्मीदवारों की सूची में स्थान मिला है।

भाजपा हरियाणा में कड़े मुकाबले का सामना कर रही है। कुछ मीडिया स्रोतों द्वारा कराए जनमत सर्वेक्षणों के अनुसार पार्टी को इस बार पहले जितनी सीटों पर सफलता मिलना कठिन लग रहा है। भाजपा की समस्या है कि उसके पास राज्य के स्तर पर मजबूत नेतृत्व नहीं है। पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर को केन्द्रीय मंत्रिमंडल में स्थान दिया गया है ताकि राज्य में नए नेतृत्व का विकास हो सके। इसके साथ ही दस साल सत्ता में रहने के बाद उसे कुछ सत्ता-विरोधी रुझान का सामना भी करना पड़ रहा है। पार्टी के चुनाव प्रचार में प्रमुख भूमिका निभाने वाले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अभी राज्य में किसी चुनाव रैली को संबोधित नहीं किया है, हालांकि उनके द्वारा जल्द ही रैलियों को संबोधित करने की संभावना है।

कांग्रेस को भी आंतरिक टकरावों पर लगाम लगाने व संगठन मजबूत करने के लिए काम करना होगा। भाजपा में उम्मीदवारों की सूची जारी होने के बाद कुछ प्रभावशाली नेताओं समेत अनेक ने पार्टी छोड़ दी। टिकट के बहुत अधिक उम्मीदवार पार्टी की संभावनायें प्रभावित करते हैं। अंततः चुनावी गणित ही तय करेगी कि कांग्रेस और भाजपा में से किसे विजय मिलती है। कांग्रेस को गलतियां दुहराने से बचते हुए सबको साथ लेकर चलना चाहिए, नहीं तो वह महत्वपूर्ण अवसर खो देगी। भाजपा अपना नुकसान कम कर समुचित संख्या में सीटें जीत कर सरकार पुनः बना सकती है।

भारत में हरित हाईड्रोजन क्रांति

आरिफ आगा
(लेखक स्मार एनर्जी इंडिया के निदेशक हैं)

पूरी दुनिया जलवायु परिवर्तन के भयानक परिणामों से जूझ रही है और टिकाऊ और स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों की तलाश कर रही है। ग्रीन हाइड्रोजन, अक्षय ऊर्जा का उपयोग करके उत्पादित एक शक्तिशाली वैकल्पिक ईंधन, एक व्यवहार्य विकल्प के रूप में उभरा है।

अब, भारत में, ग्रीन हाइड्रोजन क्रांति गति पकड़ रही है, जिसमें सरकार, निजी क्षेत्र और स्टार्ट-अप देश को इस परिवर्तनकारी तकनीक में वैश्विक नेता के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। हाल के वर्षों में, सौर और पवन जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों द्वारा संचालित इलेक्ट्रोलिसिस के माध्यम से उत्पादित ग्रीन हाइड्रोजन ने महत्वपूर्ण ध्यान आकर्षित किया है।

2006 में पेश किए गए राष्ट्रीय हाइड्रोजन ऊर्जा रोडमैप ने भारत में हाइड्रोजन की क्षमता का पता लगाने के लिए सरकार द्वारा पहला औपचारिक प्रयास किया। तब से, तकनीकी प्रगति और अक्षय ऊर्जा के प्रति बढ़ती प्रतिबद्धता ने ग्रीन हाइड्रोजन क्रांति के लिए एक ठोस आधार तैयार किया है। भारत जीवाश्म ईंधन पर अपनी भारी निर्भरता और भारी कार्बन उत्सर्जन के कारण अपनी ऊर्जा प्रणालियों को डीकार्बोनाइज करने के लिए भारी दबाव का सामना कर रहा है। ग्रीन हाइड्रोजन एक बहुमुखी ऊर्जा वाहक के रूप में काम कर सकता है, जिसका उपयोग औद्योगिक प्रक्रियाओं और परिवहन से लेकर बिजली उत्पादन और भंडारण तक में किया जा सकता है। ग्रे या ब्लू हाइड्रोजन के विपरीत, जो जीवाश्म ईंधन से उत्पादित होता है और इसमें कार्बन उत्सर्जन होता है।

ग्रीन हाइड्रोजन पूरी तरह से स्वच्छ है, इस प्रकार वैश्विक स्थिरता लक्ष्यों के साथ संरेखित है। भारत के विशाल नवीकरणीय ऊर्जा संसाधन, विशेष रूप से सौर और पवन, इसे बड़े पैमाने पर ग्रीन हाइड्रोजन उत्पादन के लिए एक आदर्श स्थान बनाते हैं। अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी ने नोट किया है कि भारत की नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता

ग्रीन हाइड्रोजन उत्पादन के लिए आवश्यक कम लागत वाली बिजली प्रदान कर सकती है, जो संभावित रूप से इसे दुनिया के सबसे अधिक लागत प्रभावी उत्पादकों में से एक बना सकती है। ग्रीन हाइड्रोजन के रणनीतिक महत्व को पहचानते हुए, केंद्र सरकार ने इसके विकास और अपनाने को बढ़ावा देने के लिए कई नीतिगत उपायों को लागू किया है। देश को ग्रीन हाइड्रोजन उत्पादन और निर्यात का वैश्विक केंद्र बनाने के लिए, भारत सरकार ने 2021 में अपना महत्वाकांक्षी राष्ट्रीय हाइड्रोजन मिशन शुरू किया। मिशन विभिन्न क्षेत्रों में मांग पैदा करने, आपूर्ति श्रृंखला लचीलापन सुनिश्चित करने और हाइड्रोजन प्रौद्योगिकियों में अनुसंधान और विकास का समर्थन करने पर केंद्रित है। प्रमुख नीतिगत प्रोत्साहनों में पायलट परियोजनाओं के लिए सब्सिडी और वित्तीय सहायता, हाइड्रोजन हब का विकास और उद्योगों के लिए अपने संचालन में हरित हाइड्रोजन का उपयोग करने के लिए अनिवार्यताएँ शामिल हैं। इस सक्रिय दृष्टिकोण ने अब सकारात्मक परिणाम देने शुरू कर दिए हैं। हालांकि, रिफाइनिंग, उर्वरक और परिवहन सहित कई क्षेत्रों में ईंधन के रूप में हाइड्रोजन के उपयोग को सुविधाजनक बनाने के लिए एक मजबूत नियामक ढांचा बनाने की आवश्यकता है। कॉप26 शिखर सम्मेलन में घोषित 2070 तक शुद्ध-शून्य कार्बन उत्सर्जन प्राप्त करने के लिए भारत की प्रतिबद्धता। स्टील, सीमेंट और पेट्रोकेमिकल्स जैसे कठिन-से-कम करने वाले क्षेत्रों को डीकार्बोनाइज करके इस यात्रा में हरित हाइड्रोजन की महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की उम्मीद है। हरित हाइड्रोजन में परिवर्तन से आयातित जीवाश्म ईंधन पर भारत की निर्भरता भी कम हो सकती है, ऊर्जा सुरक्षा में वृद्धि हो सकती है और एक महत्वपूर्ण आर्थिक बढ़ावा मिल सकता है।

भारतीय समूह और बड़े निजी व्यवसाय हरित हाइड्रोजन की क्षमता को पहचानने में तेज रहे हैं और इस क्षेत्र में पर्याप्त निवेश कर रहे हैं। हाइड्रोजन उत्पादन इकाइयां स्थापित करने और परिवहन में हाइड्रोजन ईंधन कोशिकाओं को एकीकृत करने के लिए निवेश किया जा रहा है। ऊर्जा क्षेत्र में स्टार्ट-अप इलेक्ट्रोलाइजर विकसित करने और उन्हें तैनात करने, मजबूत हाइड्रोजन भंडारण समाधान बनाने और हाइड्रोजन ईंधन सेल तकनीक के साथ परिवहन क्षेत्र में नवाचार करने पर भी ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।

भारत में वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाओं को लाने और हरित हाइड्रोजन क्रांति को गति देने में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग महत्वपूर्ण होगा। भारत ने जर्मनी, जापान, ऑस्ट्रेलिया और यूरोपीय संघ के साथ सक्रिय रूप से सहयोग करने, संयुक्त उद्यम विकसित करने, प्रौद्योगिकी साझा करने और क्षमता निर्माण के लिए साझेदारी बनाने की मांग की है।

भारत में हरित हाइड्रोजन क्रांति देश के ऊर्जा परिदृश्य को बदलने और एक स्थायी भविष्य की ओर वैश्विक परिवर्तन का नेतृत्व करने का एक अनूठा अवसर प्रस्तुत करती है। मजबूत सरकारी समर्थन, निजी क्षेत्र के सक्रिय प्रयासों और स्टार्ट-अप से गतिशील नवाचार के साथ, भारत एक हरित हाइड्रोजन पावर हाउस बनने की यात्रा पर निकल पड़ा है। शुद्ध-शून्य उत्सर्जन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, हरित हाइड्रोजन भारत के ऊर्जा भविष्य को आकार देने और वैश्विक स्थिरता प्रयासों को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

आप की बात

पटरियों पर षडयंत्र

रेल पटरियों पर रेलें उलटने या उनमें आग लगाने के आपराधिक प्रयासों की घटनाएं बढ़ रही हैं। उत्तरप्रदेश और राजस्थान में शासन-प्रशासन व खुफिया तंत्र इस बारे में सजगता बरत रहा है। पटरियों पर कभी भरा गैस सिलेंडर, कभी सीमेंट का पिलर, पत्थर, कभी बाइक का कबाड़ और कभी कटा पेड़ मिलना देश-विरोधी षडयंत्रों या आतंकवादियों की हरकतों के संकेत दे रहे हैं। इस कारण कुछ ट्रेनों के पटरी से उतरने की घटनाएं हुई हैं। रेल प्रशासन, पुलिस व खुफिया तंत्र को ऐसे मामलों में कहीं न कहीं भारत-विरोधी तत्वों द्वारा विदेशी शक्तियों का षडयंत्र लग रहा है। रेलों की सुरक्षा को गंभीरता से लेने तथा केन्द्र सरकार और राज्य सरकारों के स्तर पर ऐसे कांडों की गंभीर जांच की आवश्यकता है। पटरियों पर किए जाने वाले ऐसे षडयंत्र का उद्देश्य न केवल आम जनता को जान-माल का भारी नुकसान पहुंचाना, बल्कि जनता की नजर में सरकार के प्रति विश्वास गिराना भी है। इसे देशद्रोह के सिवा और कुछ नहीं कहा जा सकता है। ऐसे षडयंत्रों को विफल करने के लिए पटरियां गुजरने वाले स्थानों की जनता को जागरूक करने तथा षडयंत्रकारियों को पकड़ने के लिए इनाम देने की घोषणा केन्द्र व राज्य सरकारों की ओर से अविलंब की जानी चाहिए। ऐसे अपराधों की सजा कठोरतम होनी चाहिए।

- शकुंतला महेश नेनावा, इंदौर

विभाजनकारी विपक्षी रणनीति

भारत विश्व का सबसे प्राचीन राष्ट्र है, लेकिन इसने सबसे ज्यादा आक्रमण भी झेले हैं। भारत पर राज करने वालों की बस एक ही नीति थी फूट डालो और राज करो। वर्तमान समय मे देश की सत्ता पाने के लिए विपक्ष भी उसी नीति पर चल रहा है। भारत की जनता ने एकमत होकर लगातार तीन लोकसभा चुनाव में विपक्ष को नकार दिया है। अब विपक्ष झूठा भ्रम फैलाकर समाज मे विघटन के नए प्रयास कर रहा है। राहुल गांधी ने अमेरिका से विपक्ष की विभाजनकारी योजना को फिर से हवा दी है। उन्होंने सिख समाज को भारतीय समाज से दूर करने का षडयंत्र करते हुए कहा है कि भारत में सिख पीड़ित है। भारत मे सिखों को पगड़ी, कड़ा पहनने तथा गुरुद्वारे में जाने की अनुमति नही है। हालांकि, राहुल ने जिस सिख के बहाने बैठक में यह षडयंत्र किया, उसने स्वयं मीडिया में आकर राहुल के कथन का खंडन कर दिया। राहुल के बयान के तुरंत बाद खालिस्तानी आतंकवादी गुरपतवंत पन्नू ने उनके बयान की तारीफ कर दी। राहुल की बैठकों में अनेक घोषित भारत-विरोधी तत्व पूरे सम्मान के साथ उपस्थित थे। भारत आने पर देश की सारी जनता को राहुल गांधी का मुखर विरोध अवश्य करना चाहिए।

- ललित शंकर, गाजियाबाद

पाकिस्तानी विलाप

पाकिस्तानी विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता मुमताज जहरा बलोच ने आरोप लगाया कि भारत ने एक पुरानी रियासत जूनागढ़ पर कब्जा कर रखा है। देशी रियासत जूनागढ़ का 1948 में भारत में विलय हो गया था, लेकिन विडंबना है कि अब पाकिस्तान हास्यास्पद ढंग से उस पर अपना ऐतिहासिक और कानूनी दावा कर रहा है। पाकिस्तान के इस हास्यास्पद बयान पर भारतीय विदेश मंत्रालय का कहना है कि पाकिस्तान की सोच हर तरह से शर्मनाक एवं मूर्खतापूर्ण है। जूनागढ़ आज गुजरात का हिंदू-बहुल तथा बहुत विकसित क्षेत्र है। ऐसे में पाकिस्तानी विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता का बयान केवल अपनी जनता को भ्रमित करने तथा लगातार भारत-विरोधी भावनायें भड़काने के लिए सुनाई जाने वाली कहानियों को छोड़ कर और कुछ नहीं है। विडंबना है कि मुमताज जहरा बलोच अपने देश के बलूचिस्तान में जारी विद्रोह पर आंखें बंद किए हैं जहां की जनता पाकिस्तान के इशारे पर वहां थोपी जा रही चीन की गुलामी का सशस्त्र विरोध कर रही है। बलूचिस्तान, पाक अधिकृत कश्मीर व खैबर पख्तूनख्वा की जनता अब पाकिस्तान के साथ रहने को तैयार नहीं है। अब पाकिस्तान को अतीत के बजाय अपने वर्तमान की चिन्ता करनी चाहिए।

मनमोहन राजावत, शाजापुर

राहुल की टिप्पणी

राहुल गांधी ने अमेरिका प्रवास के दौरान आरक्षण पर अनावश्यक टिप्पणी की। यह न केवल राहुल, बल्कि कांग्रेस के लिए भारी पड़ी है। राहुल गांधी ने कहा था कि जब कभी भारत में स्थिति अनुकूल होगी तो आरक्षण समाप्त कर देंगे। इस पर राजनितिक दलों ने राहुल गांधी की तीखी आलोचना की है। हालांकि, राहुल ने इस पर सफाई दी व लीपापोती का प्रयास किया, लेकिन इससे कोई संतुष्ट नहीं है। बसपा अध्यक्ष मायावती ने कहा कि कांग्रेस कभी भी आरक्षण के पक्ष में नहीं रही। उसने मंडल आयोग की रिपोर्ट को दशकों तक ठंडे बस्ते में डाले रखा तथा 2011 में दलित आंदोलनों के दबाव पर कराई जातीय जनगणना के आंकड़े 2014 तक सरकार रहने के बावजूद जारी नहीं किये। चुनावी लाभ के लिए संविधान की प्रतियां लहराने वाली कांग्रेस ने न बाबा साहेब अंबेडकर को भारत रत्न सम्मान दिया और न उनका चित्र संसद भवन में लगने दिया। देश में पहली गैर-कांग्रेस सरकार बनने के बाद ही बाबा साहेब के चित्र को संसद में स्थान मिला। उम्मीद है कि राहुल गांधी के इस बयान का खामियाजा कांग्रेस चुनावों में भुगतेगी।

- वीरेंद्र कुमार जाटव, दिल्ली

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से
responsemail.hindipioneer@gmail.com
पर भी भेज सकते हैं।

कल्पमेधा

आप कभी भी जान नहीं पाएंगे कि आप कितने मजबूत हैं, जब तक कि मजबूत होने के सिवा आपके पास कोई और विकल्प न हो।
- बाब मार्ले

बुजुर्गों की सुध

देश की आबादी में एक खासा हिस्सा उन लोगों का है, जो अपनी उम्र के साठ वर्ष पूरे कर चुके हैं। सामान्य जीवन और प्राकृतिक संरचना के मुताबिक भी इस उम्र में व्यक्ति का शरीर आमतौर पर कमजोर होता जाता है और कई बार बीमारियों से भी घिर जाता है। ऐसे मामले अक्सर देखे जाते रहे हैं, जिसमें किसी बुजुर्ग सदस्य को बीमारी में उचित इलाज सिर्फ इसलिए नहीं मिल पाता कि उनके पास चिकित्सक से परामर्श लेने और उपचार के लिए जरूरी खर्च का पैसा नहीं होता। ऐसे में या तो उन्हें आसपास से ऋण लेकर अपना उपचार कराना पड़ता है या फिर उचित इलाज के बिना उनकी सेहत और खराब होती चली जाती है। इस लिहाज से देखें तो केंद्र सरकार ने जिस तरह आयुष्मान भारत योजना का विस्तार करते हुए सत्तर वर्ष या उससे ज्यादा उम्र के बुजुर्गों को भी पांच लाख रुपए तक के स्वास्थ्य बीमा के दायरे में लाने को मंजूरी है, वह एक दूरगामी महत्त्व का फैसला है। सरकार के इस फैसले के धरातल पर उतरने के बाद देश के छह करोड़ से ज्यादा वरिष्ठ नागरिकों को इसका लाभ मिल सकेगा।

यह छिपा नहीं है कि हमारे यहां बुजुर्गों की आबादी के सामने अपने जीवन और स्वास्थ्य को लेकर कैसी चुनौतियां रही हैं। यह भी जगजाहिर है कि उम्र बढ़ने के साथ और खासतौर साठ वर्ष या इससे ज्यादा की आयु में पहुंचने के बाद ज्यादातर बुजुर्ग स्वास्थ्य संबंधी कई तरह की चुनौतियों से जूझते रहते हैं। मगर उनके जीवन का यही वह दौर है, जिसमें उनकी नियमित आय का जरिया अमूमन बंद हो चुका होता है। खासतौर पर जिन लोगों के पास संगठित क्षेत्र में काम करने की सुविधा नहीं रही होती है, उसमें भी संतोषजनक राशि की पेंशन नहीं होती है। इसलिए आमतौर पर अपने न्यूनतम जरूरतों के खर्च के लिए भी वे अपने परिवार के अन्य सदस्यों पर निर्भर होते हैं। ऐसे मामले छिपे नहीं हैं, जिनमें बीमार होने की स्थिति में किसी बुजुर्ग के साथ उनके परिजन अच्छा व्यवहार नहीं करते या कई बार उन्हें बोझ मानने लगते हैं और उनकी उपेक्षा करते हैं। ऐसे में इस बात की जरूरत शिद्दत से महसूस की जा रही थी कि देश की बुजुर्ग आबादी की सेहत पर ध्यान देने के लिए सरकार अपनी ओर से कोई ठोस पहल करे।

कुछ समय पहले आए एक अध्ययन में यह तथ्य सामने आया था कि शहरी इलाकों में रहने वाले लगभग पचास फीसद बुजुर्ग आर्थिक मुश्किलों और अन्य तरह की चुनौतियों की वजह से जरूरत के वक्त चिकित्सकों के पास नहीं जा पाते हैं। ग्रामीण इलाकों में यह समस्या ज्यादा व्यापक है, जहां बासठ फीसद बुजुर्गों के सामने आर्थिक और अन्य बाधाएं खड़ी होती हैं, जिनकी वजह से उन्हें बीमारी की स्थिति में मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। ज्यादातर मामलों में यह एक दुखद सामाजिक हकीकत है कि कई बार पारिवारिक उपेक्षा के शिकार बुजुर्गों को सरकार की ओर से भी सामाजिक सुरक्षा के रूप में कोई विशेष सुविधा नहीं मिल पाती है। ऐसे में केंद्र सरकार ने जिस आयुष्मान भारत योजना के दायरे में सत्तर वर्ष या इससे ज्यादा के बुजुर्गों को भी लाने की घोषणा की है, उसके बाद न केवल सहायता का एक रास्ता तैयार होगा, बल्कि बुजुर्गों के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में भी बदलाव आने की उम्मीद पैदा होगी। कहा जा सकता है कि जीवन के जिस दौर में व्यक्ति को सबसे ज्यादा चिंता अपने स्वास्थ्य खर्च को लेकर होती है, उसे दूर करने की दिशा में सरकार ने एक अहम फैसला लिया है।

दावे के बरक्स

दिल्ली में आम आदमी पार्टी की सरकार का यह दावा रहा है कि उसने यहां स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में बड़े सुधार किए हैं और आम जनता को इसका बहुत ज्यादा लाभ मिला है। मगर अक्सर ऐसी घटनाएं सामने आती रहती हैं, जिनसे पता चलता है कि सरकार के दावों के बरक्स जमीन पर हकीकत बहुत अलग है। खासतौर पर दिल्ली के अस्पतालों की हालत यह है कि किसी मरीज को समय पर इलाज नहीं मिल पाया, उसे अलग-अलग अस्पतालों में भटकना पड़ा और आखिर इसी वजह से उसकी जान चली गई। गौरतलब है कि दिल्ली के हरिदास नगर इलाके में एक क्लस्टर बस की टक्कर से बुरी तरह घायल एक युवक को लेकर उसके परिजन एम्स के स्वास्थ्य केंद्र, दीनदयाल उपाध्याय अस्पताल और सफदरजंग अस्पताल में भटकते रहे, मगर इलाज नहीं मिल पाया। हार कर उन्होंने युवक को जब एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया, तब तक तीन घंटे से ज्यादा वक्त गुजर गया था। इस बीच युवक की हालत इतनी बिगड़ गई कि आखिर उसने दम तोड़ दिया। युवक इतनी देर तक बचा रहा तो इससे साफ है कि अगर उसे समय पर उचित इलाज मिल जाता तो वह जिंदा बच जाता। मगर बढ़-चढ़ कर किए जाने वाले दावों की हकीकत यह है कि आपात स्थिति में होने के बावजूद सही वक्त पर इलाज नहीं मिल सका और युवक की जान चली गई।

ऐसा नहीं है कि यह इस तरह का कोई अकेला मामला है। इससे पहले जनवरी और अप्रैल में भी इस तरह की घटनाएं सामने आ चुकी हैं, जब आपात अवस्था में अलग-अलग मरीजों को अस्पतालों में भटकने पर मजबूर होना पड़ा और इसी क्रम में हुई देरी की वजह से आखिर उसकी मौत हो गई। कहने को देश की राजधानी दिल्ली में बड़े और बहुत अच्छे अस्पताल हैं, लेकिन आपात अवस्था में जान बचाने की भूख में पहुंचे किसी व्यक्ति के इलाज के लिए कहीं चिकित्सक उपलब्ध नहीं हो पाती, तो कहीं बिस्तर या फिर चिकित्सीय उपकरणों की कमी के दुश्चक्र में फंस कर उसकी जान चली जाती है। इस अफसोसनाक तस्वीर के रहते दिल्ली के स्वास्थ्य क्षेत्र में सुधार के दावों को कैसे देखा जाएगा?

ऊर्जा क्षेत्र में नए विकल्पों की तलाश

भारत के पास कोयला, तेल और गैस जैसे सीमित ऊर्जा संसाधन ही मौजूद हैं और यह अपनी बढ़ती ऊर्जा मांगों की पूर्ति के लिए आयात पर निर्भर है। इसलिए भारत ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों की तलाश कर रहा है, जैसे सौर, पवन और जल विद्युत।

अमित बैजनाथ गर्ग

दुनिया ऊर्जा संकट का सामना कर रही है। सभी इस बात को समझ चुके हैं कि इस क्षेत्र पर गंभीरता से ध्यान नहीं दिया गया, तो आने वाला समय चुनौतीपूर्ण होगा। अधिकांश ऊर्जा संकट स्थानीय कमी, युद्ध और बाजार में हेरफेर के कारण पैदा हुए हैं। भारत में ऊर्जा संकट से निपटने की राह में कई चुनौतियां हैं। भारत के पास कोयला, तेल और गैस जैसे सीमित ऊर्जा संसाधन ही मौजूद हैं और यह अपनी बढ़ती ऊर्जा मांगों की पूर्ति के लिए आयात पर निर्भर है। इसलिए भारत ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों की तलाश कर रहा है, जैसे सौर, पवन और जल विद्युत। वहीं, देश के ऊर्जा क्षेत्र में अभी अपर्याप्त निवेश है। इसके बुनियादी ढांचे में सुधार और अपनी ऊर्जा क्षमता का विस्तार करने के लिए बड़े निवेश की आवश्यकता है। भारत विश्व के सबसे बड़े ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जकों में से एक है और इसका ऊर्जा क्षेत्र इसका एक प्रमुख कारक है।

हालांकि सरकार अल्पकालिक और दीर्घकालिक नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता वृद्धि के लिहाज से 2030 तक 500 गीगावाट का लक्ष्य प्राप्त करने की दिशा में प्रयासरत है। इधर, दुनिया में भारत 'एनर्जी ट्रांजिशन' में वैश्विक अगुआ के रूप में उभर रहा है। यह उस विकास से स्पष्ट है, जो हमने अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में हासिल किया है। अक्षय ऊर्जा क्षेत्र रोजगार उत्पादन की दृष्टि से भी उम्मीदें बंधाता नजर आ रहा है। पूरी दुनिया जहां जलवायु परिवर्तन के खतरों को रोकने के लिए इस क्षेत्र को विकसित करने में जुटी है, वहीं भारत ने इस स्रोत के विकास में अच्छी सफलता हासिल की है। पिछले दस वर्षों में देश ने अक्षय ऊर्जा उत्पादन की अपनी क्षमता में पांच गुना बढ़ोतरी की और इस क्षेत्र में नए लक्ष्यों को तय किया है।

वहीं 'रिन्यूएबल एनर्जी' यानी अक्षय ऊर्जा क्षेत्र में रोजगार पैदा करने के लिहाज से चीन, ब्राजील और अमेरिका के बाद भारत दुनिया में चौथे स्थान पर है। पूरे विश्व में 'रिन्यूएबल एनर्जी' क्षेत्र में नियुक्त लोगों का 5.7 फीसद भारत में है। 'इंटरनेशनल रिन्यूएबल एनर्जी एजंसी' की रपट के अनुसार, दस वर्ष पहले तक इस क्षेत्र में भारत में चार लाख नौकरियां सृजित हुई थीं। असल में, भारत में ऊर्जा क्षेत्र में आगे काफी बढ़ोतरी की संभावनाएं हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि भारत को पांच लाख करोड़ डालर की अर्थव्यवस्था बनाने के लिए ऊर्जा क्षेत्र को सशक्त करना जरूरी होगा।

देश में एलईडी बल्ब के इस्तेमाल से रोशनी के लिए बिजली खर्च में करीब 75 फीसद की कमी आई है। अध्ययन बताते हैं कि ऊर्जा दक्ष उपकरणों के इस्तेमाल से करीब 30 फीसद बिजली खपत कम की जा सकती है, यानी भवनों में 1.20 लाख गीगावाट बिजली बचाए जाने की संभावना है। अगर भवनों में ऊर्जा दक्षता के मानक लागू हो जाएं, तो अतिरिक्त 30 फीसद बिजली बच सकती है। यह बिजली बिहार और झारखंड जैसे राज्यों के एक वर्ष की जरूरत के बराबर है। सांख्यिकी मंत्रालय की रपट के अनुसार, देश में उद्योग जगत सबसे ज्यादा 42 फीसद बिजली खर्च करता है। घरेलू क्षेत्र में 24 फीसद बिजली खर्च होती है। व्यावसायिक भवनों में बिजली की खपत आठ फीसद है। मगर भवनों में ऊर्जा दक्षता के मानकों का क्रियान्वयन सबसे कम हुआ है।

ऊर्जा क्षेत्र में वर्ष 2000 से 2019 के बीच 14.32 अरब डालर का विदेशी निवेश आया। सरकार इस क्षेत्र पर खासा ध्यान दे रही है,

> देश को ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के लिए कई पहलें हुई हैं। इस क्रम में नवीकरणीय ऊर्जा की महत्वपूर्ण भूमिका है। सौर ऊर्जा के क्षेत्र में काफी काम हो रहा है। भारत ने 2070 तक कार्बन उत्सर्जन को शून्य करने का लक्ष्य रखा है, जिसके लिए लगभग 50 फीसद ऊर्जा नवीकरणीय स्रोतों से उत्पादित करना बड़ा लक्ष्य है। वर्ष 2040 तक भारत की ओर से 15,820 टेरावाट आवर बिजली का उत्पादन नवीकरणीय स्रोत से करने का भी लक्ष्य रखा गया है। ऐसे में सौर ऊर्जा इस लक्ष्य को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

जिससे आने वाले समय में इस क्षेत्र में निवेश और बढ़ेगा। इससे नई नौकरियां सृजित होंगी। 2022 तक भारत में नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता बढ़कर 175 गीगावाट हो चुकी है। इसमें 100 गीगावाट सौर ऊर्जा और 60 गीगावाट पवन ऊर्जा शामिल है। वहीं भारत की कोयला आधारित क्षमता 2040 तक 191 गीगावाट से बढ़कर 400 गीगावाट होने की संभावना है। हालांकि भारत लंबे समय से ऊर्जा उत्पादन के लिए सबसे ज्यादा भरोसा कोयले पर करता आया है, पर पिछले दशक के मध्य से इसमें हरित ऊर्जा की भागीदारी महत्त्वपूर्ण रही है। 2017 के बाद से हरित ऊर्जा बिजली उत्पादन के नए तरीकों में सबसे आगे रही है, जिसमें सौर ऊर्जा का बड़ा हिस्सा है।

देश को ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के लिए कई पहलें हुई हैं। इस क्रम में नवीकरणीय ऊर्जा की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। सौर ऊर्जा के क्षेत्र में काफी काम हो रहा है। भारत ने 2070 तक कार्बन उत्सर्जन को शून्य करने का लक्ष्य रखा है, जिसके लिए लगभग 50 फीसद ऊर्जा नवीकरणीय स्रोतों से उत्पादित करना बड़ा लक्ष्य है। वर्ष 2040 तक भारत की ओर से 15,820 टेरावाट आवर बिजली का उत्पादन नवीकरणीय स्रोत से करने का भी लक्ष्य रखा गया है। ऐसे में सौर ऊर्जा इस लक्ष्य को प्राप्त करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए विभिन्न कंपनियां सौर ऊर्जा की तरफ तेजी से कदम बढ़ा रही हैं। इस वजह से इस क्षेत्र की कंपनियों में अच्छी बढ़ोतरी देखने को मिल रही है और आने वाले समय में यह और तेज होगी। इस तरह भारत ऊर्जा क्षेत्र के सभी लक्ष्यों को सफलतापूर्वक हासिल कर सकेगा।

ऊर्जा क्षेत्र में त्वरित सुधारों की दरकार है। सबसे पहले तो आयात पर निर्भरता कम करने के लिए घरेलू कोयले की गुणवत्ता में सुधार पर ध्यान देना होगा। इसे कोयले के कैलोरी मान को बढ़ाने और राख की मात्रा को कम करने के लिए प्रौद्योगिकी में निवेश कर प्राप्त किया जा सकता है। वहीं, नवीकरणीय ऊर्जा को प्रोत्साहित करना होगा। देश में सौर, पवन और जल विद्युत जैसे ऊर्जा स्रोतों की अपार क्षमता मौजूद है। सरकार को प्रोत्साहन राशि और सबसिडी के माध्यम से नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं के विकास को प्रेरित करना चाहिए। कार्बन मूल्य निर्धारण नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग को प्रोत्साहित करने में मदद कर सकता है। वहीं, ऊर्जा का कुशल संचरण और वितरण सुनिश्चित करने के लिए ऊर्जा अवसंरचना के विकास में निवेश करना होगा। यह मौजूदा अवसंरचना के उन्नयन और नए बिजली संयंत्रों, ट्रांसमिशन लाइनों के निर्माण के माध्यम से हासिल हो सकता है।

सबसे अच्छा विकल्प यह है कि गैर-नवीकरणीय संसाधनों पर दुनिया की निर्भरता को खत्म किया जाए और समग्र संरक्षण प्रयासों में सुधार किया जाए। एलईडी बल्ब को बढ़ावा दिया जाए। अगर दुनिया में लाखों लोग आवासीय और व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए एलईडी का उपयोग करते हैं, तो ऊर्जा की मांग कम होगी और संकट से बचा जा सकेगा। इसके अलावा, सौर पैनलों के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जानी चाहिए, ताकि जनता को अक्षय ऊर्जा विकल्पों की जांच करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके। ज्यादा स्टार वाले उपकरणों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। वहीं बिना रेटिंग वाले उपकरणों की बिक्री पर रोक होनी चाहिए। पिछले कुछ सालों में लोगों में ऊर्जा दक्षता को लेकर चेतना बढ़ी है, लेकिन अभी भी जागरूक होने की दरकार है।

उत्साह और उमंग

दुनिया मेरे आगे

पावनी

उत्साह से भरे मुखड़े की ओर कभी देखा जाए तो मन होता है कि नजर हटाई ही न जाए। उमंग से भरे जोशीले लोग जिनके आसपास होते हैं, उनको अपना जीवन सुंदर लगता होगा। कहते हैं कि हमारे भीतर ठाठें मारता उत्साह इस बात का संकेत है कि हमारे मन में जीवन को लेकर आशावादी नजरिया आज भी कायम है। दूसरे अर्थ में यह भी कह सकते हैं कि जोश और उत्साह हमारे सुखमय दिनमान का जीता- जागता आईना भी है। फिर भी हमारे आसपास ऐसे बहुत से लोग मिल जाएंगे जो निरंतर कुछ न कुछ काम कर रहे हैं, लेकिन उनमें एक गहरी उदासी, एक अजीब दुख बना ही रहता है। ये न जाने किस तरह की सोच पर चलते हैं कि अगर काम के बीच आनंद और सुकून के कुछ पल आ रहे हों, तब भी उनमें उत्साह वाले लक्षण दिखाई नहीं पड़ते हैं।

ये लोग उमंग और उत्साह को एक सामान्य-सी मानसिक अवस्था या कोई गैरजरूरी क्रिया ही मानकर चलते हैं। यानी कभी मजबूरी हो गई तो सामाजिक होने की जिम्मेदारी निभाने के लिए कभी अपनी बाहों को कुछ फैला लिया और आंखें बड़ी कर ली। बस निभाने के लिए उत्साह भरी एक फकत दुनियादारी हो गई। फिर वापस अपने उसी नीरस ढर्रे पर लौट आए, बगैर जोश के सारा जीवन ही काट देते हैं कुछ लोग।

असली उत्साह वह होता है जो हमें भयानक तनाव और थकान में भी एक निराली सोच के साथ जवां रखता है। भले ही कितना अजीबोगरीब काम निपटाना पड़ रहा हो, तब भी कुछ उत्साही ऐसे निराले होते हैं कि उस गंभीर काम को करते हुए भी अपनी तरंग की बौछार को बिखेरते जाते हैं।

प्रकृति का सिद्धांत हम सबके जीवन में लागू होता है। यानी भीतर जैसे होंगे वैसे ही बाहर भी दिख जाएंगे। उत्साह और उमंग का भी यही दर्शन है। यहां अमीर होना, प्रतिष्ठित होना बिल्कुल भी जरूरी नहीं है, पर हां, अपने अस्तित्व के प्रति प्रसन्न और जोशीली गति में होना जरूरी है। यह आनंद किसी उलझी रस्सी को सुलझाने में भी भरपूर मिल सकता है और एक करोड़ का हीरा पहनने पर भी नहीं मिल सकता। लोग दिनोंदिन अपनी तरक्की के रास्ते पर चलकर अंधेरे में भी रोशनी खोज लाते हैं। बहुत अनुशासित रहते हैं। इस तरह अपने सपने पूरे कर लेते हैं, फिर भी उत्साह और उमंग की तरंग को भूल ही जाते हैं।

बहुत बार अमीर और सुविधाओं से लकदक लोग भी अवसाद में आ जाते हैं। दरअसल, वे छोटी-छोटी बातों में उत्साह को खो चुके होते हैं और बार-बार अपने कुबेर के खजाने को टटोलकर वहां से एक शानदार जीवन को पुकारते हैं। हर बार असमंजस में पड़ जाते हैं कि मानसिक सेहत और सकारात्मक नजरिया आखिर गया तो गया कहां! जबकि उसे दबाने और कुचलने का काम तो उन्होंने ही किया होता है। तब शायद कोई खालीपन हमें झकझोर कर कहता है कि अंगड़ाई लेकर या ताली बजाकर ही सही, उत्साह और उमंग में सराबोर रहना क्यों जरूरी है। यह बात हम सबने हर जगह सुनी होगी कि बिना लगाव के लकीर के फकीर बनकर काम करने से बस काम निभ जाता है, मगर संतोष नहीं आता। जबकि संतोष और सुकून हमारी मानसिक सेहत के लिए बहुत जरूरी है। यह सच भी है कि उत्साह और उमंग में गुजारे गए मेहनत भरे पल भी हमको फूल से नाजुक लगते हैं. बहुत तरीकों से मानसिक और शारीरिक शांति प्रदान करते हैं। दार्शनिक सुकरात कहते हैं कि 'हमारी उमंग को बस एक लम्हे की जरूरत होती है।'

हम सबके मन की एक भाषा होती है। उसको पढ़ना जरूर चाहिए। हमारा यह मन सब जानता है। वह बार-बार उस तरफ जाना चाहता है जहां उमंग की तरंग भरा वातावरण मिले और दिल में एक ऊर्जावान लहर उठती है। वह आनंद से शुरू होकर शरीर में एक सकारात्मक शृंखलाबद्ध प्रतिक्रिया होने लगती है, जिस कारण हृदय रक्त को तेजी से पंप करता है और शरीर में रक्त का संचरण सुचारु बना रहता है।

इतना ही नहीं, उत्साह में जीने से हम थकान महसूस नहीं करते। दिल मजबूत रहता है। तनाव रहित काम यानी काम नहीं बस आनंद ही आनंद। मनोवैज्ञानिक एडलर का कथन है कि अनचाही और नापसंद दशा में मानसिक व्यायाम करना चाहिए, यानी अपने जोश और अपने उत्साह को सौगुना करना चाहिए। यह केवल हम ही कर सकते हैं। इसमें जोश जगाने वाला कोई टानिक या दवा नहीं। बस अपने विचारों को उत्साह की खाद मिले। इससे संकीर्ण विचार कम आते हैं, मन आनंद में पुष्पित और पल्लवित होता है, शरीर के सभी अंगों का तनाव भी कम हो जाता है।

> हम लाख चाहें फिर भी इस बात को नहीं जान सकते कि हमारे आने वाले कल में क्या होगा। तो फिर किस बात की चिंता और बेचैनी? अगर हम बस सफल होकर गंभीर बनकर बगैर जोश और उमंग के सपाट तथा उदास तरीके से जी रहे हैं तो कि अपनी जिंदगी को व्यर्थ ही गंवा रहे हैं।

यह अटल सत्य है कि, हम लाख चाहें फिर भी इस बात को नहीं जान सकते कि हमारे आने वाले कल में क्या होगा। तो फिर किस बात की चिंता और बेचैनी? अगर हम बस सफल होकर गंभीर बनकर बगैर जोश और उमंग के सपाट तथा उदास तरीके से जी रहे हैं तो कि अपनी जिंदगी को व्यर्थ ही गवां रहे हैं। अपनी जिंदगी को बेहतर बनाने के लिए दिन-रात मेहनत करना गलत नहीं है, लेकिन अगर उससे संतुष्टि, उल्लास, उन्मुक्तता, गूंज, उमंग, दिन में कई बार उमड़ने वाला जोश नहीं मिल रहे तो मानसिक शांति और संतुलन बिगड़ रहा है।

जीवन में जो सबसे जरूरी है, वह है कि हम बस अपने आज में जीएं, अपने हर पल को अपने जीवन का सबसे हसीन और खूबसूरत पल बनाएं। अपने परिवार के साथ ज्यादा से ज्यादा समय बिताएं, अपने आप को स्वस्थ बनाएं और जो कुछ भी पाना चाहते हैं, उसी दिशा में पूरी निडरता और ईमानदारी से अपना पूरा प्रयास करें! जीवन अगर जोशीला, हरा-भरा, मस्त मगन हो तो यह चमत्कार से कम नहीं।

चौपाल

प्रदूषण के पांव

प्लास्टिक से होने वाले प्रदूषण वायुमंडल से लेकर हमारे शरीर और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक साबित हो रहा है। जाने-अनजाने हम प्लास्टिक को खा और पी रहे हैं और फेफड़ों में भी ले रहे हैं। इससे स्वास्थ्य संकट भी गहराता जा रहा है। भारत सरकार ने एक जुलाई, 2022 को जब एकल इस्तेमाल प्लास्टिक के इस्तेमाल पर बैन लगाया, तब ऐसा लगा कि प्रदूषण से निजात पाने के लिए यह एक बेहतर फैसला लिया गया है। इसके बाद सूती कपड़ों की थैलियों का उपयोग तेजी से प्रचलन में आया, लेकिन इसका प्रभाव लंबे वक्त तक नहीं रहा। एकल इस्तेमाल प्लास्टिक के अधिक उपयोग करने में चीन और अमेरिका के बाद भारत का नंबर आता है। पर्यावरण की स्वच्छता और मानव जीवन पर गहराता यह संकट एक विशाल रूप लेता जा रहा है। इस पर हमें एकजुट होकर विचार करना चाहिए। हर साल पराली के जलाने से होने वाले प्रदूषण को लेकर राज्य सरकार समाधान तो लाने की बात करती है, लेकिन वह भी कुछ खास उपयोगी साबित नहीं होता है। वर्तमान समय में प्रदूषण से निपटना बेहद जरूरी हो गया है, क्योंकि अगर इसी तरह से प्रदूषण का स्तर बढ़ता रहा तो आम जन जीवन अधिक प्रभावित हो सकता है।

- शालनी कुमारी, वैशाली, बिहार

असली सुख

आजकल की व्यस्त जीवन शैली में लोग जल्दबाजी करने के आदी हो गए हैं। इस कारण भोजन भी हम चबाते कम, निगलते ज्यादा हैं। इससे कई तरह की स्वास्थ्य समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। ठीक चबाकर न खाने के कारण भोजन पच नहीं पाता है और शरीर को जरूरी पोषक तत्त्व नहीं मिल पाते हैं। निगलने की आदत ने हमारी सुकून से खाने की आदत को छीन लिया है। भोजन कम चबाने के कारण पेट में जलन और गैस की समस्या भी हो सकती है। भागदौड़ भरी जिंदगी में कुछ बेमानी व्यस्तताओं से बचना चाहिए और भोजन के लिए पर्याप्त समय निकालने को अनिवार्य मानना चाहिए। भोजन करने की प्रक्रिया में थोड़ी सावधानी हमें कई बीमारियों की चपेट में आने से बचा सकती है। यह ध्यान रखने की जरूरत है कि पहला सुख निरोगी काया। अगर शरीर रोगों से घिरा है, तो सारी धन-संपत्ति बेकार हो जाती है। जो धन होता है, वह इलाज में खर्च होता है और शरीर कई तरह के कष्ट झेलता रहता है।

- रोहित सिंह, मथुरा

उपेक्षा की त्रासदी

'हिंसा की आग' (संपादकीय, 9 सितंबर) पढ़ा। वास्तव मे मणिपुर की हिंसा को रोक पाने में नाकामी हमारी संपूर्ण लोकतांत्रिक व्यवस्था पर प्रश्न चिह्न है। करीब सवा साल से एक राज्य हिंसा की आग में झुलस रहा है। देश-दुनिया में इस हिंसा से बदनामी हो रही है। मगर हमारा तंत्र ऐसे व्यवहार कर रहा है, मानो छोटा राज्य है तो शायद वहां की घटना का कोई देशव्यापी प्रभाव नहीं पड़ेगा। यह असंवेदनशील रवैया है। राज्य छोटा हो या बड़ा, वहां की मौजूदा समस्या से हमारी सरकारें इस कदर उदासीन कैसे रह सकती हैं? टकराव में आमने-सामने खड़े दो समुदायों में मैतेई और कुकी की अपनी-अपनी मांगें होंगी, अपनी शिकायतें होंगी। आखिर इसीलिए लोकतंत्र को अपनाया गया था कि इसमें हरेक नागरिक की अधिकतम संतुष्टि के प्रावधान हैं। अगर यह संतुष्टि गैरवाजिब है तो उसे सही दिशा प्रदान की जाए। मगर ऐसा कुछ भी न होना दुखद है। कब तक भय के साये में जनता जीने को विवश होगी?

- मुकेश कुमार मनन, पटना

जोखिम की सड़क

देश की सड़कें परिवहन के साथ-साथ व्यापार व्यवसाय का भी बड़ा जरिया हैं। लगातार सड़कों के बढ़ते जाल ने व्यापारिक प्रतिस्पर्धा को भी बढ़ाया है। छोटे-छोटे गांवों में सड़कें बनने और उनके निकटस्थ कस्बे, शहरों आदि से जुड़ने से व्यापार सुगम हुआ है। इसके बावजूद सड़कों का रखरखाव समय पर नहीं हो पाता। इससे दुर्घटनाओं में वृद्धि होती है। अगर हम हादसों की वजह देखें तो सबसे पहले यातायात नियमों का पूरी तरह उल्लंघन सबसे बड़ा कारण है। इसे नाबालिग अधिक तोड़ते हैं। दूसरा है सड़कों की दुर्दशा जो दुर्घटनाओं का एक अन्य बड़ा कारण है। कई जगह सड़कों पर गड्ढे और गड्ढों में सड़कें नजर आती हैं। ऐसे में वाहन चालक सुरक्षित ड्राइविंग के चक्कर में संतुलन गंवा बैठता है। बड़े वाहन भी गड्ढे बचाने के चक्कर में छोटे वाहनों में बैठे लोगों की जान ले लेते हैं।

- अमृतलाल मारू 'रवि', इंदौर

हमें लिखें, हमारा पता : edit.jansatta@expressindia.com | chaupal.jansatta@expressindia.com

www.readwhere.com

हिन्दुस्तान
1936

बुजुर्गों को बल

भारत युवाओं का देश है, पर बुजुर्गों की संख्या भी समय के साथ बढ़ती चली जाएगी। ऐसे में, केंद्र सरकार ने आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (एबी-पीएमजेएवाई) के तहत 70 वर्ष और उससे अधिक आयु के सभी नागरिकों को वित्तीय लाभ देने का जो फैसला किया है, वह बहुत सुखद और स्वागत योग्य है। सबसे खास बात यह है कि इस योजना का लाभ सभी बुजुर्गों को मिलेगा। पहले सरकार यह मानकर चल रही थी कि जो बुजुर्ग आर्थिक रूप से सक्षम हैं, वो अपना चिकित्सा खर्च आसानी से उठा सकते हैं। अब यह एक महत्वपूर्ण बदलाव है कि इस योजना का लाभ 70 वर्षीय होते ही हर भारतीयों को मिलने लगेगा। आयुष्मान योजना को दुनिया में सबसे बड़ी चिकित्सा बीमा योजना माना जाता है और उसमें हुआ यह विस्तार भारत के बेहतर होते भविष्य का ही एक संकेत है। भारत में बुजुर्गों की स्वास्थ्य सुरक्षा का प्रबंध बहुत जरूरी है और समय के साथ उनकी सुविधाओं को बढ़ाते जाना अनिवार्य है। अगर किसी भी बुजुर्ग को अब पांच लाख रुपये तक के इलाज के लिए परेशान न होना पड़े, तो यह हमारे समाज के लिए बहुत अच्छी बात होगी। योजना से असंख्य बुजुर्गों को नई जिंदगी मिलेगी और उनकी उम्र भी बढ़ेगी।

अपने देश के करीब छह करोड़ वरिष्ठ नागरिक अब सार्वभौमिक स्वास्थ्य सुरक्षा के दायरे में आ रहे हैं, तो यह प्रमाण है कि आज अपने देश की सरकार आर्थिक रूप से सक्षम है। लोग भारी मात्रा में टैक्स चुका रहे हैं, तो उसका लाभ विभिन्न योजनाओं के माध्यम से उन तक लौटना ही चाहिए। एक लोक कल्याणकारी सरकार का यही सही स्वरूप है। सरकार का एक अनुमान है कि इस योजना से लगभग 4.5 करोड़ परिवारों तक लाभ पहुंचेगा। ऐसे अनेक आंकड़े हैं, जो बताते हैं कि इलाज के भारी खर्च की वजह से बड़ी संख्या में लोग गरीब हो जाते हैं। किसी को कर्ज लेना पड़ता है, तो किसी को जायदाद बेचनी पड़ती है। ध्यान रहे, आज आयुष्मान योजना की वजह से 12 करोड़ से ज्यादा परिवार लाभ के दायरे में हैं। शायद एक दिन ऐसा आएगा कि एकदम अमीर या सक्षम लोगों के अलावा सभी आम लोग ऐसी ही किसी योजना के दायरे में आ जाएंगे। अपेक्षाकृत तेज आर्थिक तरक्की के बीच हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि भारत में सामाजिक सुरक्षा कमजोर पड़ रही है। स्वास्थ्य सेवा की लागत भी लगातार बढ़ रही है। सामान्य इलाज में भी हजारों रुपये खर्च करने पड़ रहे हैं। ज्यादातर दवाइयों पर टैक्स है, ज्यादातर स्वास्थ्य सेवाओं पर टैक्स है, पर आजकल सबसे ज्यादा चर्चा चिकित्सा बीमा पर लगने वाले टैक्स की है। स्वयं सरकार के अंदर से यह आवाज उठी है कि स्वास्थ्य बीमा के मद में लोगों से टैक्स या जीएसटी वसूली उचित नहीं है। इस पर भी अवश्य विचार होना चाहिए।

अपने देश के करीब छह करोड़ वरिष्ठ नागरिक अब सार्वभौमिक स्वास्थ्य सुरक्षा के दायरे में आ रहे हैं, तो यह सुखद और स्वागतयोग्य है।

हालांकि, एक बड़ी चिंता यह है कि ऐसी योजना का लाभ वास्तव में जरूरतमंदों को आसानी से नहीं मिलता। अनेक अस्पताल योजना के तहत इलाज करने से इनकार कर देते हैं। गरीबों या अभावग्रस्त लोगों के आयुष्मान कार्ड बनाने या बनवाने के प्रति भी पर्याप्त सजगता नहीं है। निजी अस्पतालों को पाबंद किया जाना चाहिए और जिम्मेदार अधिकारियों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि कोई भी जरूरतमंद या बुजुर्ग धन के अभाव में इलाज से वंचित न रहने पाए। यह सवाल भी बनता है कि रिटायरमेंट की उम्र 58 साल है, तो स्वास्थ्य बीमा का लाभ 70 की उम्र से क्यों शुरू होना चाहिए?

हिन्दुस्तान | 75 साल पहले

13 सितंबर, 1949

सम्पत्ति का प्रश्न

सारे समाज के हित में यह आवश्यक हो सकता है कि राज्य किसी व्यक्ति की सम्पत्ति को अपने अधिकार में ले ले। दुनिया के प्रायः सभी देशों के विधानों में राज्य के इस अधिकार को स्वीकार किया गया है। भारत के विधान निर्माताओं के सामने भी एक अर्से से यह प्रश्न विचारणीय था। उन्हें यह तय करना था कि राज्य को किन शर्तों के आधीन व्यक्ति की सम्पत्ति पर कब्जा करने का अधिकार दिया जाये। इस विषय में लोगों के विचारों में काफी मतभेद था। एक ओर ऐसे लोग थे जो यह मानते हैं कि सारे समाज के हित की दृष्टि से आवश्यक होने पर राज्य को बिना किसी मुआवजे के व्यक्ति की सम्पत्ति पर कब्जा करने की सत्ता होनी चाहिए, तो दूसरी ओर व्यक्तिगत सम्पत्ति को अक्षुण्ण रखने का आग्रह करने वाले भी थे। यों देखा जाये तो व्यक्ति और समाज के हितों में कोई मौलिक अन्तर नहीं होना चाहिए। व्यक्ति को बर्बाद करके समाज पनप नहीं सकता और न ही समाज की हानि व्यक्ति के लिए लाभदायक हो सकती है। अतः उत्तम व्यवस्था वही हो सकती है जो व्यक्ति और समाज के हितों में समन्वय कर सके। हमारे विधान निर्माताओं ने काफी विचार-विनिमय के बाद समन्वय का मार्ग अपनाया है। उन्होंने न्याय और औचित्य का बराबर ध्यान रखा है।

विधानसभा में प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने स्वयं ही सम्पत्ति-विषयक धारा उपस्थित की थी। इससे इस प्रश्न का महत्व समझा जा सकता है। इस धारा में कहा गया है कि बिना कानून की सत्ता के राज्य किसी भी व्यक्ति की सम्पत्ति को हस्तगत नहीं करेगा और जब कभी वह ऐसा करेगा, तो व्यक्ति को मुआवजा अवश्य दिया जायेगा। दूसरे शब्दों में राज्य मनमाने तौर पर और मुआवजा दिये बिना व्यक्तिगत सम्पत्ति पर कब्जा नहीं कर सकेगा। व्यक्तिगत सम्पत्ति को इस धारा द्वारा पर्याप्त आश्वासन दे दिया गया है। देश की मौजूदा संक्रान्तिकालीन अवस्था में ऐसे आश्वासन की आवश्यकता थी। इस सम्बन्ध में यदि जरा भी अनिश्चितता रहने दी जाती, तो देश के आर्थिक ढांचे को धक्का लग सकता था। मनुष्य को यह आश्वासन तो होना चाहिए कि अपने परिश्रम से वह जो भी सम्पत्ति पैदा करेगा, उसका वह उपभोग कर सकेगा और किन्हीं संयोगों से उसे अपनी सम्पत्ति से वंचित होना पड़े तो उसे उचित और न्यायसंगत मुआवजा मिलेगा।

हौसला रखना सिखा गए कॉमरेड येचुरी

वामपंथ के लिए प्रतिकूल समय में भी सीताराम येचुरी ने हमेशा यह सुनिश्चित किया कि हमें अपना तेवर अपनी विचारधारा और भारत भूमि की जरूरतों के इर्द-गिर्द बनाए रखना है।

मनोज कुमार झा | राज्यसभा सदस्य

आज से दस-बारह साल पहले की बात है, सीताराम येचुरी के साथ मैं एक कार्यक्रम में भाग लेकर जयपुर से लौट रहा था। तब उनके हाथ में किताब थी, $E=MC^2$, लेखक- डेविड बोडानिस। मुझे पता था कि वह बहुत पढ़ते हैं, तो मैंने उनसे उस किताब के बारे में पूछना शुरू किया। मैंने पलटकर किताब को देखा, तो वह मुझे अच्छी लगी। उन्होंने मेरी जिज्ञासा को समझते हुए कहा कि 'मुझे अपना पता भेजो'। मैंने उन्हें अपना पता दिया और चार दिन के अंदर ही उस किताब की एक प्रति मेरे पास पहुंच गई। तब मैं विश्वविद्यालय वाले आवास में रहता था।

उनकी सबसे बड़ी खूबी यह थी कि वह लोगों के साथ बहुत कुशलता से जुड़ जाते थे। तब मैं सांसद नहीं था, पर जब मैं उनके साथ रहता था, तो वह बहुत छोटी-छोटी चीजों का भी संज्ञान लेते थे। इतना ही नहीं, वह फोन करके तरह-तरह की बातें बताया करते थे।

एक और घटना बताऊंगा। जब मैं राज्यसभा में आया, तब शायद यह वही साल था, जब वह उससे विदा हो रहे थे। उन्होंने मुझे एक संदेश भेजा कि 'कॉमरेड, तुम बहुत सही वक्त पर राज्यसभा में आए हो, मैं निकल रहा हूं और तुम आ रहे हो।'

राजनीति में इतने लंबे करियर वाला नेता मुझे ऐसा कह रहा था, मैं आज उनके भाव को समझकर रोमांचित हो रहा हूं। जो नेता मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी की शीर्ष इकाई 'पोलित ब्यूरो' में इतने लंबे समय से थे, जिनका संसदीय इतिहास उज्ज्वल रहा, जिन्हें एक समय सर्वश्रेष्ठ राज्यसभा सांसद माना गया, ऐसे विरल राजनेता सीताराम येचुरी (1952-2024) लंबी बीमारी से लड़ते हुए हमारे संसार से विदा हो गए हैं। भाव-विभोर हूं, आज मेरे पास सचमुच शब्द कम पड़ रहे हैं कि उनको कितना और कैसे याद करूं?

उनके जाने की खबर फैलते ही हमारे नेता लालू प्रसाद यादव ने मुंबई से मेरे पास फोन किया, 'ओह, यह क्या हो गया? क्या हुआ था?' फिर मैंने उन्हें बताया। खूबी देखिए, जिस प्रकार का जुड़ाव सीताराम येचुरी जी का लालू प्रसाद यादव के साथ था, ठीक वैसा ही जुड़ाव उनका तेजस्वी यादव के साथ था। एक साथ एकाधिक पीढ़ियों से उनके मजबूत संबंधों की चर्चा अब खूब होगी। वह हर स्तर पर मजबूत संबंध या संपर्क बनाने वाले कुशल राजनेता थे।

उन्हें एक ऐसे नेता के रूप में याद किया जाएगा, जिनका कामगार समाज पर कभी भरोसा कम न हुआ। मेहनतकश मजदूरों के प्रति उनके समर्पण का कोई सानी नहीं था। उनके राजनीतिक जीवन में खूब उतार-चढ़ाव आए, मगर उन्होंने न सिर्फ खुद के भरोसे को मजबूत रखा, साथ ही, हम सबको भी हमेशा भरोसा दिलाया। अपने से जुड़े व्यापक समूह में उन्होंने अपनी विचारधारा के प्रति भरोसे को लगातार जिंदा रखा।

हरेक मृत्यु अपने पीछे एक शून्य छोड़ती है, पर कॉमरेड येचुरी के देहावसान से जो शून्यता आई है, उसकी भरपायी कभी हो भी पाएगी, मुझे लगता नहीं है। आप कोई दूसरा कॉमरेड येचुरी नहीं बना सकते। मुश्किल से मुश्किल हालात में भी उन्हें मैंने कभी धैर्य खोते नहीं देखा। आम तौर पर उन्हें कभी गुस्सा करते नहीं देखा। ये सारे गुण आज दुर्लभ होते जा रहे हैं। आज जब हमारी राजनीति बहुत कटु होती जा रही है और हर जगह अदावत हावी होने लगी है, दुश्मनी वाली जुबान आम हो गई है, उस वक्त भी कॉमरेड येचुरी ने राजनीति के उस स्वभाव को बरकरार रखा, जो वास्तव में ठेठ हिन्दुस्तानी मिजाज है। यह हिन्दुस्तानी मिजाज ऐसा है कि हम परस्पर कितने भी बड़े विरोधी हो जाएं, पर एक दायरे में या मंच पर एक-दूसरे के साथ हैं।

खासकर, कॉमरेड हरकिशन सिंह सुरजीत के बाद देश की राजनीति में जो संक्रमण काल आया, उसमें वामपंथी खेमे में सीताराम येचुरी की भूमिका बहुत बढ़ गई थी। यूपीए सरकार में वाम पार्टियां भी शामिल हुई थीं। गठबंधन कैसे बनाना है, मुद्दे क्या होंगे, सरकार का 'कॉमन मिनिमम प्रोग्राम' क्या होगा, यह सब तय करने में उनकी भूमिका को हमेशा याद किया जाएगा।

सुरजीत सिंह के बाद वाले दौर में किसान, मजदूर की राजनीति, हाशिये के लोगों की राजनीति के लिए मैदान आसान नहीं था। मान्यताएं काफी बदल गई थीं, बहुसंख्यक प्रभुत्व की राजनीति हावी हो रही थी, तब कॉमरेड येचुरी ने न केवल कॉमरेड सुरजीत की विरासत को आगे बढ़ाया, बल्कि वामपंथी वैचारिकी के प्रति उम्मीद को बनाए रखा। खासकर साल 2010 के बाद की राजनीतिक जमीन पर मजदूरों और हाशिये पर पड़े लोगों के भरोसे को बनाए रखने का काम कॉमरेड येचुरी ने बखूबी संभाल रखा था। वह अंत तक लगे रहे, ताकि हाशिये पर फेंक दिए गए जरूरी सामाजिक-आर्थिक मुद्दे भी केंद्रीय विमर्श में बने रहें। हाल-फिलहाल की 'इंडिया ब्लॉक' की बैठकों को भी अगर आप देखें, तो उनमें कॉमरेड येचुरी की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण थी। वह विपक्ष में न केवल लोगों, बल्कि जरूरी मुद्दों को भी जोड़ने में लगातार जुटे दिखते थे।

उन्हें याद करते हुए हमें यह बात जरूर ध्यान रखनी चाहिए कि किसी भी विचारधारा के उत्थान और पतन की एक प्रवृत्ति होती है। आज जिन विचारधाराओं को बहुत प्रभुत्वशाली माना जा रहा है, वे विचारधाराएं दशकों तक हाशिये पर पड़ी हुई थीं। शायद हर विचारधारा का एक मजबूत दौर होता है। जिसे हम सभ्यताओं का उत्थान या पतन कहते हैं, उसी तरह से विचारधाराओं का भी उत्थान और पतन होता है। बेशक, आज यह मानना चाहिए कि उत्तर भारत में वामपंथी पार्टियां उस तरह से मजबूत नहीं रहीं, जैसी पहले कभी थीं। कभी वामपंथी पार्टियां मुख्य विपक्ष हुआ करती थीं।

आज वामपंथ के प्रतिकूल समय में भी सीताराम येचुरी ने हमेशा यह सुनिश्चित किया कि हमें अपना तेवर अपनी विचारधारा और भारत भूमि की जरूरतों के इर्द-गिर्द बनाए रखना है। एक ऐसी विचारधारा हो, जिसका नैसर्गिक रिश्ता यहां के मुद्दों और संरचना के साथ हो। इसीलिए आप देखेंगे कि जाति और समाज को लेकर जो समझ कॉमरेड येचुरी की रही, वह आज बहुत कम लोगों में पाई जाती है। यह वजह थी कि वह चाहते थे, तिनका-तिनका जोड़ा जाए। इसी सोच के तहत विपक्षी गठबंधन मिलकर चुनाव लड़ पाया। उनके लिए संघर्ष केवल चुनावी या सियासी विषय नहीं था, बल्कि वैचारिकी की भी लड़ाई था। वैचारिकी की लड़ाई एक या दो चुनावी हार-जीत से तय नहीं होती। वह अपने अनुराग, तर्क, तथ्य से अधिकांश बैठकों में लोगों को सहमत कर लिया करते थे। अनेक बार बैठकों में या चुनावी नतीजों के बाद हम कुछ निढाल हो जाते थे, तब वह कहते थे, 'अरे कॉमरेड, इससे क्या फर्क पड़ता है? चुनाव ही तो हारे हैं, हौसला नहीं हारे। हौसला बरकरार रखो, चुनाव फिर आएंगे।'

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

बदलते और बिगड़ते मौसम के साथ तालमेल जरूरी

एस के सिंह | कृषि वैज्ञानिक, आरपीसीएयू

भारत में मानसून का समय लगभग समापन के कगार पर है। इस मानसून में कहीं ज्यादा बारिश हुई है, तो कहीं जरूरत से कम। उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड के ज्यादातर इलाके अपर्याप्त वर्षा से जूझ रहे हैं। पिछले एक दशक में दक्षिण-पश्चिम मानसून की वर्षा ने बिहार और उत्तर प्रदेश के ज्यादातर इलाकों में लगातार गिरावट दिखाई है। बिहार को ही अगर देखें, तो कृषि क्षेत्र के लिहाज से यह काफी अहम राज्य है, जो देश के कृषि उत्पादन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

इस वर्ष बिहार में अब तक 735.8 मिमी वर्षा हुई है, जो औसत से काफी कम है। बिहार में वर्षा सामान्यतः 1,200 से 1,300 मिलीलीटर होती है। पिछले एक महीने को देखें, तो हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड व दिल्ली में अच्छी बारिश हुई है, जबकि उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड में 36 प्रतिशत से 52 प्रतिशत तक कम बारिश हुई है। जलवायु वैज्ञानिकों ने ग्लोबल वार्मिंग के चलते चरम मौसम की घटनाओं में वृद्धि की भविष्यवाणी कर रखी है, जिससे लंबे समय तक सूखा पड़ सकता है। साथ ही, कुछ इलाकों में अधिक गंभीर व लगातार बाढ़ आ सकती है। मौसम के पैटर्न में यह अस्थिरता कृषि स्थिरता के लिए एक महत्वपूर्ण खतरा है। सूखा और बाढ़, दोनों ही फसलों पर विनाशकारी प्रभाव डाल सकते हैं। ये फसल चक्र को बाधित करेंगे और पौधों की वृद्धि को रोकेंगे। इससे पैदावार कम होगी और खाद्य सुरक्षा नकारात्मक रूप से प्रभावित होगी।

मौसम के पैटर्न में यह अस्थिरता कृषि स्थिरता के लिए गंभीर खतरा है। सूखा और बाढ़, दोनों ही फसलों पर विनाशकारी प्रभाव डाल सकते हैं।

इसके अतिरिक्त, तूफानों की तीव्रता और आवृत्ति में भी वृद्धि होने की आशंका है, जो कृषि पद्धति को और जटिल बना देगा। किसानों को तैयार रहना चाहिए, खेती की लागत बढ़ सकती है, क्योंकि किसानों को ऐसी चरम स्थितियों से सुरक्षात्मक उपाय में निवेश के लिए मजबूर होना पड़ेगा। जाहिर है, इससे न केवल उत्पादन लागत बढ़ेगी, बल्कि कई लोगों के लिए खेती-किसानी को यह और अनिश्चित व्यवसाय बना देगा, खासकर छोटे किसानों को खर्चे निकालने के लिए बहुत जूझना पड़ेगा।

जैसे-जैसे तापमान बढ़ेगा और वर्षा के पैटर्न बदलेंगे, कुछ फसलें जो अभी विशिष्ट क्षेत्रों में होती हैं, वे भविष्य में व्यावहारिक नहीं रह जाएंगी। यह बदलाव किसानों को उन फसलों को छोड़ने के लिए मजबूर कर सकता है, जिन्हें वे पीढ़ियों से उगाते आ रहे हैं। किसानों को अब अपरिचित, किंतु फायदेमंद फसलों की ओर आना ही पड़ेगा। वार्षिक फसलों को बदलना अपेक्षाकृत आसान हो सकता है, पर यह बदलाव तब अधिक चुनौतीपूर्ण हो जाता है, जब फलों की पैदावार की बात आती है। मौसम चक्र जब बदल रहा है, तो कीट प्रजातियों को भी बढ़ावा मिलने की आशंका है। ऐसे में, रासायनिक कीटनाशकों पर अधिक निर्भर होने की विवशता पैदा होगी। अनाज और फलों को गुणवत्तापूर्ण बनाए रखने के लिए जूझना पड़ेगा। साथ ही, खाद्य वस्तुओं की कीमतों को वाजिब रखने में भी समस्या बढ़ती जाएगी।

अनिश्चित या बदलते मौसम के अनुरूप अब किसानों को जल प्रबंधन तकनीक का ज्ञान होना जरूरी है। कम वर्षा या अत्यधिक वर्षा की स्थिति में फसलों को बचाने और बढ़ाने के लिए प्रभावी जल प्रबंधन महत्वपूर्ण है। ड्रिप सिंचाई, मल्चिंग, वर्षा जल संचयन सीखना अब बहुत जरूरी है। कहीं पर सूखा प्रतिरोधी और कहीं बाढ़ प्रतिरोधी कौशल प्रशिक्षण की जरूरत पड़ेगी।

फसलों पर असर पड़ रहा है, जिसे गंभीरता से लेने की जरूरत है। जैसे, अभी तक मैंने केले में अत्यधिक ठंड की वजह से गुच्छे को आभासी तने से ठीक से बाहर निकलते नहीं देखा था, लेकिन इस बार अत्यधिक गर्मी या सूखे की वजह से गुच्छे आभासी तने से ठीक से बाहर नहीं आ पा रहे। केला उत्पादक किसान पहली बार इस तरह की समस्या को झेल रहे हैं। इस समस्या को 'थ्रोट चॉकिंग' कहते हैं। ऐसी न जाने कितनी समस्याओं से किसानों व वैज्ञानिकों को जूझना पड़ेगा।

बदलते दौर में किसानों को प्रशिक्षित करना सबसे जरूरी हो गया है। टिकाऊ खरीफ फसल किस्में : ज्वार, बाजरा के साथ ही दूसरे मोटे अनाजों पर भी काम करना जरूरी है। अरहर जैसी खरीफ फसलों की उन्नत किस्मों का चयन जरूरी है। बदलते मौसम या मौसम चक्र से घबराने की नहीं, बल्कि अपने आप को चुनौतियों के लिए तैयार रखने पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

मनसा वाचा कर्मणा

गंतव्य तक पहुंचने की बेचैनी

कुछ समय पूर्व मैं पढ़ रहा था : एक औसत अमेरिकी प्रतिवर्ष 1,500 घंटे कार चलाने में खर्च करता है और लगभग 7,000 मील का सफर तय करता है। उसे अपनी कार पार्क करने, खराब होने पर रस्सा बांधकर उसे खींच ले जाने, हाईवे का टैक्स चुकाने के लिए भी धन अर्जित करने की जरूरत होती है। अपने निवेश किए गए जीवन के प्रत्येक घंटे में भीड़भाड़ और व्यस्तता के कारण वह अपनी कार से केवल पांच मील का सफर कर पाता है। वहीं, जिन देशों में हाईवे बहुत कम हैं, वहां के नागरिक ऐसी दूरियां पैदल चलकर पूरी करते हैं। एक अमेरिकी और इन अविकसित देशों के लोगों के बीच एक ही अंतर है कि अमेरिकी प्रतिदिन आने-जाने में अपने समय का पच्चीस प्रतिशत खर्च करते हैं, जबकि पिछड़े देशों के नागरिक, जो पैदल चलते हैं, सिर्फ पांच प्रतिशत खर्च करते हैं। तेज गति से गंतव्य तक पहुंचने के प्रयास ने समस्याएं ही सृजित की हैं।

यह बहुत बेतुकी बात है। पिछड़े देशों के लोग काम पर जाने और घर लौटने में अपने समय का सिर्फ पांच प्रतिशत भाग देते हैं, जबकि अमेरिकियों को सभी आधुनिक तकनीक और तेज गति के वाहन उपलब्ध हैं, तब भी उनके पच्चीस प्रतिशत समय लग जाते हैं। आखिर यह सारी बात किस ओर इंगित करती है? यह पूरी चीज इसी तेज गति के कारण घटती है। तुम्हें शीघ्र पहुंचना है। पहली बात तो यह कि कहीं भी पहुंचना नहीं है। दूसरी बात यह कि इतनी अधिक तेजी से जाने की कोई जरूरत ही नहीं है। आमोद-प्रमोद के लिए छोटी यात्रा पर जाओ। इस जीवन को एक ऐसा आनंदपूर्ण सफर बना लो, जिसका कोई गंतव्य न हो। 'कहीं नहीं' तक की यात्रा। तुम मध्य में बने रहो। तुम अनस्तित्व से आते हो और अनस्तित्व में ही विलीन हो जाते हो। बीच में तुम्हारा अस्तित्व बिजली की एक कौंध की भांति है। जब तक वह वहां है, उसका आनंद लो। उत्सव मनाओ। किसी जगह पहुंचने में उसे बरबाद मत करो, कहीं पहुंचना ही नहीं है। इस शाश्वत जीवन यात्रा के पथिक का कोई अस्तित्व है ही नहीं, यह एक काल्पनिक कथा है।

तुम अनस्तित्व से आते हो और अनस्तित्व में ही विलीन हो जाते हो। बीच में तुम्हारा अस्तित्व बिजली की एक कौंध की भांति है। जब तक वह वहां है, उसका आनंद लो। उत्सव मनाओ।

तुम अपने आनंद के सघन क्षणों में झांककर देखो, समझ जाओगे कि मेरे यह कहने का क्या अर्थ है। जब तुम वास्तव में बहुत प्रसन्न होते हो, तो वहां कोई नहीं होता, जो तुम्हारे अंदर खुश हो रहा हो, वहां केवल प्रसन्नता होती है, आनंद होता है, जो उत्सव मना रहा हो, वहां केवल उत्सव होता है। जब तुम नृत्य कर रहे हो, तब अपने अंदर झांककर देखो। वहां कोई भी नहीं होता, जो नाच रहा है, वहां केवल नृत्य होता है। यही है वह- जिसे सूफी फना कहते हैं - वहां अंदर कोई होता ही नहीं। यह सभी कुछ एक शून्यता है, शुद्ध शून्यता।

ओशो

राजनाथ सिह | केंद्रीय रक्षा मंत्री

कुछ समय पहले तक भारत को रक्षा हथियारों और उपकरणों के मामले में सिर्फ आयातक देश के रूप में देखा जाता था, लेकिन आज भारत लगभग नब्बे देशों को रक्षा आयुध और उपकरण निर्यात करता है।

सभी बुजुर्गों के लिए वरदान आयुष्मान

केंद्र सरकार का यह एक उल्लेखनीय फैसला है। अब 70 साल से अधिक उम्र के हर बुजुर्ग को आयुष्मान भारत योजना के तहत पांच लाख तक के मुफ्त इलाज की सुविधा मिल गई है। फिर चाहे उनकी आर्थिक स्थिति कैसी भी क्यों न हो। जब कैबिनेट के इस फैसले की जानकारी दी जा रही थी, तब बुजुर्गों की खुशी देखते ही बनती थी। यह इसलिए स्वाभाविक है, क्योंकि देश में इलाज अब कितना महंगा हो गया है, यह कोई कहने की बात नहीं है। मामूली बुखार के इलाज में भी पांच-दस हजार रुपये खर्च हो जाते हैं और जब बीमारी गंभीर हो, तो अस्पतालों से लाखों का बिल आता है। ऐसे में, अगर बुजुर्गों को यह विश्वास हो कि पांच लाख तक का इलाज उनको मुफ्त में उपलब्ध होगा, तो उनकी ऊर्जा स्वतः बढ़ जाएगी।

कहा जा रहा है कि अब इस योजना का लाभ छह करोड़ वरिष्ठ नागरिकों को मिलेगा और तकरीबन साढ़े चार करोड़ परिवार इससे लाभान्वित होंगे। अच्छी बात यह भी है कि इस योजना के तहत जिन परिवारों को पहले से लाभ मिल रहा है, उनके घर के बुजुर्गों के लिए पांच लाख रुपये का अतिरिक्त कवरेज मिलेगा। सरकार की ओर से कहा गया है कि शुरुआत में योजना के लिए 3,437 करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे, लेकिन जैसे-जैसे लोग इस योजना से जुड़ेंगे, इसका दायरा बढ़ाया जाएगा। देखा जाए, तो ऐसी किसी केंद्रीय योजना की जरूरत देश के हरेक नागरिक को है। अमेरिका में जिस तरह अस्पतालों में मुफ्त इलाज होता है, जिसकी भरपायी वहां की सरकार राजस्व वसूली से करती है, ठीक उसी तरह अपने देश में भी सभी नागरिकों को मुफ्त इलाज की सुविधा मिलनी चाहिए, फिर चाहे अस्पताल सरकारी हो या निजी। इससे अस्पतालों में बनने वाले फिजूल बिलों की निगरानी भी हो सकेगी। यह आरोप गलत नहीं कि कुछ निजी अस्पताल इलाज के नाम पर मरीजों को लूट लेते हैं। अगर सभी अस्पतालों में इलाज मुफ्त हो जाए, तो अस्पतालों की यह लूट रोकी जा सकेगी।

खैर, जब यह होगा, तब होगा, पर अभी के लिए यह सुखद खबर है कि कम से कम देश के साढ़े छह करोड़ बुजुर्गों के लिए आयुष्मान कार्ड वरदान साबित होने जा रहा है। यह कारवां आगे भी बढ़ता रहेगा। हां, हमें अब करना यह है कि जो अस्पताल आयुष्मान भारत योजना के तहत इलाज करने से इनकार करते हैं, उनकी उचित मंच पर शिकायत की जाए और उन्हें देश के हरेक बुजुर्ग को मुफ्त इलाज की सुविधा देने के लिए बाध्य किया जाए। तभी यह योजना सही तरह से साकार होगी।

गणेशदत्त, टिप्पणीकार

अनुलोम-विलोम

आयुष्मान भारत

योजना की राह में अब भी कई मुश्किलें

कागज पर तो आयुष्मान भारत योजना काफी अच्छी दिखती है, लेकिन हकीकत की जमीन पर इसकी विसंगतियां साफ दिख जाती हैं। केंद्र ने भले सभी बुजुर्गों को इस योजना का लाभ देने का फैसला किया है, पर क्या उसने यह सुनिश्चित करने की कोशिश की है कि लाभार्थियों को हर कीमत पर यह लाभ मिले। सच्चाई यह है कि कई अस्पताल अब आयुष्मान योजना का लाभ देने से इनकार करने लगे हैं। वे यह कहकर मरीज का मजाक बनाने लगते हैं कि कैसा कार्ड बना लाए हो? राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में ही अच्छे निजी अस्पतालों में आयुष्मान कार्ड लेकर घूम आइए, आपको गहरी निराशा हाथ लगेगी। हां, जो दो-तीन कमरों वाले छोटे-छोटे अस्पताल हैं, वे जरूर इसका लाभ देने का वायदा करते हैं। पता नहीं, उनको इससे क्या लाभ मिलता है, जो बड़े अस्पतालों को नहीं मिल पाता? इस सवाल का जवाब तो कोई सरकारी अधिकारी ही ढूंढ़ सकता है, हम आम आदमी भला क्या जानें? मगर मेरे विचार से अच्छा यही होगा कि केंद्र व राज्य सरकारें अस्पतालों पर दबाव बनाएं और आयुष्मान भारत योजना का लाभ इसके लाभार्थियों को मिल सके, यह सुनिश्चित करें। इसके लिए विशेष जांच एजेंसी का गठन किया जाना चाहिए।

सवाल सिर्फ अस्पतालों में मिलने वाले दुत्कार का नहीं है। आयुष्मान कार्ड बनवाने में भी कई पेच हैं। इसमें दलाल का एक वर्ग सक्रिय रहता है और वह पैसे लेकर कार्ड बनाता है, जबकि आप अगर उनकी सेवा लिए बिना अपना कार्ड बनवाने जाएं, तो आपको काफी पापड़ बेलने पड़ सकते हैं। आयुष्मान कार्ड बनवाना एक जटिल प्रक्रिया है, जिसमें सुधार अपेक्षित है। अच्छा तो यही होगा कि संबंधित विभाग कोई अधिकारी इस काम के लिए नामित कर इसकी सूचना इलाके के लोगों तक पहुंचाने की व्यवस्था करे, ताकि लोग खुद उस अधिकारी के पास पहुंचकर अपना काम करवा सकें। इसमें किसी दलाल की कोई जरूरत नहीं पड़ेगी।

जाहिर है, जागरूकता और निगरानी, दो ऐसे औजार हैं, जिसके माध्यम से सरकार आयुष्मान योजना का लाभ तमाम लाभार्थियों तक पहुंचा सकती है। तभी वास्तव में इसका फायदा भी नजर आएगा और लोगों को मुफ्त इलाज की सुविधा मिल सकेगी। अगर ऐसा करने में सरकार विफल रहती है, तो भले इस योजना का लाभ पूरे देशवासी को दिए जाने की घोषणा कर दी जाए, यह महज कागजी बनकर रह जाएगी। जाहिर है, सरकार यह कतई नहीं चाहेगी। भारत जैसे लोकतंत्र में होना भी नहीं चाहिए।

भव्या झा, टिप्पणीकार